आतंकवाद को जो महत्त्व प्रदान किया था उसकी आलोचकों ने तीव्र टीका की, जिसे वह सहन न कर सका और स्वदेश छोड़कर बाहर जाकर रहने लगा। उसने स्मोक १८६७ में और विर्जिन-स्वायल १८७७ में लिखे। इनमें उसने वास्तविक परिस्थिति को चित्रित करने का सफल प्रयत्न किया है। सन् १८८० में वह रूस को लौटा। सन् १८८३ में पेरिस के पास बोगिवल में उसकी मृत्यु हो गई।

तुर्गनेव पहला रूसी कलाकार है जिसकी रचनायें योरप में आदर के साथ पढ़ी गईं। अपने जीवन के पिछले काल में वह फ्रेंच साहित्यिकों के घनिष्ठ सम्पर्क में आ गया था। प्रसिद्ध कहानीलेखक मोपासाँ तो उसे गुरुवत् मानता था। परन्तु टाल्स्टाय आदि रूसी कलाकारों का वह प्रिय-पात्र न हो सका। स्वदेश में उसकी वैसी कद्र नहीं हुई।

परन्तु इससे क्या? आज तो वह रूसी भाषा का अमर कलाकार माना जा रहा है। आलोचकों ने ठीक ही कहा है कि वह रूस का सर्वश्रेष्ठ गद्य शैलीकार ही नहीं है, किन्तु उतना ही प्रतिभाशाली कलाकार भी है। यही नहीं, कदाचित् ही किसी भाषा के उपन्यासों में स्वरूप का वह निर्मल सौन्दर्य दृष्टिगत हो जो तुर्गनेव की रचनाओं में होता है।

विर्जिन-स्वायल में रूसी क्रान्ति के प्रारम्भिक रूप का दिग्दर्शन कराते हुए उसने वहाँ की उच्च श्रेणी तथा किसानों का जो वास्तविक चित्र अंकित किया है, वहाँ के लोगों की विचार-भावना और परिस्थितियों की कल्पनाओं का जो स्वाभाविक वर्णन किया है, वह सब पाठक का मन स्वतः अपनी ओर आकृष्ट ही नहीं कर लेता है किन्तु वह उन सबको आत्मसात् करने को बाध्य हो जाता है। तुर्गनेव की रचना की यही खूबी है, यही सुन्दरता है [illegible] सबकी सब अलग। [illegible]

पहला अध्याय

सन् १८६८ के वसन्त की बात है। दोपहर के बाद एक २७ वर्ष का नवयुवक सेंटपीटर्सबर्ग में अधिकारियों के महल्ले की सड़क के एक पंचमंजिले मकान के पीछे के जीने से धीरे धीरे ऊपर चढ़ रहा था। अन्त में वह जीने के ऊपर की सीढ़ी पर जा पहुँचा और वहाँ एक कमरे के आधा खुले हुए दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसने घंटी नहीं बजाई और जोर से आह भरकर वह उस अन्धकारपूर्ण दरवाजे के भीतर घुस गया।

भीतर जाकर उसने जोर से आवाज दी—क्या नेज घर में हैं?

उसी स्वर में पास के कमरे से एक स्त्री की आवाज सुनाई दी—नहीं, वह नहीं है। मैं हूं। चले आओ।

आगन्तुक ने पूछा—क्या मशूरीना है?

"हाँ, मैं ही हूं। क्या तुम ओस्ट्रो हो?"

"हाँ ओस्ट्रो हूँ"—यह कहकर वह कमरे में घुस गया।

कमरा बहुत छोटा था। उसकी दीवारें हरे रंग से पुती थीं, प्रकाश के लिए केवल दो खिड़कियां थीं। कमरे में लोहे का एक पलंग एक कोने में पड़ा था। बीच में एक मेज और कई कुर्सियां थीं। एक बुककेस भी था, जिसमें किताबें भरी थीं। मेज के पास एक स्त्री बैठी थी, जो लगभग ३० वर्ष की होगी। वह नंगे सिर थी, काले रंग की पोशाक पहने बैठे सिगरेट पी रही थी। ओस्ट्रो को देखकर उसने बिना कुछ कहे ही अपना हाथ बढ़ा दिया। हाथ मिलाकर ओस्ट्रो धम से एक कुर्सी पर बैठ गया। जेब में से एक आधी टूटी हुई सिगरेट निकालकर मशूरीना ने उसे दिया। इसके बाद उसने दियासलाई दी। सिगरेट जलाकर ओस्ट्रो चुपचाप उसे पीने लगा।

ओस्ट्रो ने पूछा—क्या नेज से तुम्हारी भेंट हुई है?

"हाँ। अभी ही आता होगा। कुछ किताबें लेकर पुस्तकालय गया है।"

"तुम्हें मेरी बात पर सन्देह नहीं होना चाहिए। मैं सच सच कह रहा हूँ।"

"मुझे जरा भी सन्देह नहीं है।"

दोनो ने बातचीत बन्द कर दी और पहले की तरह चुप होकर सिगरेट पीने लगे।

इतने में किसी के आने की आहट मिली।

मजूरीना ने धीरे से कहा—वह आ गया!

धीरे से दरवाजा खुला और एक आदमी का सिर दिखाई दिया। वह नेज नहीं था।

आगन्तुक ने चारों ओर देखा। फिर वह सिर हिलाकर मुस्कराया। इसके बाद उसने कमरे में प्रवेश किया। उसका शरीर कमजोर, हाथ छोटे और पैर टेढ़े-मेढ़े थे। वह लँगड़ाता हुआ चलता था। ज्यों ही उन दोनों की निगाह उस पर पड़ी, उनके चेहरों पर उसके प्रति घृणा का भाव झलक उठा, मानो उन दोनो में से प्रत्येक के मन में यह आया कि यह कहाँ की बला आ गई। परन्तु उनमें से कोई भी अपनी जगह से नहीं उठा और न किसी ने उसका अभिवादन ही किया। उनका यह व्यवहार आगन्तुक को जरा भी खराब नहीं लगा, उलटा वह खुश ही हुआ। उसने तीखी आवाज में पूछा—इसका क्या मतलब है? दो ही? तीन क्यो नहीं? हजरत कहाँ गये?

ओस्ट्रो ने गम्भीरता से कहा—पंकलिन, क्या तुम्हारा मतलब नेज से है?

"हाँ, ओस्ट्रो।"

"पंकलिन, वह अभी आता है।"

अब आगन्तुक मजूरीना की ओर झुका। वह बिगड़ पड़ी, और मौज के साथ सिगरेट पीती रही।

तुम्हारी तबीअत कैसी है, मेरी प्यारी?... ...मेरी प्यारी ... पंकलिन कहता गया—मुझे बहुत खेद है ..मैं हमेशा तुम्हारा और तुम्हारे पिता का नाम भूल जाता हूँ।"

"उनके जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं है। मैं समझती हूँ कि

विश्वास न करो। दूसरी बात यह है कि तुम लोगों ने मेरा अनेक बार विश्वास किया है, और यह मेरी विश्वासपात्रता का सबसे बड़ा प्रमाण है। मैं एक ईमानदार आदमी हूँ।

ओस्ट्रो कुछ बुदबुदाया, पर पंकलिन अपनी बात करता ही गया। इस समय उसके चेहरे पर मुस्कराहट का चिह्न तक न था। उसने कहा—नहीं, मैं सदैव नहीं हँसता रहता हूँ। मैं प्रसन्नमुख आदमी नहीं हूँ। मेरी ओर देखकर इसका निश्चय कर लो।

ओस्ट्रो ने उसके मुह पर निगाह डाली। और निस्सन्देह जब वह नहीं हँसता था, जब वह चुप रहता था, तब उसके मुँह की चेष्टा विषादपूर्ण हो जाती थी। हाँ, जब वह अपने ओठ खोलता तब उसके मुँह का भाव बदल जाता और वह हँसोड़-सा जान पड़ने लगता। ओस्ट्रो ने कुछ नहीं कहा। अतएव पंकलिन मशूरीना को लक्ष्य करके बोला—अच्छा, तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई का क्या हाल है? जीवन-क्षेत्र में पहले-पहल प्रवेश करनेवाले अनुभवहीन नागरिक की सहायता करना क्या कोई कठिन काम है?

मशूरीना ने हँसते हुए उत्तर दिया—वह बिलकुल कठिन काम नहीं है, यदि वह आदमी तुम्हारी अपेक्षा अधिक बड़ा आदमी नहीं है।

[मशूरीना ने धात्री-परीक्षा हाल में ही पास की थी। वह एक गरीब रईस खानदान की थी। उसका घर दक्षिणी रूस में था। दो वर्ष से उसने अपना घर छोड़ रखा था। बारह शिलिंग लेकर वह [illegible] आई थी। [illegible] की ओर उसका आचरण बहुत शुद्ध था।]

पंकलिन ने [illegible]—खूब ठीक—जवाब दिया है। मेरे [illegible] है। आश्चर्य है, हमारे [illegible] इस समय [illegible]

पंकलिन ने [illegible] बदल दिया। समाज तथा [illegible] की दुर्बलता बहुत [illegible] थी। [illegible] निम्न श्रेणी के दबाने में उत्पन्न हुआ था। [illegible] की धूर्तताओं से [illegible]

खुला और एक तेईस वर्ष के युवक ने भीतर पैर रखा। वह सिर पर टोपी दिये था। उसके बगल में किताबों का एक बंडल था। वह नेज ही था।

दूसरा अध्याय

कमरे में बैठे लोगों पर निगाह पड़ते ही नेज दरवाजे पर ठहर गया। उन्हें एक ही निगाह में पहचानकर उसने टोपी उतार कर फेंक दी, किताबें जमीन पर डाल दीं और पलंग के पास जाकर उसके किनारे पर बैठ गया। उसके पीले सुन्दर चेहरे पर अप्रसन्नता और रोष का भाव दौड़ गया था।

मसूरीना दूसरी ओर मुंह करके अपने ओंठ काटने लगी। सोल्टो के मुंह से केवल निकला 'अन्त में'। हां, पैंकन्नि उसके निकट जरूर जा पहुंचा। उसने कहा—क्यों, क्या मामला है? क्या कोई चाल हो गई है या बिना कारण के ही इस तरह उदास हो?

चिड़चिड़ाकर नेज ने कहा—चुप रहो। मुझे इस समय हंसी-मजाक अच्छा नहीं लगता।

पैंकन्नि ने कहा—क्या कोई बात बिगड़ गई है? या सचमुच कोई घटना हो गई है?

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। केवल यही बात है कि इस गंवार मूर्ख, कमबख्त नगर में रहना अखरता है।"

सोल्टो ने कहा—तभी तो अखबारों में तुम्हारा विज्ञापन छपा है कि तुम नौकरी करना चाहते हो और सेंटपीटर्सबर्ग के बाहर जाने को तैयार हो।

"हां, अगर कोई मूर्ख मुझे नौकर रख लेगा तो मैं इस स्थान से बड़ी खुशी के साथ चला जाऊंगा।"

"निस्सन्देह, किसी मित्र का ही काम होगा। यह सब कुछ करने में मित्र लोग बड़े निपुण होते हैं। एक मेरा मित्र था। बहुत भला मालूम देता था। सदा मेरी भलाई और कीर्ति का इच्छुक रहता। साल भर बाद उससे झगड़ा हो गया। उसने मुझे एक चिट्ठी लिखी। उसमें मेरी बड़ी निन्दा की। ऐसे ही मित्र होते हैं।"

ओस्त्रो और मसूरोना ने एक-दूसरे की ओर देखा।

ओस्त्रो बेमतलब की बहस नहीं होने देना चाहता था। उसने जोर से कहा—नेज, मास्को से किसी ने एक चिट्ठी भेजी है।

नेज की देह धीरे से काँप गई और वह नीचे की ओर देखने लगा। अन्त में उसने पूछा—उसने क्या लिखा है?

ओस्त्रो ने भौंहों से मसूरोना की ओर इशारा करके कहा—इनके सहित उसने हम लोगों को बुलाया है।

"क्या वह इसे भी चाहता है?"

"हाँ।"

"अच्छा तो कठिनाई किस बात की है?"

"रुपया ही मुख्य है।"

नेज पलंग से उठकर खिड़की के पास तक चला गया। उसने पूछा—तुम कितना रुपया चाहते हो?

"कम से कम पचास रूबल।"

नेज चुप हो गया। अन्त में उसने कहा—इस समय मेरे पास रुपया नहीं है, परन्तु कुछ समय में प्रबन्ध कर सकता हूँ। चिट्ठी कहाँ है?

"हाँ, यह—यह है—लाओ—"

वेर्सनिन ने कहा—क्यों तुम मुझसे सदा छिपाने का यत्न करते हो? क्या मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम मेरा विश्वास करो? जो कुछ तुम लोग करने जा रहे हो यदि उसमें मेरी पूरी सहानुभूति न होती तो क्या तुम समझते हो कि मैं यहाँ आता और रुपया देता। तुम लोगों में जरा भी बुद्धि नहीं है, तुम अपने असली मित्रों के पहचानने में सर्वथा असमर्थ हो। यदि कोई आदमी हँसी-मजाक पसन्द करता है तो तुम यह समझते हो कि वह गम्भीर नहीं हो सकता।

ने उनके कथन को बड़े ध्यान से सुना। दूसरे इन्टरवेल में नाटक के सिवा अन्य विषयों पर भी उनकी बातचीत हुई। नेज की आलोचना उसे बहुत रुचिकर प्रतीत हुई।

खेल के खत्म हो जाने पर लिपी ने नेज से बड़ी विनम्रता से बिदा ली, परन्तु न तो उसे अपना ही नाम बतलाया और न उसी का नाम पूछा। अपनी गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय लिपी की एक प्रिंस से भेंट हो गई। यह उसका मित्र था। इसने उससे कहा—मैं तुम्हें अपनी जगह से देख रहा था। जानते हो, तुम किससे बात-चीत कर रहे थे।

"नहीं। क्या तुम उसे जानते हो? बड़ा चतुर लड़का है। यह कौन है?"

प्रिंस ने फ्रांसीसी भाषा में धीमे स्वर में कहा—यह मेरा भाई है—उसका नाम नेज है। किसी दिन उसका सारा हाल बतलाऊँगा। मेरे पिता उसकी पूरी देख-भाल करते हैं। गुजर-बसर के लिए हम लोगों से उसे रुपया मिलता है। वह शिक्षित है-परन्तु दूसरे मार्ग का पथिक है। मेरी समझ में वह प्रजातन्त्रवादी है। हम लोग उससे किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखते। अच्छा, मैं चलता हूँ। मेरी गाड़ी मेरी राह देख रही होगी। यह कह कर वह चला गया।

दूसरे दिन लिपी ने अखबार में नेज का विज्ञापन पढ़ा, अतएव वह उससे मिलने गया।

लिपी ने अपनी बात को दोहराकर कहा—मेरा नाम लिपी है। तुम्हारे विज्ञापन से मुझे जान पड़ता है कि तुम नौकरी करना चाहते हो। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या तुम मेरे यहाँ आना पसन्द करोगे। मैं विवाहित हूँ। मेरे एक आठ वर्ष का लड़का है। हम लोग प्रायः गर्मी और पतझड़ का मौसम देहात में ही बिताते हैं। मैं चाहता हूँ कि इस छुट्टी में तुम हम लोगों के साथ चलो और हमारे लड़के को व्याकरण और इतिहास पढ़ा दो। मेरी समझ में तुम्हारे विज्ञापन में इन विषयों का उल्लेख भी है। मैं समझता हूँ, हमारी-तुम्हारी निभ जायगी, तुम उस देहात को भी पसन्द करोगे। हमारा मकान बड़ा है, हवा बहुत ही अच्छी है, पास ही एक नदी भी बहती है। क्या

इनि पर भरोसा करने का मैं आदी हूँ। क्या मैं आशा करूँ कि तुम मेरे यहाँ आओगे?

नेज ने कहा—हाँ, मैं चलूँगा और इस बात का प्रयत्न करूँगा कि मैं तुम्हारा विश्वासपात्र बनूँ। परन्तु एक बात मैं कह देना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे लड़के को पढ़ाने की जिम्मेदारी ले सकता हूँ, पर उसकी निगरानी करने को तैयार नहीं हूँ। मैं ऐसी किसी बात का भार अपने ऊपर नहीं ले सकता जो मेरी स्वाधीनता में बाधा डालती हो।

"इस बारे में तुम निश्चिन्त रहो। मुझे सिर्फ ट्यूटर की जरूरत है और वह मुझे मिल गया है। अब वेतन की बात करिए।"

नेज कुछ भी न कह सका।

सिपी ने कहा—मेरी समझ में भले आदमी ऐसी बातें दो शब्दों में तय कर सकते हैं। मैं तुम्हें सौ रुपए मासिक दूँगा, यात्रा का खर्च भी दूँगा। चलो।

नेज ने कहा—मेरी माँग से यह बहुत अधिक है, क्योंकि मैं—

सिपी बीच में ही बोल उठा। उसने कहा—तो अब इस मामले को मैं तय हुआ समझता हूँ। तुम मेरे घर के एक प्राणी हो गये। यह कहकर वह अपनी कुर्सी से उठा। वह बहुत खुश था, मानो उसे कोई सौगात मिली हो। उसके हाव-भावों से घनिष्ठता के चिह्न झलकने लगे। उसने कहा—एक-दो दिन में हम लोग यहाँ से रवाना होंगे। देहात के वसन्त की अपेक्षा मैं और किसी बात का उतना प्रेम नहीं करता। मैं कारबारी आदमी हूँ, सदा शहर में ही रहा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम अपना महीना आज से ही शुरू समझो। मेरी स्त्री और लड़का यहाँ से रवाना हो गये हैं और सम्भवतः इस समय मास्को में होंगे। वे अपने को प्रकृति की गोद में पायेंगे। हम लोग यहाँ से दो बालकों की भाँति अकेले ही चलेंगे। वह यह कहकर हँसने लगा।

इसके बाद उसने अपने ओवरकोट की जेब से कार्ड-केस निकाल कर अपना कार्ड नेज को दिया। उसने कहा—यह मेरा पता है। कल बारह बजे के लगभग मुझसे मिलिए। शिक्षा के सम्बन्ध में मैं अपने

अभिनन्दन करने लगा। उसने हँसते हुए कहा—कैसा शिकार हाथ लगा है? इसे जानते हो? यह बहुत बड़ा आदमी है। समाज के स्तम्भों में से है। भविष्य का राज-मन्त्री है।

नेज—मैंने उसका नाम कभी नहीं सुना।

पंकलिन—यही तो हमारी भूल है। हम लोग किसी को नहीं जानते। हम लोग इस दुनिया को उलट देना चाहते हैं, पर रहते हैं उसी दुनिया के बाहर दो या तीन मित्रों के बीच एक छोटे से वृत्त के भीतर।

नेज—क्षमा करना। मैं इसे बिलकुल ही ठीक नहीं समझता। निस्सन्देह हम लोग शत्रुओं के बीच नहीं जाते हैं, परन्तु सदा अपनी श्रेणी के लोगों में, जनता में मिले-जुले रहते हैं।

पंकलिन—अच्छा एक बात सुन लो। किसी का अपने शत्रु की ओर से मुँह फेर लेना, उसके जीवन के ढंगों को न समझना-बूझना सरासर मूर्खता है। अगर मुझे जंगल में भेड़िये का शिकार करना है तो सबसे पहले उसके जानेआने की जगह की खोज करनी पड़ेगी। तुम अभी जनता के सम्पर्क में आने की बात कह रहे थे। सन् १८६२ में पोल लोगों ने अपने विद्रोही दल जंगल में संगठित किये थे। हमको उसी जंगल में अभी प्रवेश करना है। मेरा मतलब जनता से है, जहाँ जंगल की अपेक्षा कम घना अँधेरा नहीं है।

"तो तुम लोग हमसे क्या चाहते हो?"

"हिन्दुओं ने अपने को जगन्नाथ जी के रथ के नीचे डाल दिया। उसके नीचे पड़कर वे पिसकर चूर-चूर हो गये और बड़ी प्रसन्नता के साथ मर गये। हमारे भी जगन्नाथ जी हैं। वे भी पीसकर चूर-चूर कर देते हैं, परन्तु इसमें आनन्द का नाम तक नहीं है।"

"तो भाई तुम लोग हमसे क्या काम लेना चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि हम लोग नावेल लिखें?"

"किसी क़दर तुम नावेल लिख सकते हो। निस्सन्देह तुममें साहित्यिक प्रतिभा है। बहुत ठीक, अब मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहूँगा। मैं जानता हूँ, तुम्हें हमारा इलीमेंट पसन्द नहीं है। मैं यह भी जानता हूँ कि जो हम लोग चाहते हैं वह ज़ोरदार नहीं है।"

"तुम्हें ऐसा समझना ही न चाहिए, तुम्हें इसका पूरा विश्वास होना चाहिए कि यह आदमी तुम्हारा सारा हाल जानता है। परन्तु इससे क्या? मैं तो यही कहूँगा कि इसी कारण यह तुम्हें नौकर रख रहा है। परन्तु तुम इन लोगों के चुने हुए लोगों से सामना करने में समर्थ होगे। रूप से तुम स्वयं एक रईस घराने के हो. फलतः तुम इन लोगों के समान ही हो। मैं यहाँ बहुत देर से हूँ। अब मुझे अपने आफिस को जाना है।

पेंकरिन दरवाजे तक गया, परन्तु खड़ा हो गया। उसने घूमकर कहा—तुमने अभी मेरा निवेदन अस्वीकार कर दिया है। मैं जानता हूँ, तुमको धन की कमी न होगी। तो भी अपने आन्दोलन के लिए मुझे भी कुछ समर्पण कर लेने दो। मैं कोई भी काम नहीं कर सकता। ऐसी दशा में मुझे धन से ही सहायता कर लेने दो। मैंने मेज पर दस रूबल रख दिये हैं। क्या तुम उन्हें ले लोगे?

नेज स्थिर बैठा रहा, उसने कुछ नहीं कहा।

पेंकरिन ने बड़ी प्रसन्नता से कहा—मौनं सम्मतिलक्षणम्। धन्यवाद। यह कहकर वह चला गया।

नेज अकेला रह गया। वह चुप बैठा एकटक फर्श की ओर देखता रहा। उसका मन उदास हो गया था।

नेज के पिता का नाम जैसा कि हमें पीछे मालूम हुआ है, प्रिंस ग० था। वह धनवान् था और सेना में एडजुटेंट जनरल था। उसकी मां जनरल की गवर्नेस की लड़की थी। नेज का जन्म होने पर उसकी मृत्यु हो गई थी। नेज की प्रारम्भिक शिक्षा एक बोर्डिंग स्कूल में हुई। इस स्कूल का संचालक एक स्विस पादरी था। इस स्कूल की पढ़ाई समाप्त होने के बाद वह विश्वविद्यालय में भर्ती हो गया। उसकी कानून पढ़ने की बड़ी इच्छा थी। परन्तु उसके पिता ने उसे इतिहास और भाषा विज्ञान पढ़ने को कहा। बाद में उसका पिता उससे बार बार मिलता था। नेज की भलाई में उसे बड़ी दिलचस्पी थी। जब उसकी मृत्यु हो गई तब उसकी वसीयत के अनुसार नेज को ६० हजार रुपया मिले। इस रुपया का केवल सूद ही उसे अपने प्रिय आदर्शों

का काम करने के लिए ही पैदा किया गया हूँ ? ट्यूटर का काम करने की जिम्मेदारी लेने के लिए वह स्वय अपनी भर्त्सना करने को तैयार था। परन्तु यदि वह ऐसा करता तो अन्याय करता।

नेज काफी शिक्षित था। अस्थिर स्वभाव का होते हुए भी लड़के उसका स्नेह करने लग जाते और वह लड़कों का। स्थान-परिवर्तन करते समय किसी किसी को खिन्नता-सी घर दबाती है। यही बात नेज को भी हुई। वह अपने विचारो में इतना लीन हो गया कि उसके विचार शब्द का रूप ग्रहण करने लगे। उसने जोर से कहा—अरे! मैं तो कविता की ओर बढ़ा जा रहा हूँ। उसने अपने को हिलाया और वह खिड़की के पास से हट आया। उसकी निगाह पैकलिन के नोट पर जा पड़ी। उसे उठाकर अपनी जेब में रख लिया और कमरे में चहलकदमी करने लगा। उसने अपने मन में सोचा—मुझे कुछ पेशगी जरूर लेना होगा। एक सौ रूबल—और एक सौ भाइयो से—हुजूरो से। पचास मुझे क़र्ज अदा करने को चाहिए और साठ-सत्तर यात्रा के लिए—शेष ओन्ट्रो पायेगा। इसके बाद पैकलिन के दस रूबल हैं और मैं मर्कू से भी कुछ पा सकता हूँ।

इसी हिसाब-किताब के बीच कविता-रचना की उमङ्ग अपने आप आती गई। नेज चुपचाप खड़ा था, मानो उसी जगह गड़ गया हो। उसकी दृष्टि भी स्थिर थी। थोड़ी देर के बाद मेज का ड्राअर खींचकर उसने एक कापी बुक निकाली। वह कुर्सी पर बैठ गया और मन में गुनगुनाते हुए कविता लिखने लगा।

इतने में धीरे से दरवाजा खुला और मसूरीना का सिर दिखाई दिया। नेज ने उसे नहीं देखा और वह चुपचाप लिखता रहा। मसूरीना खड़ी उसकी ओर गौर से देखती रही, फिर उसने अपना सिर हिलाकर पीछे कर लिया। नेज इतने में तन कर बैठा गया। एकाएक उसकी निगाह मसूरीना पर जा पड़ी। कुछ नाराजी के स्वर में उसने कहा—अरे, तुम हो! यह कहकर उसने अपनी कापी-बुक ड्राअर के भीतर रख दी।

मसूरीना ने कमरे के भीतर आकर कहा—ओन्ट्रो ने भेजा है। यह

उसके आगमन की सूचना पहले ही मिल गई थी। उसका कद लम्बा था। तीस वर्ष के लगभग थी। बड़ी सुन्दर लगती थी।

इतने में कोई नौ वर्ष का एक लड़का भीतर घुस आया और वेलेन पर उसकी निगाह पड़ते ही वह जहाँ का तहाँ ठहर गया।

उसने मीठे स्वर में लड़के से पूछा—कोलिया, तुम क्या चाहते हो ?

लड़के ने घबराहट में कहा—मा, चाची ने फूल लेने को भेजा है। उनके पास फूल नहीं है।

उसने लड़के की ठुड्ढी पकड़कर और उसका सिर ऊपर उठाकर कहा—चाची से कह दे कि फूल माली से माँग लें। ये फूल मेरे हैं। मैं नहीं चाहती कि कोई इन्हें छुये। मैं अपने कमरे की सजावट में गड़बड़ नहीं करना चाहती। जो कुछ मैंने कहा है, क्या उसे दुहरा सकते हो ?

लड़के ने धीरे से कहा—हाँ, दुहरा सकता हूँ।

"तब दुहराकर सुनाओ।"

"मैं यह कहूँगा—मैं यह कहूँगा—कि तुम नहीं चाहती।"

वह हँसने लगी। उसकी हँसी भी कोमल थी। उसने कहा—अभी तुम किसी का संदेश नहीं ले जा सकते। खैर, जो चाहो जाकर कह दो।

लड़के ने जल्दी से मा के हाथ का चूमा लिया और कमरे से निकल भागा।

वेलेन ने उसकी ओर देखकर एक आह छोड़ी। फिर सोने के तार के पींजड़े के पास जाकर उसके भीतर बंद [illegible] को अपनी अँगुली के सिरे से छेड़ दिया। इसके बाद वह जाकर [illegible] एक कोच पर बैठ गई और मेज पर से एक मासिक पत्रिका उठाकर उसके पन्ने उलटने लगी।

सम्मानसूचक खाँसी की आवाज सुनकर वेलेन ने अपना सिर उठाया। एक [illegible] नौकर [illegible] दरवाजे पर खड़ा था। उसे देखकर उसने मीठे स्वर में कहा—[illegible] क्या चाहते हो ?

"[illegible] क्या [illegible] ?"

"[illegible]। और [illegible] नहीं [illegible]।"

वेलेन [illegible] मासिक पत्र [illegible] पर रख दिया और अपनी आँखें

आया था। वह कहा करता था कि बिना ऐसा किये काम नहीं चलता।

कोल्लो ने कहा—मैंने समझा था कि तुम्हारे पति अब तक आ गये होंगे।

"अन्यथा तुम न आते!"

कोल्लो इस व्यङ्ग्य से डरकर एक कदम पीछे हट गया। उसने कहा—तुम्हारा ऐसा कहना कैसे सम्भव हो सकता है?

"कोई हर्ज नहीं। बैठो। मेरा पति अभी आता है। उसके लिए मैंने स्टेशन को गाड़ी भेज दी है। अगर तुम कुछ देर ठहरो तो भेंट हो जायगी। क्या समय है?"

अपने वेस्ट-कोट की जेब से एक सोने की बड़ी-सी घड़ी निकालकर और उसे दिखलाकर कोल्लो ने कहा—ढाई बजे हैं। यह घड़ी तुमने देखी है? सर्विया के प्रिंस मिचल ने मुझे भेंट में दी थी। देखो, यहाँ उसके नाम के अक्षर लिखे हैं। हम दोनों में बड़ी घनिष्ठता है, साथ ही शिकार खेलने जाते हैं। बड़े डील-डौल का है, वैसे ही कड़े स्वभाव का भी है। उसे कोई मूर्ख बनाने का साहस नहीं कर सकता। यह कहकर वह एक आरामकुर्सी पर बैठ गया। अपने बायें हाथ का दस्ताना निकालते हुए उसने कहा—मिचल जैसे ही आदमी की हमें इस प्रान्त में [illegible] है।

"क्यों? क्या यहाँ की [illegible] अवस्था से तुम सन्तुष्ट नहीं हो?"

कोल्लो ने टेढ़ा मुँह [illegible] कहा—[illegible] पर घणित कोटो-कौंसिल है। किस मतलब की [illegible]। [illegible] सरकार [illegible] करती है, लोगों को गलत [illegible] और [illegible] आशायें उत्पन्न करती है। मैं अपर [illegible] चुका हूँ। पर मेरी कोई नहीं सुनता। [illegible] था—परन्तु ये तो प्रसिद्ध पक्के [illegible]।

वेरेना [illegible] कहा—मैं क्या सुन रही हूँ? क्या तुमने [illegible] था?

"[illegible] भी नहीं। कभी नहीं। मैं कभी कभी

मेरिआ कहाँ है।" उसने घण्टी बजाई। तत्क्षण एक नौकर आ उपस्थित हुआ।

"मैंने कहा था कि मेरिआ को यहाँ भेज दो। क्या उससे किसी ने नहीं कहा?"

नौकर उत्तर देने को था कि एक नौजवान स्त्री उसके पीछे दरवाजे पर दिखाई दी। वह एक ढीला काला ब्लाउज पहने थी और उसके बाल कतरे हुए थे। यही मेरिआ थी। मातृपक्ष से वह सिपी की भतीजी थी।

छठा अध्याय

वेलेन के समीप आकर मेरिआ ने कहा—मुझे खेद है, मैं काम में लगी थी, इसी से तुरन्त न आ सकी।

फोल्को को मस्तक झुकाकर वह एक कोने में जाकर तोते के पास एक स्टूल पर बैठ गई। उसे देखकर तोता अपने डैने फड़फड़ाने लगा।

मेरिआ को वहां बैठते देखकर वेलेन ने पूछा—इतनी दूर क्यों? क्या तुम अपने उस छोटे मित्र के पास बैठना चाहती हो? फोल्को, देखो तो हमारे तोते का मेरिआ से प्रेम हो गया है।

"इसमें कोई आश्चर्य नहीं।"

"परन्तु वह मुझे नहीं चाहता है।

"यह तो असाधारण बात है। कदाचित तुम उसे तंग करती हो।"

"नहीं, मैं उसे कभी नहीं तंग करती। इसके विपरीत मैं उसे प्यार दिखाती हूँ। परन्तु वह मेरे हाथ से कोई भी चीज नहीं लेना चाहता। यह सामान्य केवल सहानुभूति और उपेक्षा का है।"

मेरिआ ने गहरी दृष्टि से वेलेन की ओर देखा और उसने भी

से ऐसा ही प्रभाव पड़ता है। मेरे जैसे छोटे कटे बाल भी तुम्हें अखरते होंगे।

येलेन को उसके आज-कल की नौजवान लड़कियों की तरह स्वाधीनता के साथ बातें करने से बड़ा आश्चर्य हुआ। कोल्लो ने हँसकर कहा—निस्सन्देह, मुझे इस बात से दुःख होता है कि तुम्हारे जैसे सुन्दर बालों पर कैंची चले। परन्तु इससे मुझमें उपेक्षा का भाव नहीं उत्पन्न होता।

येलेन ने कहा—ईश्वर को धन्यवाद है! मेरिआ चश्मा नहीं लगाती और न कालर और कफ पहनना ही छोड़ा है। परन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि यह प्रकृति के इतिहास का अध्ययन करती है। इसके सिवा स्त्रियों के मसले से भी उसे अनुराग है। क्यों मेरिआ, है न ठीक?

यह सब मेरिआ को चिढ़ाने के लिए कहा गया था। परन्तु उसे ज़रा भी बुरा नहीं लगा। उसने उत्तर दिया—हाँ चाची, स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखा मैं पाती हूँ वह सब मैं पढ़ती हूँ। मैं स्त्रियों के प्रश्न को जानना चाहती हूँ।

कोल्लो ने पूछा—मेरिआ, क्या इस साल भी पढ़ने का विचार है?

"कोल्लो, क्या तुम जानना चाहते हो?"

"हाँ, इससे मेरी बड़ी दिलचस्पी है।"

"क्या तुम मना करोगे?"

"मैं तो निहिलिस्टों तक को मना करूँगा। मेरा उपाय चले तो मैं सारे स्कूल पादड़ियों को सौंप दूँ और उन पर निगाह रखते हुए एवं मैं खुद भी पढ़ाऊँ।"

"इस साल मैं क्या करूँगी, इसका अभी कुछ निश्चय नहीं हुआ है। मन पढ़ने में बिल्कुल हो सकता नहीं दिखता। इसके सिवा सबसे बड़ी बात तो यह है कि गर्मी में स्कूल बंद हो जायगा?"

हेलेन ने मज़ाक किया—क्या इम्तहान भर के लिए तैयार नहीं हो?

किया। बदले में लिपो ने अपनी भौंहों तथा नाक से ही उसकी स्वीकृति का संकेत किया।

इस मंडली के साथ नेज भी उस चौड़े जीने से ऊपर चढ़ा। जब सब लोग हाल में पहुंच गये तब लिपो की आंखें नेज की खोज करने लगीं। उसने अपनी स्त्री, जग्रा और मेग्जिआ से नेज का परिचय दिया। फिर कोलिया से कहा—यह तुम्हारा ट्यूटर है। जो आज्ञा दे वही करना। उसे अपना हाथ दो। कोलिया ने डरते हुए अपना हाथ बढ़ाया और उसे घूरकर देखा, परन्तु उसमें कोई विशेष बात न पाकर वह फिर अपने पापा की ओर मुखातिब हुआ।

नेज को बुरा लगा, उसी प्रकार जैसे उस दिन थियेटर में बुरा लगा था। वह एक पुराना भद्दा कोट पहने था, उसके मुंह-हाथ यात्रा की धूल से आवृत थे। वेरोन ने कोई बात विनम्रता से कही, परन्तु उसे वह अच्छी तरह सुन नहीं सका, इससे उसने उत्तर भी नहीं दिया। वह उसको सुन्दर जान पड़ी। उसे कोलिया अपने भद्दे सिर के कारण अच्छा नहीं लगा। और कोल्लो को तो देखकर उसने अपने मन में कहा कि यह कैसा कमजोर आदमी है। उसने अन्य लोगों की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। लिपो ने दो-एक बार अपना सिर बड़े दर्प के साथ घुमाया-फिराया, मानो अपनी सांसारिक सम्पत्ति की ओर देख रहा हो। इसके बाद उसने नौकर को बुलाकर कहा—इग्नात, इन सज्जन को इनके कमरे में ले जाओ। पीछे से इनका असबाब भी वहां पहुंचा देना। इसके बाद उसने नेज से कहा कि जाकर कपड़ा बदलो और आराम करो। पांच बजे भोजन तैयार होगा। नेज ने सिर झुकाकर अभिवादन किया, फिर वह इग्नात के पीछे पीछे अपने कमरे की ओर चला गया। यह कमरा दूसरी मंजिल में था।

सारी मंडली ड्राइंगरूम में घुस गई। वहां भी लिपो का फिर अभिवादन हुआ। एक बूढ़ी अन्धी दाई ने आकर अभिवादन किया। उसका अधिक वयस होने के कारण लिपो ने चुम्बन देने के लिए अपना हाथ उसके आगे कर रखा। इसके बाद कोल्लो से स्वीकृति लेकर वह अपनी स्त्री के साथ अपने कमरे की ओर चला गया।

घर, पेपरमिल, गिरजाघर, मेरिआ, कोल्गो आदि के सम्बन्ध की तरह तरह की बातें बता रही थी।

पति-पत्नी में बड़ा प्रेम था, दोनों एक-दूसरे का बड़ा विश्वास करते थे। जब सिपी बाल आदि सँवार चुका तब उसने प्रेम-पूर्वक अपनी स्त्री से हाथ बढ़ाने को कहा। हेलेन ने अपने दोनों हाथ सिपी के आगे कर दिये और जब सिपी ने उनका चुम्बन किया तब हेलेन ने उसे प्रेमपूर्ण गर्व के साथ देखा।

पाँच बजने पर नेज भोजन करने के लिए नीचे गया। भोजन की सूचना घंटी के बजाय एक चीनी घड़ियाल बजाकर दी गई थी। घर के दूसरे सब लोग भोजन के कमरे में पहले से ही मौजूद थे। सिपी ने नेज का फिर अभिनन्दन किया और उसे रीना तथा कोलिया के बीच में बिठाया। अन्ना एक बूढ़ी कुमारी थी। वह सिपी के पिता की बहन थी। उसकी मुखमुद्रा उदासीन और घबराई हुई थी। वह कोलिया की धात्री के रूप में रही है, अतएव जब नेज उसके और कोलिया के बीच में बैठ गया तब उसके सिकुड़न पड़े हुए चेहरे से अप्रसन्नता का ही भाव प्रकट हुआ। कोलिया अपने नये पड़ोसी को तिरछी नज़र से देखता रहा। उस चतुर लड़के ने जान लिया कि उसका शिक्षक शर्मीला है, उसने आँख तक नहीं उठाई और मुश्किल से थोड़ा-बहुत खाया है। इससे वह खुश हुआ, क्योंकि उसे इस बात का डर था कि कहीं वह क्रोधी और कठोर न हो। हेलेन भी नेज को ध्यान से देखती रही।

हेलेन ने अपने मन में सोचा—वह एक विद्यार्थी-सा जान पड़ता है, लोगों के बीच उठने-बैठने का आदी नहीं है। परन्तु उसका चेहरा बहुत आकर्षक है, उसके बालों का रंग भी साफ है और उसके हाथ भी बहुत साफ हैं। उपस्थित लोगों ने प्रवेश में इसकी ओर घूरकर देखा, परन्तु उन्होंने उस पर दया की और उसे उस समय चुपचाप रहने दिया।

सिपी और कोल्गो बातचीत करते रहे। उन दोनों ने [illegible]-[illegible], गवर्नर, सड़क के पद, किसानों के जमीन खरीदने सम्बन्धी

सूचक अपना सिर हिला दिया। कोल्लो इस पर उस विद्यार्थी को घूरकर देखने लगा, जो उसके जैसे प्रगति-विरोधी विचार नहीं रखता था। परन्तु इस तरह नेज को सङ्कट में डालना कठिन था। इसके विपरीत वह तनकर अपनी जगह पर बैठ गया और स्वयं भी उस शौकीन अधिकारी पर अपनी दृष्टि जमा दी। जैसे उसने मेरिआ को अपना साथी समझ लिया था, वैसे ही वह उसे अपना शत्रु समझ गया। कोल्लो ने भी वैसा ही समझा। उसने अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया और लापरवाही से हँसने की चेष्टा की। परन्तु उसके इस व्यवहार का वैसा परिणाम नहीं निकला। केवल अन्ना जो गुप्त रीति से उसकी पूजा करती थी, उसके पक्ष में थी और वह पहले की अपेक्षा नेज से अधिक क्रुद्ध हो गई।

इसके बाद शीघ्र ही भोजन भी समाप्त हो गया। अतएव उपस्थित लोग कहवा पीने को उठ गये। सिपी और कोल्लो ने सिगार सुलगाये। सिपी ने एक सिगार नेज को भी देना चाहा, परन्तु उसने लेने से इनकार कर दिया। सिपी ने कहा—क्यों? अच्छा मैं भूल गया। तुम तो अपनी खास सिगरेट पीते हो। कोल्लो ने अपने मुँह में ही कहा—विचित्र रुचि है!

नेज बिल्कुल कहने को ही था कि सिगार और सिगरेट का भेद अच्छी तरह जानता हूँ, परन्तु किसी का कृतज्ञ नहीं होना चाहता, परन्तु वह चुप रह गया, कुछ नहीं कहा।

इतने में मैडम सिपी ने एकाएक पुकार कर कहा—मेरिआ, इस नये मित्र के आगमन से तुम किसी तरह का सङ्कोच न करो। अगर इच्छा हो तो अपनी सिगरेट पीओ। उसने नेज की ओर घूम कर कहा—तुम लोगों में जो मैंने सुना है, रूसी नवयुवती स्त्रियाँ सिगरेट पीती हैं।

नेज ने नम्रता से कहा—हाँ। यही पूछना चाहता था जो उसने मैडम सिपी से कहा था।

"मैं तो नहीं पीती। मैं समझती हूँ कि म[illegible] के पीने का [illegible]।"

मेरिआ ने धीरे धीरे सावधानी के साथ एक सिगरेट और दियासलाई का डब्बा निकालकर सिगरेट पीना शुरू किया। कहीं

नेज यही चाहता था । सबका अभिवादन करके वह वहाँ से चला गया । दरवाजे पर उसकी मेरिआ से मुठभेड़ हो गई । उसकी आँखों में देखकर उसको दूसरी बार विश्वास हुआ कि वे दोनों मित्र हो जायँगे, यद्यपि उसने उसे देखकर जरा भी प्रसन्नता नहीं प्रकट की, उल्टा बेतरह नाराज ही हुई ।

नेज अपने कमरे में जा घुसा । दिन भर खिड़कियों के खुली रहने से कमरा ताजगी से भरा हुआ था । बाग़ में खिड़की के सामने एक वृक्ष पर बुलबुल बोल रही थी । चन्द्रमा भी पूर्व-दिशा में उदय हो रहा था । उसने मोमबत्ती जला दी । बिस्तरे पर पड़कर उसने सोचा—ये लोग बड़े उदार, भलेमानस जान पड़ते हैं । परन्तु मेरा मन तो बहुत दुखी है । यह कोल्लो तो ! खैर, सवेरे देखा जायगा । भावुक होना ठीक नहीं है ।

आठवाँ अध्याय

नेज सवेरे जल्दी उठा । बिना नौकर की प्रतीक्षा किये हुए उसने कपड़े पहने और वह बाग़ में घूमने चला गया । बाग़ बहुत बड़ा, साथ ही मनोरम था । उसकी क्यारियाँ रंग-रंग की थीं । वह घूमता हुआ तालाब तक चला गया । सवेरे का कुहरा उठ चुका था । सूरज क्षितिज से अधिक ऊपर नहीं चढ़ा था । एकाएक उस ओर वृक्षों की पंक्ति के सिरे पर उसे मिर्सी दिखाई पड़ गया । वह अपनी रियासत का निरीक्षण करने को निकला था । उसने नेज का स्वागत किया । उसने कहा—अच्छा, आप जल्दी उठने-वालों में हैं । ठीक आठ बजे हम लोग भोजन करने के कमरे में चाय पीते हैं और आसपास [illegible] बाहर चले [illegible] करते हैं । मैं चाहता हूँ कि तुम आज कोशिश करो तो [illegible] रूसी-भाषा का उच्चारण

और उसे गर्व भी था। अपने माता-पिता को दुलार दिखाकर वह कमरे से भाग गया। भोजन के समय लिपी ने शैम्पेन शराब मँगवाई और अपने पुत्र के स्वास्थ्य का प्याला पीने के पहले उसने भाषण किया। 'देश की सेवा' के महत्त्व को उसने बात कही और उस मार्ग का भी सकेत किया जिस पर वह अपने पुत्र को ले जाना चाहता था। धीरे धीरे वह जोश में आ गया और राबर्ट पील के अनुकरण पर अपना हाथ कोट के नीचे किये उसने अपना भाषण समाप्त किया। अन्त में कोलिया हाथ में गिलास लिये हुए अपने पिता को धन्यवाद देने तथा अन्य लोगों से चुम्बन करवाने के लिए आया।

नेज ने फिर मेरिआ से आँखें मिलाईं। परन्तु उन दोनो ने एक-दूसरे से बातचीत नहीं की।

इस सारी कार्यवाही से नेज को प्रसन्नता ही हुई। ऐलेन उसे एक बुद्धिमान् स्त्री समझ पड़ी।

दूसरे दिन से फिर पढ़ाई शुरु हुई और रोज का जीवन पहले जैसा ही जारी हो गया।

इस तरह एक सप्ताह बीत गया। इन दिनों के नेज के अनुभवों का पता उसके उस पत्र से भले प्रकार लग जाता है जो उसने अपने घनिष्ठ मित्र और सहपाठी सोनिन को लिखा था। सोनिन सेंट-पीटर्सबर्ग में नहीं रहता था। वह देहात के एक कस्बे में अपने एक सम्बन्धी के यहाँ रहता था। अपने जीवन-निर्वाह के लिए वह उसी पर निर्भर था। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं था योग्यता भी उसकी सीमित ही थी, परन्तु असाधारणरूप से हृदय का [illegible] था। उसे राज-नीति से प्रीति नहीं थी, पर [illegible] उसी को शौक से [illegible] था। समय काटने के लिए वह बीन बजाया करता था। स्त्रियों से सदा भयभीत रहता था। परन्तु नेज को वह बहुत ही अधिक चाहता था। वह बड़े प्रेमी हृदय का था। नेज भी उससे कोई बात नहीं छिपाता था। वह उसका पूरा विश्वास करता था और उसे [illegible] [illegible] रखता था। सोनिन के वैसा सुन्दर लिखने की योग्यता [illegible]
[illegible] छोटे छोटे भद्दे [illegible] में ही [illegible] के लिखा करता था

चीत हुई है, परन्तु मुझे ऐसा समझ पड़ता है कि हम दोनों एक ही रंग में रँगे हुए हैं।"

मेरिआ की रूप-रेखा तथा उसकी आदतों का वर्णन करने के बाद उसने अपनी चिट्ठी में उसके सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा——

"वह असुखी, घमण्डी, महत्वाकांक्षी और गम्भीर है। परन्तु मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि वह सबसे अधिक असुखी ही है। परन्तु वह क्यों असुखी है, यह मैं अभी तक नहीं जान सका। यह बिलकुल स्पष्ट है कि उसका स्वभाव खरा है, परन्तु वह नेक है या नहीं, यह देखना है। मूर्ख स्त्रियों की अपेक्षा क्या नेक स्त्रियाँ भी होती हैं? क्या उनका नेक होना आवश्यक है? मुझे स्त्रियों के सम्बंध में बिलकुल जानकारी नहीं है। गृहस्वामिनी को वह जरा भी नहीं रुचती और न उसको गृह-स्वामिनी रुचती है। परन्तु इन दोनों में कौन न्यायपथ पर है, यह बताना कठिन है। मैं समझता हूँ कि सम्भवतः गृहस्वामिनी ही ग़लती पर है।"

नवाँ अध्याय

आधी मई बीत गई। गर्मी के दिनों का प्रारम्भ पहले से ही हो चुका था।

एक दिन इतिहास का पाठ पढ़ाने के बाद मेंग जाकर बाग में घूमने लगा। वहाँ से वह बाग से मिले हुए सनोवर के जंगल में जा पहुँचा। इस जंगल के कुछ हिस्सों को व्यापारियों ने पन्द्रह वर्ष पहले कटवाया था। परन्तु इन स्थलों में सनोवर के नये वृक्ष उग आये थे, जिससे वह फिर घना हो गया था। कोई आध घंटे तक घूमने के बाद वह वृक्ष की एक कटी हुई डाल पर बैठ गया। उसके चारों ओर सूखी हुई टहनियों का ढेर लगा हुआ था। वह सनोवर के तने की बनी हुई दीवार के सहारे उठंग गया और वहाँ की सुन्दर छाया का आनन्द लेने लगा।

सिपी के जाते ही उन दोनों चुपचाप खड़े हुए व्यक्तियों के पास वेलेन आ गई और उसने उन दोनों का एक-दूसरे से फिर परिचय कराया। इसके बाद उसने अपने विचित्र प्रेम के ढंग से अपने भाई से कहा—मार्क, तुम तो हम लोगों को भूल ही गये। तुम कोलिया के नामकरण के दिन के उत्सव में भी नहीं आये। क्या इतना अधिक काम है? नेज की ओर मुँह फेर कर उसने कहा—मेरा भाई अपने किसानों के साथ एक नया इन्तिज़ाम कर रहा है। प्रत्येक उपज में तीन हिस्से उन्हें देना चाहता है और एक हिस्सा अपने लिए रखना चाहता है। इतने पर भी यह यही समझता है कि अपने हिस्से से यह ज्यादा पा रहा है।

मार्क ने कहा—मेरी बहन को दिल्लगी करने का शौक है। परन्तु मैं उनकी यह बात मानने को तैयार हूँ, क्योंकि किसी एक का चौथाई लेना जो सौ आदमियों का है, निस्सन्देह बहुत अधिक है।

बड़े मीठे स्वर में मैडम सिपी ने कहा—क्या तुम समझते हो कि दिल्लगी करने का मुझे शौक है?

नेज उत्तर देने को प्रस्तुत नहीं था, परन्तु ठीक उसी समय कोल्लो के आने की सूचना मिली। गृह-स्वामिनी उसका स्वागत करने को चली गई। इसके कुछ ही क्षण बाद एक नौकर आया और सुरीले स्वर में कहा कि भोजन तैयार है।

भोजन के समय नेज मेरिया और मार्क के ऊपर से अपनी निगाह नहीं हटा सका। वे दोनों पास पास बैठे थे, दोनों की निगाह नीचे को थी, ओंठ बन्द थे और उनके दृढ़ चेहरों पर उदासी लिये हुए कठोरता का भाव था। मार्क ने बहुत थोड़ा खाया। वह ज्यादातर रोटी की गोलियाँ ही बनाता रहा। वह जब तब कोल्लो को ध्यान से देखने लगता था। कोल्लो शहर से अभी हाल में लौटा था। वह वहाँ गवर्नर से अपनी किसी बुराई के मामले में मिलने गया था। परन्तु इसके सम्बन्ध में बातें करने से मौन रहा, दूसरी बातों के बारे में कुछ बातें करता रहा। जब वह ज्यादा ज़ोर से बोलने लगता था तब सिपी टोक देता था। परन्तु उसका

कहा—मिस्टर नेज, मेरी बाबत तुम क्या समझते हो, इसकी मुझे परवा न होनी चाहिए, तो भी तुम्हें यह बतला देना आवश्यक है कि जब मैं मार्को के साथ तुमसे जंगल में मिली तब तुमने हम दोनों को घबरा जाते देखकर जरूर सोचा होगा कि हम दोनों यहां करार के बमूजिब गये थे।

"यह मुझको कुछ जरूर विचित्र बात मालूम हुई"—नेज कहने लगा।

परन्तु मेरिआ ने बाधा देकर कहा—मार्को ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया था और मैंने उसे अस्वीकृत कर दिया। यही बात है जो मैं तुमसे कहना चाहती थी। अब तुम चाहे जो मेरे सम्बन्ध में विचार करो।

यह कहकर मेरिआ घूम पड़ी और नीचे उतर गई। नेज अपने कमरे में चला गया और खिड़की के पास बैठ कर सोचने-विचारने लगा। उसने अपने मन में कहा—कैसी विचित्र लड़की है? बिना पूछे-पाछे अपनी सफाई उसने क्यों दी? मेरी समझ में यह यह बात नहीं सहन कर सकती कि कोई व्यक्ति उसके सम्बन्ध में बुरी राय रखे।

इधर नेज यह सोच रहा था, उधर नीचे उसके सम्बन्ध में जो बातचीत हो रही थी वह साफ सुनाई पड़ती थी।

कोल्लो ने कहा—मेरी तो यह धारणा है कि यह क्रान्तिकारी है। जब मुझे मास्को के गवर्नर जनरल ने स्पेशल कमीशन में नियुक्त किया था तब मैंने इन लोगों को पहचान लेने की शिक्षा सीखी थी। तुमने देखा होगा कि पहले यह किसी को अभिवादन नहीं करता।

मैडम सिपी ने कहा—यह क्यों करे? मुझे तो उसका यह ढङ्ग पसन्द है।

कोल्लो ने कहा—मैं इस घर का अतिथि हूँ और यह यहाँ नौकर है, अतएव मैं उससे श्रेष्ठ हूँ। उसे मुझसे पहले अभिवादन करना चाहिए।

सिपी ने कहा—कोल्लो तुम इन बातों की ओर बहुत ध्यान

अन्त में मार्क ने पूछा—यहां के किसानो से सम्बन्ध जोड़ने का क्या तुमने कोई उपाय किया है?

"नहीं, अभी तक मुझे समय नहीं मिला है।"

"तुम यहां कब से हो?"

"कोई पन्द्रह दिन से।"

"क्या तुम्हारे पास अधिक काम है?"

"नहीं, ऐसा तो नहीं है।"

मार्क के जोर से खांसी आ गई। उसने खांसकर कहा—यहां के लोग बड़े मूर्ख हैं। उन्हें जगाना होगा। ये बहुत ही अधिक गरीब हैं। परन्तु कोई उन्हें उनकी गरीबी का कारण हृदयङ्गम नहीं करा सकता है।

नेज ने कहा—तुम्हारे बहनोई के पुराने प्रजाजन तो जहां तक कोई समझ सकता है, गरीब नहीं जान पड़ते।

"मेरा बहनोई अपने कर्तव्य को जानता है। लोगों को चक्कर में डाल रखने में वह उस्ताद है। निस्सन्देह उसके किसानो की ऐसी बुरी दशा नहीं है। परन्तु उसके एक कारखाना है, जिसकी ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए। जरा-सा प्रयत्न करने पर वहां के मजदूर चल उठेंगे। क्या तुम्हारे पास किताबें हैं।"

"हां, कुछ हैं।"

"मैं कुछ और ला दूंगा। तुम्हारे पास इतनी कम किताबें क्यों हैं?"

नेज ने कुछ उत्तर न दिया। मार्क भी चुप हो गया। वह अपने नथुनों से सिगरेट का धुआं उड़ाने लगा। एकाएक उसने कहा—यह कोल्को कितना नीच है! भोजन के समय मैं उसको मुश्किल से रोक सका, नहीं तो दूसरों को सावधान करने के लिए ठोकर में उसका चेहरा बिगाड़ देता। परन्तु नहीं, अभी इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण काम करने हैं। ऐसी नीच बातों पर मुट्ठी में नाराज होने के लिए हमारे पास समय नहीं है। अब तो वह समय आया है कि इन्हें नीच काम करने से हम रोकें।

नेज ने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रकट की। मार्क

"मुझे उनको बताना होगा। मैं नहीं समझता कि बिना बताये जाना बुद्धिमानी का काम होगा।"

मार्क ने कहा—मैं उनसे कह दूंगा। वे इस समय ताश खेलने में लगे हुए हैं और तुम्हारी अनुपस्थिति की ओर ध्यान नहीं देंगे। मेरे बहनोई का ध्यान केवल सरकारी आदमियों की ओर रहता है और जो एक काम वह अच्छी तरह कर सकता है वह ताश का खेलना है। कहा जाता है कि अनेक लोग इन उपायों से मनवाञ्छित प्राप्त करने में सफल-मनोरथ होते हैं। खैर, तुम तैयार होओ। मैं अभी सब प्रबन्ध करता हूँ।

मार्क चला गया। और एक घण्टे के बाद नेल उसके बगल में उसकी गाड़ी में जा बैठा। गाड़ी हवा से बातें करती हुई चल पड़ी। ठीक दस का समय था।

मार्क का चार्लिअनकोव नामक गाँव एक छोटा-सा गाँव था। उसमें कुल दो सौ एकड़ भूमि थी, जिससे उसको सात सौ रूबल की वार्षिक आय होती थी। उसका यह गाँव उस प्रान्त के मुख्य शहर से तीन मील और सिपी के गाँव से सात मील था। सिपी के गाँव से यहाँ जाने में उक्त शहर से होकर जाना पड़ता था। हमारे इन नये मित्रों ने मुश्किल से दो शब्द अपनी बातचीत में कहे होंगे कि उन्हें शहर के बाहर के दूकानदारों के छोटे-छोटे गन्दे घरों की झलक दिखाई दे गई। शनिवार की रात थी, सड़कें उस समय तक जन-शून्य हो गई थीं, केवल शराब की दूकानें लोगों से भरी हुई थीं। प्रायः सभी दूकानों के भीतर से पियक्कड़ों की लड़खड़ाती हुई आवाजें तथा तरह तरह के राग सुनाई पड़ रहे थे, उनके दरवाजों के सामने किसानों की गाड़ियाँ खड़ी थीं और उनके किवाड़ खुलने पर पियक्कड़ आते-जाते दिखाई पड़ रहे थे।

मार्क ने उदासी के साथ कहा—यह शराब रूसियों के नाश का कारण होगी।

गाड़ीवान ने बिना मुँह घुमाये हुए कहा—दुःख के कारण ही यह सब हो रहा है।

मार्क ने क्रोध से चिल्लाकर कहा—बनावट! बनावट!

अत्याचारों को बराबर याद रखता था। वह सब कुछ के लिए सदा तैयार रहता था। परन्तु उसे दगाबाजी और झूठ से घृणा थी। ऊँची श्रेणी के लोगों के प्रति जिन्हें वह प्रगति-विरोधी कहता था, सदा कठोरता तथा उद्दण्डता का व्यवहार करता था। वह अपनी सम्पत्ति का अच्छा प्रबन्ध करता था, उसके मन में तरह तरह की साम्यवाद-सम्बन्धी योजनायें भरी रहती थीं, जिनको वह उपर्युक्त लेन की भाँति कभी कार्य में नहीं परिणत कर सका। उसने किसी बात में कभी सफलता नहीं प्राप्त की। एक क्षण में वह निर्दय, खूँखार हो सकता था और दूसरे ही क्षण बिना किसी प्रलोभन तथा हिचकिचाहट के अपना सर्वस्व अर्पण कर देने को तैयार हो सकता था।

उपर्युक्त शहर से लगभग दो मील जाने के बाद गाड़ी ने एकाएक जंगल के हलके अंधकार में प्रवेश किया। उस समय तक चन्द्रमा क्षितिज के ऊपर उठ आया था। जंगल पार करने के बाद गाड़ी एक छोटे से मकान के पास जा पहुँची। मकान के सामने की तीन खिड़कियों में प्रकाश दिखाई पड़ता था। मकान का फाटक खुला पड़ा था, मानो वह कभी बन्द ही नहीं किया जाता था। अहाते में दो सफेद घोड़े बँधे थे। इसी समय दो सफेद कुत्ते कहीं से आकर भोंकने लगे। मकान में आदमी इधर-उधर आते-जाते दिखाई दिये। गाड़ी दरवाजे के पास जा खड़ी हुई। मार्क ने गाड़ी से उतरकर नेज से कहा—हम लोग अब आ गये हैं। यहाँ तुम्हारी उन अतिथियों से भेंट होगी जिन्हें तुम अच्छी तरह जानते हो परन्तु जिनसे भेंट होने की तुमको आशा न थी। आइए।

ग्यारहवाँ अध्याय

अतिथि हमारे पूर्व परिचित [illegible] और [illegible] ही निकले। वे दोनों मार्क के ड्राइंगरूम में बैठे सिगरेट और शराब पी

अतएव उसका सारा एकत्र क्षोभ इस समय उबल पड़ा था। ओस्ट्रो तथा मशूरीना दृष्टि से, मुसकराहट से तथा शब्द से बार बार अपनी सहमति प्रकट करते थे, परन्तु नेज में एक विचित्र भाव उत्पन्न हुआ। पहले तो उसने कुछ विरोध किया, जल्दबाजी से किये गये काम की जोखिम का खण्डन किया और इसके लिए उसने पहले के कुछ असफल प्रयत्नों का भी उल्लेख किया। जिस ढंग से प्रत्येक बात बिना विशेष अवस्थाओं का विचार किये हुए या बिना यही जाने कि जनता क्या चाहती है, निर्भ्रान्त होकर निश्चित की गई थी उसके लिए उसे आश्चर्य हुआ। आखिर को वह उत्तेजित होकर काँपने लगा और निराश तथा अश्रुपूर्ण होकर उसने मार्के से भी अधिक ऊँचे स्वर में अपनी बात कहनी शुरू की। किस बात से वह अनुप्राणित हुआ था, यह कहना कठिन है। वे सवेरे तक बातें करते रहे। ओस्ट्रो और मशूरीना एक बार के लिए भी अपनी जगह से नहीं हिले, उधर मार्के और नेज बराबर खड़े रहे। मार्के तो अपनी जगह पर संतरी की ही तरह खड़ा रहा, पर नेज कभी धीरे धीरे तो कभी जल्दी जल्दी कमरे में चहलकदमी-सा करता रहा। उन्होंने काम में लाये जाने-वाले उपायों के सम्बन्ध में बातें कीं। यह भी निश्चय किया कि किसको कौन काम करना होगा। छाँट छाँट कर पैम्फ्लेटों के बंडल बाँधे गये। गोलुश्किन नाम के अशिक्षित उत्साही व्यापारी, चतुर किन्तु कच्ची प्रचारक युवक किसलियाकोव तथा [illegible] का भी उल्लेख किया गया।

सिपियागिन के वार्तालाप को याद करके नेज ने पूछा—क्या यह वही व्यक्ति है जो यहाँ के एक पुतलीघर का प्रबन्ध करता है?

मार्के ने कहा—हाँ, यह वही आदमी है। इसे तुम्हें जानना होगा। हम लोगों ने अभी तक इस पर अपना प्रभाव नहीं डाला है। परन्तु मुझे विश्वास है कि वह बड़े काम का आदमी है।

गोलोप्लोव के एरेमी, मिशो के कीरिल [illegible] और [illegible] नाम से प्रसिद्ध मेंडरी का उल्लेख किया गया। परन्तु सालूम के सम्बन्ध

साम्यवादी परीक्षण किया है। परन्तु ओस्ट्रो ने बाधा देकर कहा—इस सबसे क्या लाभ है? बाद को सब कुछ बदलना होगा।

फिर राजनैतिक बातें होने लगीं। मन की रहस्यपूर्ण पीड़ा नेज को फिर उद्विग्न करने लगी। और जितनी ही वह उग्र पड़ती, उतना ही नेज अधिक स्पष्ट और जोर-शोर अपनी बात करता। उसने एक गिलास बियर शराब ली थी, परन्तु बीच-बीच में उसे ऐसा जान पड़ता कि वह बिलकुल उन्मत्त है। उसका सिर घूम रहा था और उसका दिल जोर-जोर धड़क रहा था।

आखिर को जब वाद-विवाद चार बजे तड़के समाप्ति पर आया और वे सब सोते हुए नौकरों के पास से होकर अपने अपने कमरे में गये तब नेज बिस्तर पर जाने के पहले देर तक चुपचाप खड़ा रहा और सीधा अपने सामने ध्यान से देखता रहा। जिस अभिमानपूर्ण और हृदय हिलानेवाले स्वर में मार्के ने अपनी बात कही थी उसे सोचकर नेज आश्चर्य-चकित हो गया। उसके अभिमान को ठेस पहुँची होगी, उसे कष्ट हुआ होगा, परन्तु जिसे वह सत्य समझता है उसके लिए उसने व्यक्तिगत दुःखों को शान के साथ भुला दिया है। नेज ने अपने मन में कहा—उसकी योग्यता परिमित है, परन्तु जैसा मैं स्वयं अनुभव करता हूँ उसकी अपेक्षा उसके समान होना क्या हजारगुना अच्छा न होगा। अपने इस पतन के प्रति वह तुरन्त रुष्ट हो उठा। उसने अपने मन में कहा—ऐसा मैं क्यों सोचता हूँ? क्या मैं आत्मोत्सर्ग करने के योग्य नहीं हूँ। महोदयो और तुम पैकलिन भी ठहरो! मैं तुम सबको दिखला दूँगा, यद्यपि मैं सौन्दर्य-प्रेमी हूँ और पद्य-रचना करता हूँ।

क्रोध की मुद्रा से नेज ने अपने सिर के बाल पीछे को मोड़े, दाँत पीसे और जल्दी-जल्दी कपड़े उतारकर वह ठण्डे और नम बिस्तरे पर जा पड़ा।

दरवाजे के दूसरी ओर से मार्कलोव की आवाज सुनाई दी। उसने कहा—रात का अभिवादन है। मैं तुम्हारे पड़ोस में ही हूँ।

नेज ने भी उत्तर में अभिवादन किया। उसे याद आ गया

पुकार कर एक शराब लाने को कहा। तब सालोमन ने वेलेन की ओर घूम कर शान्ति के साथ कहा—श्रीमती, शायद आप यह नहीं जानतीं कि मैं इंग्लैंड में दो वर्ष से अधिक समय तक रहा हूँ और अँगरेजी समझ और बोल सकता हूँ। इस बात का उल्लेख मैंने इसलिए किया है कि शायद आप कोई गुप्त बात मेरे सामने फिर कहना चाहें।

वेलेन हँस पड़ी। उसने उसे विश्वास दिलाया कि इस सावधानी की यहाँ जरूरत नहीं है।

इस बात पर कोल्लो चुप न रह सका। उसने कहा—तो तुम इंग्लैंड में रहे हो। तब तो तुमने वहाँ के तौर-तरीकों को भी ध्यान से देखा होगा। क्या तुम उनकी नकल करना उचित समझते हो?

"कुछ को उचित और कुछ को नहीं।"

कोल्लो ने सिपी के सकेतों को न देखने का प्रयत्न करते हुए कहा—संक्षिप्त है, पर स्पष्ट नहीं है। तुम आज सवेरे रईसों की बातें करते थे। तुमने तो वहाँ इंग्लैंड के रईसों का भी हालचाल जाना होगा?

"नहीं, मुझे यह सब जानने का मौका नहीं मिला है। मैं दूसरे ही प्रकार के लोगों के बीच उठा-बैठा हूँ। परन्तु यहाँ के रईसों के सम्बन्ध में मेरी अपनी राय अलग है।"

"क्या तुम समझते हो कि वहाँ की तरह के रईस हम लोगों में होने असम्भव हैं या हमीं को वहाँ की तरह के रईस यहाँ नहीं चाहिए।"

"पहले तो यह कि उनका यहाँ होना मैं असम्भव समझता हूँ, दूसरे यह कि यहाँ वैसी चीज वांछनीय नहीं है।"

सिपी के सन्तोष के लिए विनम्रता के साथ कोल्लो ने पूछा—परन्तु ऐसा क्यों [illegible]?

"क्योंकि बीस या तीस वर्ष में यहाँ तुम्हारे इन रईसों का अस्तित्व ही न रह जायगा।"

"ऐसा तुम क्यों समझते हो?"

"इस लिए कि तब तक इनकी जमीनें जन-साधारण के हाथ में चली जायँगी।"

"क्या तुम्हारा मतलब किसानों से है?"

"निःसन्देह, सम्भवतः उनके अधिकारी वे ही होंगे।"

"साधारण जन सो रहे हैं।"

"क्या तुम उन्हें जगाना पसन्द करोगे ?"

"यह करना बुरा काम न होगा।"

"अहा! अहा! यह बात है!"

सिपी ने अनुभव किया कि अब इस वाद-विवाद के बन्द करने का समय आ गया है। अतएव उसने वहाँ एक लम्बा भाषण किया। उसने अनुदारों की प्रशंसा की और उदारता का समर्थन किया। वह भी अपने को उदार गिनता था, इससे उसने उनको ही पसन्द किया। उसने साधारण जनों की बड़ी प्रशंसा की, परन्तु उनकी कुछ कमजोरियों का भी उल्लेख किया। उसने सरकार पर अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त किया, साहित्य का महत्त्व स्वीकार किया, परन्तु कहा कि बिना अत्यधिक सावधानी के साहित्य एक भयंकर वस्तु हो जाता है। उसने पश्चिमी योरप से आशा की, इसके बाद वह सन्देह में पड़ गया। तब उसने पूर्व का अर्थात् एशिया का नाम लिया। पहले तो उसने आह भरी फिर वह उत्साहपूर्ण हो गया। अन्त में उसने धर्म, कृषि और उद्योग के नाम पर 'टोस्ट' का प्रस्ताव किया। सोल्लो ने 'शासन की छाया के नीचे' यह वाक्य 'टोस्ट' के प्रस्ताव में जोड़ दिया। परन्तु सिपी ने 'बुद्धिमान् तथा लाभदायक शासन की छाया के नीचे' जोड़कर उसका संशोधन कर दिया। चुपचाप टोस्ट का प्याला पिया गया। सिपी के बाँयें बैठे हुए मेज ने अपनी असम्मति कई बार दी। परन्तु जब लोगों ने ध्यान नहीं दिया तब वह चुप हो रहा। इस प्रकार भोजन हँसी खुशी के साथ समाप्त हुआ।

बेरेन ने बड़ी मधुर मुस्कराहट से काफी का प्याला अपने हाथ से मार्नोमन को दिया। उसे पीकर उसने अपनी टोपी के लिए इधर-उधर निगाह डाली। परन्तु सिपी ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने पढ़ने के कमरे में लिवा ले गया। वहाँ उसने उसे एक बढ़िया सिगार पीने को दिया और उससे अपने कागजात में पढ़े जाने को कहा। उसने कहा—मौसियो पेरोटिच, मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ, तुम इन कागजातों के पूरे मालिक हो। मार्नोमन ने सिगार ले लिया,

उस पर कोई भी पूरा विश्वास कर सकता था। वह किसी को धोखा तो देगा नहीं, इसके सिवा वह मदद भी देगा। मेरिआ को ऐसा मालूम हुआ कि उसने ऐसा भाव केवल उसी के मन में नहीं पैदा किया है, किन्तु जो कोई वहां उपस्थित था सभी के मन में पैदा किया है। जो बातें उसने की थीं उनसे मेरिआ की दिलचस्पी नहीं थी। उसकी कारखानों और व्यापारियों के सम्बन्ध की बातें उसके लिए विशेष महत्त्व की नहीं थीं, किन्तु जिस ढंग से उसने बातें कीं, अपने चारों ओर देखा और मुस्कराया, उससे वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई।

यह स्पष्ट आदमी है, यही मेरिआ को समझ पड़ा। यह एक प्रसिद्ध बात है कि रूसी लोग संसार भर में सबसे अधिक झूठे हैं, तो भी वे सत्य का ही सबसे अधिक आदर करते हैं। मेरिआ को साल्ोमन एक विशेष प्रकार के प्रकाश से घिरा हुआ दिखाई दिया। उसके इस भाव का कारण यह था कि उसकी स्वयं बेनिलो ने प्रशंसा की थी। भोजन के समय उसने उसकी ओर से निगाहों निगाहों बेज से कुछ संकेत किया था। अन्त में उसने अनिच्छा से उन दोनों की अपने मन में तुलना की, जिसमें सालोमन श्रेष्ठ सिद्ध हुआ। यह सच था कि बेज का चेहरा सालोमन की अपेक्षा ज्यादा सुन्दर और मनमोहक था, परन्तु उसके इस चेहरे से [illegible] चिह्न अधीरता, उदासी का भाव व्यक्त होता था। मेरिआ ने [illegible] मन में कहा—मुझे इस आदमी की सलाह जरूर लेनी चाहिए [illegible] वह जरूर बतलायेगा। भोजन के बाद [illegible] पास भेजा था।

[illegible] गई। सौभाग्य से भोजन करने में देर हो गई [illegible] आया था। [illegible] मन ही मन नाराज था, [illegible] हँसी में पूछा— क्या [illegible] है ?

[illegible]—हाँ। एक बेल्जियन व्यापारी की एक कहानी है। [illegible] लोगों को दिया था, जिन्हें फिर उसे [illegible] था, मेरा धोखा हुआ [illegible]। और मैं [illegible] हुई थी। 'धूर्त' शब्द का मजा है और

तुमको नहीं जान पावेगा। अगर तुम लोग वहाँ पहुँच जाओगे तो फिर तुमको कोई नहीं पा सकेगा। वहाँ बहुत ज्यादा आदमी हैं, और यह उस स्थान की एक अच्छी बात है। लोगों के समूह में छिपे रहना आसान है। क्या तुम आओगे?

नेज ने कहा—हम लोग तुम्हें कहाँ तक धन्यवाद दें? कारखाने को जाने की बात से मेरिआ पहले तो चकित हो गई, फिर शीघ्र ही उसने कहा—बहुत ठीक! बहुत ठीक! बड़ी कृपा की! परन्तु तुम हमें वहाँ अधिक दिनों तक तो नहीं रोक रक्खोगे? क्या तुम हमें आगे काम पर जाने दोगे?

"यह सब तो तुम लोगों पर निर्भर है। अगर तुम अपना विवाह करना चाहोगे तो वहाँ उसका भी प्रबन्ध हो जायगा। पड़ोस में ही मेरा एक भतीजा रहता है। वह पादड़ी है। वह बड़ी प्रसन्नता से तुम लोगों का विवाह कर देगा।"

मेरिआ मन ही मन मुस्कराई। नेज ने फिर एक बार सालोमन का हाथ दबाया। उसने ठहरकर पूछा—परन्तु क्या इस बात से तुम्हारा मालिक नाराज नहीं होगा?

"इस सबकी चिन्ता न करो। यह बिलकुल अनावश्यक है। जब तक कारखाने का काम ठीक ठीक चल रहा है तब तक कोई कुछ कहनेवाला नहीं। तुम न तो मालिक के नाखुश होने से डरो, न यही समझो कि वहाँ के मजदूरों से तुम्हें किसी तरह का कष्ट होगा। सिर्फ मुझे यही बता दो कि तुम किस समय आओगे?

नेज और मेरिआ ने एक दूसरे को देखा।

"परसों ठीक सबेरे या एक दिन उसके बाद। हम अब अधिक नहीं ठहर सकते। जहाँ तक मैं जानता हूँ, वे मुझे बच जाने तो नहीं देंगे।'

अपनी मूँछों में हँसते हुए सालोमन ने कहा—अच्छा, मैं ठीक सबेरे तुम्हारी राह देखूँगा। इस ख्याल से मैं बाहर नहीं जाऊँगा। सब तरह से तैयार रहूँगा।

मेरिआ बाहर जा रही थी। वह सालोमन के पास आई। उसने

नीचे लिख दिया—"तुम्हें मेरे लिए दुखी नहीं होना चाहिए। ईश्वर ही जानता है कि हम दोनों में से कौन दया का पात्र है। मैं केवल यह जानती हूँ कि संसार का राज्य मिलने पर भी तुम्हारी जगह पर होना मैं नहीं पसन्द करूँगी—ये।" उसने उस नोट को मेज पर ही रख दिया। उसे विश्वास था कि यह येलेन के हाथ पड़ जायगा।

दूसरे दिन सबेरे सालोमन नेज से मिलने के बाद निपी से मिला और उसके कारखाने का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने से साफ इन्कार कर दिया। इसके बाद वह अपने घर को रवाना हुआ। वह राह भर भुनभुनाता गया। ऐसी बात शायद ही कभी हुई हो। गाड़ी के चलने से उसे झपकी-सी आने लगी थी। वह मेन्जिज और नेज की बात सोचता रहा। उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो वह प्रेम के चक्कर में पड़ गया है—उसी सालोमन ने जिसका बिल्कुल ही दूसरा रुख था, जिसने भिन्न ही ढंग से यह सब देखा होता और इसके सम्बन्ध में कहा-सुना होता, अपने मन में कहा—परन्तु ऐसा तो मुझे कभी नहीं हुआ, यदि अखबार पढ़ता तो मैं नहीं कह सकता कि उस समय कैसा ढंग बहुत करता। उसे एक आयरिश लड़की की याद आई, जिसे उसने एक दुकान में देखा था। उस लड़की ने उसे कैसे देखा था वह और उसकी दुकान की खिड़की के सामने से कितनी बार निकला था तथा उसके सम्बन्ध में क्या जानना चाहता था, यह भी सब उसे एक-एक करके याद हो आया। वह उस समय लंदन में था। उसके मालिक ने रुपया देकर उसे वहाँ खरीद-फरोख्त करने को भेजा था। उसने लंदन में ठहर जाने का और मालिक का रुपया खोटा करने का करीब करीब निश्चय कर लिया था। सुन्दरी पोली का उस पर ऐसा ही प्रभाव पड़ा था। (उसने उसका यह नाम एक कुमारी दुकान की लड़की को कहते सुन लिया था) परन्तु उसने अपनी भावुकता काबू में किया और मालिक के पास लौट आया। पोली मेन्जिज की अपेक्षा और भी सुन्दर थी। परन्तु मेन्जिज की भी दृष्टि [illegible] जैसी ही है। [illegible] वह [illegible] है।

सालोमन ने धीरे से कहा—परन्तु [illegible] हूँ [illegible]

"हेलेन, पत्र-व्यवहार का प्रारम्भ मैंने नहीं किया है।"

"यह सच है। इस सम्बन्ध में मेरा ही दोष है। बात यह है कि मैं उस भाव को तुम्हारे मन में पैदा करने का कोई दूसरा उपाय सोच ही न सकी जिसे—कैसे मैं उसे कहूँ? जिस भाव को—"

"तुम बिल्कुल साफ़ साफ़ कह सकती हो। तुमको मेरी नाराज़ी से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

"शिष्टता का भाव।"

"तुम यह कैसे समझती हो कि मैंने शिष्टता का उल्लंघन किया है?"

"मैं समझती हूँ कि तुम मेरा मतलब समझती हो। क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी चालढाल मुझसे, अच्छा से, यही नहीं, पर वे दूसरे लोगों से छिपी रह सकती है? मेरा तो यह कहना है कि तुमको छिपाने की परवा भी नहीं है। तुमने यह सब घमंड में आकर किया है। केवल गृहस्वामी को तुम्हारी यह करतूत नहीं मालूम है।"

"अपनी बात ज़्यादा स्पष्ट करके कहो। किस बात से तुम नाराज़ हुई हो?"

"क्या तुम जानना चाहती हो? तब मैं तुमसे अवश्य कहूँगी। मैं एक ऐसे युवक के साथ तुम्हारा देर तक उठना-बैठना नहीं पसन्द करती जो कुल तथा सामाजिक स्थिति की दृष्टि से तुमसे बहुत नीच है। मैं नाराज़ हूँ—यह तो बहुत नरम शब्द—मुझे चोट पहुँची है तुम्हारे उस युवक के पास रात में जाने से। और यह सब कहाँ हो रहा है? मेरी छत के नीचे! शायद तुम इसमें कोई बुराई नहीं समझती, तुम समझती हो कि इससे मुझे क्या, मैं चुप रहूँगी और इस प्रकार तुम्हारे इस व्यवहार पर परदा डाले रहूँगी। मैं एक प्रतिष्ठित महिला हूँ। ऐसी बातों से मुझे घृणा होती है।"

यह कहकर वह एक आरामकुर्सी पर [illegible] से बैठ गई मानो थक कर [illegible] हो गई है। इतनी देर बाद [illegible] के मुँह पर [illegible] हँसी की रेखा दिखाई दी। उसने कहा—"हूँ, [illegible] और [illegible] को भी तुम्हारी प्रतिष्ठा पर [illegible] [illegible] है। [illegible]

"चाहे जो हो। परन्तु मेरा विश्वास करो, यदि हम मरने लगेंगे तो उस समय हम तुम्हारी ओर अपनी उँगली तक न उठायेंगे कि हम लोगों को बचा लो।"

पेलेग ने अपना सुर एकाएक बदलकर कहा—फिर घमंड की बात। इतना घमंड! सुनो मेरिआ, सुनो—उसने चाहा कि मेरिआ उसके और समीप आ जाय, परन्तु वह एक कदम पीछे हट गई। मैं इतना न तो बुड्ढी हूँ, न इतना मूर्ख ही हूँ कि हम एक दूसरे को न समझ सकें। जब मैं लड़की थी तब मैं भी प्रजातन्त्रवादिनी समझी जाती थी और तुमसे किसी बात में कम नहीं। सुनो, मैं यह नहीं कहूँगी कि मैंने कभी तुम्हारे प्रति माता का-सा भाव व्यक्त किया है। तुम्हारा स्वभाव भी ऐसा नहीं है कि तुम उसकी शिकायत करो। परन्तु मैंने सदा माना है, और अब भी मानती हूँ कि मेरा तुम्हारे प्रति कुछ कर्तव्य है और उसके पालन करने का मैंने सदा प्रयत्न किया है। जिसके साथ तुम्हारा विवाह करना चाहती थी और जिसके लिए हम दोनों सब कुछ कर गुजरने को तैयार हो जाते, वह चाहे तुम्हारे विचारों के पूर्णरूप से अनुरूप न हो, परन्तु मेरे हृदय की राह में—

मेरिआ बीच में बोल उठी। उसने कहा—क्या उसे तुम मेरा जोड़ समझती हो? क्या तुम उस अशोभनीय गँवार मित्र कोल्लो को मेरा जोड़ कहती हो?

"हाँ, मैं उसी शिक्षित, श्रेष्ठ युवक कोल्लो के सम्बन्ध में ही कहती हूँ, जो अपनी स्त्री को प्रसन्न रक्खेगा और जिसे कोई माता खुशी से आशीर्वाद कर सकती है—हाँ, केवल पागल स्त्री ही!"

"मैं क्या कर सकती हूँ? ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं पागल हूँ।"

"क्या तुमको उसके विरुद्ध कोई गम्भीर शिकायत है?"

"ऐसी तो कोई नहीं। मैं सिर्फ उससे घृणा करती हूँ।"

पेलेग ने अधीरता से अपना सिर हिलाया, फिर वह कुर्सी पर बैठ गई। उसने कहा—अच्छा, इसकी बाबत कभी सोचो। तो क्या तुम किसी पर प्रेम करती हो?

नाराज हुआ है। परन्तु क्या मैं तुमसे या इन आदमियों से कोई बात पूछ रही हूँ ? क्या तुम समझती हो कि मुझे उनकी नेक सलाह की परवा है ? क्या तुम समझती हो कि मेरा तुम्हारी रोटियाँ तोड़ना मेरे लिए सुखद रहा है ? तुम तो एक बुद्धिमान् स्त्री हो। क्या तुम यह सब नहीं समझती ? यदि तुम मुझसे घृणा करती हो तो मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगी, क्या तुम यह जानती हो ?"

वेलेन ने फिर उससे चली जाने को कहा।

दरवाजे की ओर एक-दो क़दम चलकर मेरिआ रुक गई। उसने कहा—अच्छा मैं जाती हूँ। परन्तु मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हारी अपेक्षा कहीं ज्यादा ईमानदार हूँ। नमस्कार !

मेरिआ तुरन्त कमरे से बाहर हो गई। इधर वेलेन अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ी। उसे रोने की, चिल्लाने की इच्छा हुई। वह रूमाल से अपने मुँह पर हवा करने लगी। वह बड़ी दुखी थी, उसे अपमानित होने का दुख था। जो कुछ उसने अभी सुना था उसमें सत्य का कुछ अंश है, यह बात वह जानती थी, परन्तु कोई उसका ऐसा अपमान कैसे कर सकता है ? उसने अपने मन में कहा—क्या मैं सचमुच इतनी खराब हूँ ?

इसी समय उसका पति कमरे में घुस आया और उसने अपना चेहरा रूमाल से ढँक लिया। सिपी ने चिन्ता के साथ पूछा—क्या बात है ? तुम्हारी कैसी तबीयत है ?

पहले तो वेलेन ने कहा कि ऐसी कोई बात नहीं है, परन्तु फिर बड़े हाव-भाव के साथ अपनी कुर्सी में घूमकर और उसके कन्धे पर अपने हाथ रखकर उसने सारी कथा उससे कह दी। अन्त में उसने यह भी कहा—अगर मेरी अपनी लड़की होती तो वह बात कभी न कहने पाती, मैंने उसकी शिक्षा इसी ढंग से दी होती। सिपी ने बड़े ध्यान के साथ उसकी बातें सुनीं, उसका चेहरा गम्भीरता की व्यञ्जना करता रहा। उसने कहा—मैं जानता हूँ कि गृहस्वामी के रूप में मुझे क्या करना चाहिए। यह समझकर कि अभी तक कई छोटे किन्तु आवश्यक कार्य [illegible] [illegible] होंगे, वह कमरे से चला गया।

फैले हुए बादलों के गोल किनारों पर उषा की झलक जान पड़ती थी। एकाएक नेज़ कांप उठा और सावधान हो गया। पास ही किसी के चलने की आहट सुनाई दी, दरवाज़े का खुलना सुनाई दिया। फिर एक छोटी सी लड़की शाल ओढ़े और एक बंडल बगल में दाबे सड़क पर धीरे धीरे आती हुई दिखाई दी। नेज उसकी ओर दौड़ गया। उसने धीरे से कहा—मेरिआ!

शाल के भीतर से मेरिआ धीरे से बोली—हां मैं हूं।

उसका हाथ पकड़कर नेज ने कहा—इधर आओ।

मेरिआ कांप उठी, मानो ठंड से। नेज उसे गाड़ी तक लिया ले गया। उसने किसान को जगाया। किसान तुरन्त उठ कर अपनी जगह पर जा बैठा। नेज ने मेरिआ को गाड़ी में बैठा दिया। उसके बैठने के लिए उसने अपना लबादा बिछा दिया और उसके पैरों को रग से लपेट दिया। फिर वह उसके बगल में बैठ गया और गाड़ी चलाने को कहा। किसान ने बाग खींची, घोड़े झाड़ियों के कुंज से बाहर सड़क पर आ गये और गाड़ी सड़क पर चलने लगी। नेज अपना हाथ मेरिआ के कमर में डाले था। मेरिआ ने अपनी ठंडी उँगलियों से शाल को हटाकर अपना मुस्कराता हुआ चेहरा नेज की ओर किया। उसने कहा—कैसी सुन्दर ताज़ी हवा है?

किसान ने कहा—हां, बहुत ज्यादा ओस पड़ेगी।

ओस पहले से ही पड़ रही थी। घास तुषार-सी हो रही थी।

मेरिआ फिर ठंड से कांप उठी। उसने प्रसन्नता से कहा—कितनी ठंड है! परन्तु स्वतन्त्रता!

सत्ताईसवाँ अध्याय

अब [illegible] में लगा कि एक आदमी एक स्त्री के साथ [illegible] की [illegible] है और उसे [illegible] के [illegible] की ओर [illegible]। गाड़ी के पास [illegible]

"बाद को देखा जायगा"—यह कहकर सालोमन ने पेवेल की ओर जो मेज का सामान ले आया था, संकेत करके कहा—यहाँ यह मेरा एक श्रेष्ठ मित्र है। इन पर तुम उसी प्रकार पूरा भरोसा कर सकती हो, जैसे मुझ पर। उसने पेवेल से पूछा—चाय के लिए टेटी से कहा है?

पेवेल ने कहा—शीघ्र ही तैयार होती है। पनीर और सब कुछ तैयार होता है।

सालोमन ने कहा—टेटी पेवेल की स्त्री है। वह भी इसी के समान विश्वासपात्र है। श्रीमती जी, जब तक तुमको अपने काम-धाम का अभ्यास नहीं हो जायगा, वह तुम्हारी पूरी देख-रेख करेगी।

मेरिआ ने अपना लबादा एक कोने में रखे हुए कोच पर डाल दिया। उसने कहा—

"वेसिली फेडोरोविच, क्या तुम कृपा कर मुझे मेरिआ कहा करोगे? मैं लेडी नहीं होना चाहती, न मुझे नौकरों की जरूरत है। मैं इस मतलब से बाहर नहीं निकली हूँ। मेरी पोशाक की तरफ मत देखो। मेरे पास दूसरी नहीं है। मैं यह सब अभी बदल डालूँगी।'

मेरिआ की पोशाक भूरे रंग के बढ़िया कपड़े की थी और बहुत ही सादी थी, परन्तु सेंटपीटर्सबर्ग की बनी थी। वह उसमें बहुत सुन्दर लगती थी।

सालोमन ने कहा—अच्छा, अगर तुम नहीं चाहतीं तो लेडी मत बनो, परन्तु अमेरिका इस के [illegible] ही है। परन्तु तुमको कुछ चाय लेनी चाहिए। अभी सवेरा है। तुम थकी हुई हो। मुझे अब कारखाने में काम पर जाना होगा, परन्तु कुछ देर बाद आकर देख जाऊँगा। अगर तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो तो पेवेल या टेटी से कहना।

मेरिआ ने कृतज्ञता से अपने दोनों हाथ उसके आगे फैला दिये। उसने कहा—वेसिली फेडोरोविच, मैं तुम्हारी और [illegible] दे सकती हूँ। [illegible] और [illegible] बाद के साथ देखना। सालोमन ने [illegible]

आंखें थीं और यह बहुत ही साफ हलके रंग की पोशाक पहने थी। उसने बड़ी गम्भीरता से उन दोनों को सिर झुकाकर नमस्कार किया और वह चाय आदि चीजों को यथास्थान चुपचाप रखने लगी।

मेरिआ उसके पास जा खड़ी हुई। उसने कहा—मुझे भी मदद करने दो। मुझे सिर्फ रूमाल दे दो।

"तुम इसकी चिन्ता न करो मिस। हम लोगों को इन कामों का अभ्यास है। वैसिली फ्रेडोटिच मुझसे कह गया है। अगर कोई चीज की जरूरत हो तो कृपा करके बताना। कोई भी तुम्हारा काम जो हम कर सकते हैं, करने में हम प्रसन्न होंगे।"

"टेरी, कृपा करके मुझे मिस न कहो, मैं लेडी की-सी पोशाक पहने जरूर हूँ, परन्तु मैं बिलकुल—"

टेरी की पैनी निगाह से मेरिआ झेंप कर चुप हो गई। टेरी ने पूछा—तब तुम क्या हो ?

"यदि तुम सचमुच जानना चाहती हो, मैं निस्सन्देह जन्म से 'लेडी' हूँ। परन्तु मैं इन सब बातों से दूर रहना चाहती हूँ। मैं साधारण स्त्रियों जैसी ही होना चाहती हूँ।"

"अच्छा, मैं समझी। आजकल जैसे अनेक स्त्रियां साधारण लोगों जैसी हो रही हैं, उसी तरह तुम भी सीधा-सादा जीवन ग्रहण करना चाहती हो।"

मेरिआ ने जोश से कहा—ठीक कहते हो। तुम और मैं अब साधारण लोग जैसे ही बने हैं।

टेरी ने दुबारा की मुस्कराहट के साथ एक दूसरे को देखा और अपने साथे हुए बड़े बड़े हाथों से लापरवाही से कांटा धोते हुए उसने मेरिआ से पूछा—क्या ये तुम्हारे पति हैं या भाई हैं ?

मेरिआ ने कहा—नहीं। न तो ये मेरे पति हैं, न भाई हैं।

अपना सिर उठाकर टेरी ने कहा—तब क्या तुम स्वाधीन भाव से एक साथ रह रही हो ? यह बात भी आजकल आम होती जाती है। [illegible]

[illegible]

[illegible]

के साथ विवाह किया था तब मैं नहीं जानती थी कि कैसे लिखा-पढ़ा जाता है। परन्तु वेसिली फेडोरोविच की बदौलत अब मैं सीख गई हूँ। उसने एक बुड्ढा आदमी नौकर कर दिया था, जिसने मुझे पढ़ा दिया। तुम देखती हो, मैं अभी जवान हूँ, यद्यपि मेरी उम्र अधिक है।"

मेरिया चुप थी। उसने कहा—टेटी, मैं कोई धंधा सीखना चाहती हूँ। इसकी बाबत मैं फिर बातचीत करूँगी। मुझसे अच्छा सीते नहीं बनता, परन्तु यदि मैं भोजन बनाना सीख लूँ तो मैं इस काम को अच्छी तरह कर सकूँगी।

टेटी ने कहा—खाना बनाना क्यों? केवल धनी और व्यापारी लोग ही रसोइये रखते हैं। गरीब लोग तो अपना भोजन खुद बना लेते हैं। और मजदूरों के भोजनालय में भोजन बनाना, सो यह काम तुम न कर सकोगी।

"परन्तु मैं किसी अमीर आदमी के घर में रह सकती हूँ और गरीबों का हाल जान सकती हूँ। और किस तरह मैं उनका हाल जान सकती हूँ? मुझे ऐसा अवसर जैसा तुम्हारे साथ मिला है, शायद नहीं मिलेगा।"

टेरी ने अपना खाली प्याला रकाबी में रख दिया। अन्त में लम्बी आह खींच कर उसने कहा—यह कठिन मसला है। इसका निर्णय सरलता से नहीं हो सकता। जो मैं कर सकती हूँ, करूँगी, परन्तु मैं बहुत होशियार नहीं हूँ। हमको इस सम्बन्ध में पेवेल से बात करनी होगी। वह होशियार है। वह सब तरह की किताबें पढ़ता है और प्रत्येक बात जानता है। यह कह कर उसने मेरिया की ओर देखा, जो एक सिगरेट पी रही थी। सिगरेट की ओर इशारा करके उसने कहा—[illegible]। यदि तुम साधारण लोगों जैसी होना चाहती हो तो तुम्हें यह छोड़ना होगा। अगर तुम स्लोटेर्किन बनना चाहती हो तो इससे काम नहीं चलेगा। प्रत्येक व्यक्ति समझ जायगा कि तुम कोई 'ऐसी' हो।

मेरिया ने सिगरेट खिड़की के बाहर फेंक दी। उसने कहा—अब मैं कभी सिगरेट न पीऊँगी। [illegible] बिलकुल [illegible] है।

अट्ठाईसवाँ अध्याय

पहले मेरिया और नेज ने एक-दूसरे के हाथ ज़ोर से पकड़ लिये। फिर मेरिया उसके कमरे को साफ करने में उसकी मदद करने लगी। उसने उसका पोर्टमैंटो खोला और उसके कपड़े निकाले। दीवार पर कीलें गाड़कर उन्हें टाँग दिया। चीज़ें उसे टेबुल के ड्रावर में मिल गईं। उसने उसके अच्छे कपड़े दोनों खिड़कियों के बीच में रक्खे हुए एक पुराने सन्दूक में रख दिये। पोर्टमैंटो के भीतर देखते हुए उसने एकाएक पूछा—यह क्या है? क्या यह रिवाल्वर है? क्या भरा हुआ है? इसकी तुम्हें क्या ज़रूरत है?

"यह भरा नहीं है। उसे मुझे दे दो। क्या तुम जानना चाहती हो कि मैं इसे क्यों रखता हूँ? हमारे धन्धे में बिना रिवाल्वर के कैसे काम चल सकता है?"

मेरिया हँस कर अपने काम में लग गई। वह प्रत्येक वस्तु को हिलाकर अपने हाथ से झाड़कर साफ करती जाती थी। उसने दो जोड़े जूते सोफा के नीचे रख दिये। कुछ किताबें, तस्वीरों का एक बंडल, कविता की कापी-को बाँधे हुए रिबनों मेज पर रख दीं। एक दूसरी मेज को उसने चाय पीने और भोजन करने के लिए अलग रख दिया। तब उसने अपने दोनों हाथों से [illegible] को अपनी ओर खींच और उसके चेहरे के बराबर झुककर उसके किनारे पर से मेज की ओर देखा और मुस्कराते हुए कहा—

जिनसे दूर हो गया है, मानों कुहरे से ढँक गया है। इसके बाद उन्होंने एक-दूसरे के हाथ फिर मजबूती से पकड़ कर बड़े प्रेम से वे एक-दूसरे को देखने लगे। इस बात पर आश्चर्य करने लगे कि किस श्रेणी के लोगों के पास उन्हें पहले जाना चाहिए और उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए कि लोग उन पर सन्देह न करें।

नेज ने कहा—जितना ही कम हम इस सम्बन्ध में सोचे-विचारेंगे और जितना ही अधिक हम स्वाभाविक ढंग से लोगों के साथ व्यवहार करेंगे, उतना ही अच्छा होगा।

"निस्सन्देह ! जैसा कि टैटी कहती है कि हम साधारण लोगों जैसे होना चाहते हैं।"

नेज ने कहा—मेरा मतलब यह है कि हमें अपने व्यवहार में अस्वाभाविक न होना चाहिए।

मेरिआना एकाएक जोर से हँस पड़ी। उसने पूछा—मैंने यह कैसे कहा कि हम साधारण लोगों जैसे हो गये हैं ? क्या तुम्हें कुछ याद है ?

नेज भी हँस पड़ा, पर मेरिआना की बात मन में दुहराकर सोचने लगा। मेरिआना भी सोचने लगी। उसने कहा—नेज !

"क्या बात है ?"

"ऐसा जान पड़ता है कि हम दोनों थोड़ा-थोड़ा दुखी हैं। जैसे युवक जोड़े हनीमून के काल में (विवाह के बाद के पहले महीने में) एक प्रकार के सुख का अनुभव करते हैं, वैसे ही हम कर रहे हैं। वे प्रसन्न होते हैं—वे सभी प्रकार अच्छी तरह होते हैं, परन्तु तो भी कुछ कुछ दुखी होते हैं।"

नेज जबर्दस्ती की हँसी हँसा। उसने कहा—मेरिआना, तुम अच्छी तरह जानती हो कि इस अर्थ में—हम युवक नहीं हैं।

मेरिआना कुर्सी पर से उठकर उसके सामने खड़ी हो गई। उसने कहा—यह तो स्वयं तुम्हीं पर निर्भर है।

"कैसे ?"

'प्यारे, तुम जब एक शिक्षित आदमी की तरह रहते हो—और जो व्यवहार [illegible] करोगे, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम एक [illegible]

"हाँ, तुमने ठीक अनुमान किया है।"

"तुम्हारे पास कैसे आई?"

"उसने मुझे दिया है।"

"सच?"

कब और किस अवस्था में वह तसवीर मिली थी नेज ने उसको सब बता दिया।

मेरिजा ने चुपचाप तसवीर को फिर उसी कागज में लपेट कर मेज पर रख दिया। उसने धीरे से कहा—वह कैसा भला आदमी है! वह अब कहाँ है?

"घर में होगा। कल या परसों मैं उसके पास कुछ किताबें और पैम्फलेट मांगने जाऊँगा। उसने मुझे देने को कहा था। चलने के समय वह देना भूल गया।"

"उसने यह तसवीर जब तुमको दी तब क्या उसने सब कुछ त्याग दिया था?"

"मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।"

"क्या वह तुम्हें घर में मिलेगा?"

"जरूर!"

"आह!" मेरिजा ने अपनी आँखें नीची कर लीं और अपने हाथ अपने [illegible] डाल दिये। उसने एकाएक कहा—हमारा भोजन ठंडा हो रहा है। क्या वह अच्छी नहीं है?

रसोईदारिन, तश्तरियाँ आदि लिये हुए टेबी आ पहुँची। सब चीजें मेज पर यथास्थान रखते हुए उसने [illegible] सारी खबरें कह सुनाईं। उसने कहा—[illegible] शुरू किया। [illegible]

मेरिआ बाहर निकल आई और डरकर चिल्ला उठी। पहले तो उसने उसे पहचाना नहीं। वह लम्बा भद्दा भूरे रंग का एक कोट जिसमें छोटे छोटे बटन लगे हुए थे पहने हुए था। उसके बाल ऐसी ढंग से कंघी किये गये थे। वह अपनी गर्दन में एक नीला रूमाल बांधे था और हाथ में टोपी लिये हुए था। पैरों में मैले बूट पहने था। मेरिआ ने कहा—अरे तुम, कैसे बदसूरत दिखाई देते हो! इसके बाद उसने उसे अपने हाथों से पकड़ कर जल्दी से चूम लिया। उसने कहा—तुमने अपना ऐसा भेष क्यों बनाया है? तुम तो एक प्रकार के दूकानदार, किसानों या नौकरी छोड़े हुए नौकर-सा जान पड़ते हो। यह लम्बा कोट क्यों पहना है? किसानों जैसा सादा क्यों नहीं पहना?

नेज उस पोशाक में सचमुच एक प्रकार का मछली बेचनेवाला जान पड़ता था। इस बात को वह स्वयं जानता था और इसके लिए वह मन ही मन खुश था। उसने कहा—पेडेल कहता है कि किसान के भेष में तुम तुरन्त पहचान लिये जाओगे और इस पोशाक में मैं ऐसा दिखता हूँ, मानो मेरा यही पहनने के लिए जन्म हुआ है।

मेरिआ ने उत्साह के साथ पूछा—क्या तुम एकदम शुरू करने जा रहे हो।

"हाँ, मैं प्रयत्न करूँगा, यद्यपि वास्तव में—"

मेरिआ ने बात काटकर कहा—तुम भाग्यवान् हो!

नेज कहता गया—पेडेल बड़ा विचित्र आदमी है। वह स्वयं 'कार्य' का काम करता है, तो भी वह प्रतिवाद उसकी हँसी उड़ाया करता है। बाहर से वह मेरे लिए किताबें ले आया है। वह तो जानता है, और भगवान् के लिए तो वह आग और पानी साथ में [illegible] को तैयार रहता है।

मेरिआ ने कहा—वही हाल [illegible] हूँ। मैं [illegible] इसका मतलब है?

नेज ने कुछ न कहा।

मेरिआ ने पूछा—पेडेल किस तरह की किताबें लाता है?

"कोई खास किताब नहीं लाता है। सभी [illegible] [illegible] किताब हैं जो मेरी पोशाक में छुपाई जा सकती हैं।"

"कृपा करके ऐसा न कहो। मैं बहुत पहले से तुमसे पूछने के विचार में हूँ—"

"परन्तु अभी तो बहुत जल्दी है। इसमें कोई हर्ज नहीं यदि तुम केवल अभ्यस्त होना चाहते हो, केवल तुम्हें अभी बाहर नहीं जाना चाहिए। मेरा स्वामी अभी यहाँ मौजूद है। वह इस समय सो रहा है।

नेज ने उत्तर दिया—जब तक आगे काम करने का हुक्म नहीं मिलता तब तक मैं इस पड़ोस में लोगों के मनोभावों का भेद लूँगा।

सुनो! धन की अपेक्षा नेक सलाह अच्छी होती है। यह समझना है। मैं तुम्हारे पास पैम्फलेट देखता हूँ। जहाँ तुम चाहे इन्हें बाँटो। केवल यहाँ कारखाने में न बाँटना।"

"क्यों?"

"पहली बात तो यह है कि तुम यहाँ सुरक्षित नहीं रह सकोगे, दूसरे यह कि मैं मालिक से वादा कर चुका हूँ कि मैं यहाँ इस तरह की कोई बात नहीं करूँगा। तुम देखते ही हो, आखिर यह जगह उसी की है और यह भी है कि यहाँ पहले से ही कुछ किया जा चुका है। लाभ की अपेक्षा तुम ज्यादा हानि ही कर सकते हो। इसके सिवा तुम जो चाहे करो, पर मेरे कारखाने के मजदूरों के बीच में कुछ मत करना।

व्यङ्ग की मुस्कराहट से नेज ने कहा—सावधानी सदा लाभदायक होती है।

सालोमन अपनी स्वाभाविक हँसी हँस पड़ा। उसने कहा—हाँ, प्यारे, यह सदा लाभदायक है; परन्तु मैं क्या देखता हूँ। हम लोग कहाँ हैं? यह उसने मेरिआ को लक्ष्य करके कहा। वह उस समय अपने कमरे के दरवाजे पर आ गई थी। वह बहुत बार की धुली हुई एक सादा पहने थी। उसके कन्धों पर एक पीला रूमाल पड़ा था, और सिर पर लाल रूमाल बँधा था। उसके पीछे [illegible] सुन्दर रही थी। इस सादी पोशाक में वह कम उम्र की लगती थी और बहुत सुन्दर दिखाई देती थी। नेज की अपेक्षा वह अधिक लम्बी लगती थी। मेरिआ का मुँह लाल पड़ गया था। उसने सालोमन से कहा—सोलोमन [illegible], कृपा करके हँसो मत।

"मेरिआ ने आँखें उठाकर कहा—हमारे सम्बन्ध में जो विचार तुमने प्रकट किया है उसका अभ्यास करने का मैं प्रयत्न करूँगी, इसके बाद मैं मरने को तैयार होऊँगी।"

सालोमन खड़ा हो गया। उसने कहा—नहीं, जीना अधिक अच्छा है। यही मुख्य बात है। क्या तुम जानना चाहती हो कि सिपी के यहाँ क्या हो रहा है? तुम्हें पेवेल से केवल संकेत भर कर देना है, बात की बात में वह सारा पता लगा देगा।

मेरिआ को आश्चर्य हुआ। उसने कहा यह कैसा विचित्र आदमी है।

"हाँ, वह विचित्र ही है। और अगर तुम नेज से विवाह करना चाहोगी तो वह उसका भी प्रबन्ध कर देगा, इस सम्बन्ध में मैंने तुमसे कहा भी था। तुमको याद होगा। परन्तु शायद अभी उसकी जरूरत नहीं है।"

"नहीं, अभी नहीं।"

"बहुत अच्छा।" जिस दरवाजे से ये दोनों कमरे अलग होते थे उसके पास जाकर सालोमन ने ताले की जाँच की।

मेरिआ ने पूछा—तुम क्या कर रहे हो?

"क्या यह ठीक बन्द होता है?"

मेरिआ ने धीरे से कहा—हाँ।

सालोमन ने उसकी ओर देखा, परन्तु मेरिआ ने अपनी आँखें नहीं उठाई।

सालोमन ने कहा—अब क्या सिपी के सम्बन्ध में ओछे-पन करने की कोई जरूरत नहीं है?

सालोमन जाने लगा।

"डेरिआ फेडोरिव—।"

"हाँ—।"

"अब तुम आमतौर से ज्यादा खुश रहते हो। तब क्या कारण है कि मुझसे इतना अधिक घृणा करने लगे हो?"

सालोमन ने उसके दोनों मुलायम सफेद छोटे हाथ अपने बड़े हाथों में लेकर कहा—तुम क्यों पूछती हो? तेरा हृदय में इतना अधिक है कि मैं तुमको बहुत अधिक प्यार करता हूँ। मेहरबानी?

यह धार्मिक किताब है और उसने उसे लेने से इनकार किया। दूसरा पढ़ नहीं सकता था, परन्तु उसके मुखपृष्ठ पर चित्र होने से वह उसे लड़के के लिए अपने घर लेता गया। तीसरे से पहले तो आशा हुई, परन्तु अन्त में उसने खूब गालियाँ दीं और किताब भी न ली। चौथे ने किताब ले ली, मुझे बहुत अधिक धन्यवाद दिये, परन्तु मुझे सन्देह है कि मेरी बातें उसकी समझ में आई होंगी। इसके सिवा एक कुत्ते ने मेरे पैर में काट लिया, एक किसान स्त्री ने अपनी झोंपड़ी के दरवाज़े से मुझे चिमटे से धमकाते हुए कहा—सूअर! मास्को के पाजी! तुम लोगों का नाश नहीं होगा। इसके बाद एक सैनिक ने मुझसे चिल्लाकर कहा—हम लोग तुम्हारी चटनी करेंगे। और उसने मेरे ही पैसे से खूब शराब भी उड़ाई।

"और क्या हुआ?"

"और क्या? मेरे पैर में छाला पड़ गया है। मेरा एक बूट खराब हो गया है। इस समय मैं भेड़िये की तरह भूखा हूँ। वोदका के नशे से मेरा सिर चकरा रहा है।"

"इतनी ज्यादा तुमने क्यों पी ली?"

"नहीं, केवल दूसरों के लिए उदाहरण रखने के लिए थोड़ी-सी ली थी। परन्तु मुझे पाँच शराबखानों में जाना पड़ा। मैं इस वोदका का स्वाद नहीं सह सकता। हमारे लोग इसे न मालूम क्यों पीते हैं। यदि किसी को साधारण आदमी बनने के लिए इसका पीना ज़रूरी है तो मैं क्षमा माँगता हूँ।"

"और तुम पर किसी ने सन्देह नहीं किया?"

"शायद एक व्यक्ति को छोड़कर किसी ने सन्देह नहीं किया। क्योंकि मोटा-ताज़ा था, आँखें पीली-पीली थीं। उसने मुझे कुछ कुछ सन्देह की दृष्टि से देखा था। मैंने उसे अपने साथी से यह कहते सुना था कि इस आदमी पर निगाह रखना। इसमें कोई न कोई भेद ज़रूर है। यह अपनी वोदका, देखो, कैसे पी रहा है। शायद उसने मुझे अपनी वोदका मेज़ के नीचे गिरा देने का प्रयत्न करते हुए देख लिया था। किन्तु! मुझ जैसे आदमी के लिए लोगों के सार्वजनिक जीवन में स्थान पाना कठिन ही है।"

उसके आगे अपना सिर झुका दिया और उसका उपदेश सुना। परन्तु जब मैं बोलना शुरू करता हूँ तब मैं एक अपराधी-सा मालूम होता हूँ जो क्षमा की प्रार्थना कर रहा हो। मुझे धर्म-सम्प्रदायवालों में शामिल हो जाना चाहिए, यद्यपि वे वैसे बुद्धिमान् नहीं होते हैं। परन्तु उनमें विश्वास तो जरूर होता है। मेरिआ भी विश्वास करती है। वह टेटी के साथ सबेरे से शाम तक काम करती रहती है, टेटी एक किसान स्त्री है, यहीं रहती है, बड़ी नेक है, और किसी तरह मूर्ख नहीं है। वह कहती है कि हम लोग 'साधारण लोग' बनना चाहते हैं और बड़े सीधे-सादे हैं। इस स्त्री के साथ मेरिआ सबेरे से रात तक काम करती रहती है, मुश्किल से एक क्षण विश्राम करती है। वह इस बात से खुश है कि उसके हाथ लाल और कड़े हो गये हैं और इन नीच कामों में लगी रह कर वह फाँसी पर चढ़ने की प्रतीक्षा कर रही है। उसने जूते पहनना छोड़ देने का भी प्रयत्न किया है, नंगे पैर यहीं गई थी। बड़ी देर तक अपने पैर धोती रही। उसके पैरों में छाले पड़ आये, परन्तु मुस्कराहट से उसका चेहरा दमकता ही रहा, मानो वह कोई खजाना पा गई हो। परन्तु जब मैं उससे अपने मन की बातें कहने का प्रयत्न करता हूँ तब मुझे एक प्रकार की लज्जा मालूम होने लगती है, मानो मैं उस चीज़ पर अत्याचार कर रहा हूँ जो मेरी नहीं है। इसके बाद वह दृष्टि देखता हूँ—बहुत ही अनुरागपूर्ण और दयनीय! मानो वह कहती है—मुझे क्षमा करो, परन्तु याद रखना, यह इतना काफी है! क्या इस संसार में कोई चीज़ और अच्छी बात शेष नहीं है? इसके अलावा मैं यह कि अपने सारे कपड़े दान करके और साधारण लोगों में जाकर प्रचार करें—बस, मैं जाती जाता हूँ।

'मैंने [illegible] कि जो सब कुछ किताबों, [illegible] आदि [illegible] किया है [illegible] करता हूँ। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सालोमन ने कहा—भीतर लिवा लाओ। उसको यहाँ बुला लेने में मेरिआ तुमको बुरा तो न लगेगा?

"बिलकुल नहीं।"

कुछ ही क्षणों में मशूरीना दरवाजे पर आ उपस्थित हुई।

इकतीसवाँ अध्याय

मशूरीना ने पूछा—क्या नेज घर में नहीं है? सालोमन का अपना और देखते जानकर वह उसके पास गई और अपना हाथ फैला दिया। मेरिआ को तिरछी निगाह से देखकर उसने पूछा—सालोमन तुम्हारी कैसी तबीअत है?

सालोमन ने कहा—वह अभी लौटकर आता है। परन्तु यह तो बताओ कि तुम्हें कैसे मालूम हुआ—

मार्क ने बताया था। इसके सिवा शहर के कई लोग पहले से जानते हैं कि वह यहाँ है।

"क्या ऐसी बात है?"

"हाँ, किसी ने भेद प्रगट कर दिया है। इसके सिवा नेज पहचान लिया गया है।"

सालोमन ने धीरे से कहा—इतना भेद खुलने पर भी! उसकी ओर से कहा—अब मैं तुम्हें परिचित कराता हूँ। मिस सिसिलिया, यह मिस मशूरीना है। तुम अब बैठ जाओ।

मशूरीना धीरे से अपना सिर झुकाकर बैठ गई। उसने कहा—सालोमन, मैं नेज के लिए एक चिट्ठी और तुम्हारे लिए एक संदेश लाई हूँ।

"कैसा संदेश? और किसका?"

"एक ऐसे आदमी का, जिसे तुम अच्छी तरह जानते हो।—अच्छा, क्या आप कुछ बीमार हैं?"

"बिलकुल नहीं।"

मारगेमन ने उसे दियासलाई दे दी। इतने में दरवाज़े के एक ओर से एकाएक यह आवाज़ आई—वैसिली फेडोरिच, क्या तुम बाहर आ सकते हो?

"तुम कौन हो? क्या चाहते हो?"

फिर वही आवाज़ हुई—कृपा करके आओ। कुछ नये मजदूर आये हैं। वे कुछ कह रहे हैं। पेवेल यहाँ नहीं है।

मारगेमन अनुमति लेकर बाहर चला गया। मसूरीना ने मेरिआ पर अपनी निगाह जमा दी और उसे इतनी देर तक घूर कर देखा कि मेरिआ को उसका यह ढङ्ग अखरने लगा।

एकाएक अपनी कड़ी आवाज़ में मसूरीना ने पूछा—मुझे क्षमा करना। मैं एक साधारण स्त्री हूँ, बातचीत करने की मुझे तमीज़ नहीं है। क्या तुम वही लड़की हो जो निकी के यहाँ से भाग गई है?

कुछ चकित होकर मेरिआ ने कहा—हाँ।

"क्या नेज के साथ?"

"हाँ।"

"कृपाकर अपना हाथ लाओ।—और मुझे क्षमा करना। तुम ज़रूर अच्छी होगी, क्योंकि वह तुम्हें प्यार करता है।"

मेरिआ ने मसूरीना का हाथ दाब दिया। उसने कहा—क्या तुम उसे बहुत दिन से जानती हो?

"मैं उसे सेंटपीटर्सबर्ग से जानती हूँ। साशा ने भी मुझे बताया है।"

"अरे साशा! क्या तुमको उससे मिले बहुत दिन हुए हैं?"

"नहीं, बहुत दिन नहीं। परन्तु अब वह पकड़ा गया है।"

"क्यों?"

"इसी बात का तो दुःख हुआ है।"

मेरिआ ने आह भरके कहा—मिस मसूरीना, मुझे उसके लिए बड़ा भय लगा है।

"उसको आप भी प्यार करती हैं, यह मैं जान सकती हूँ। मेरा [illegible] [illegible] [illegible]। तुम्हारी बात यह है कि तुम [illegible] [illegible]

काम किसी दूसरे आदमी के साथ कदापि न करती। खूब सावधान रहने को उससे कह देना। और तुम भी खूब सावधान रहना। यहाँ से प्रत्येक आदमी के लिए शीघ्र ही बड़ी जोखिम हो जायगी। जब तक समय है, अच्छा होगा यदि तुम दोनों यहाँ से चले जाओ। नमस्कार।

ज़ोर से दरवाजा खोलकर मसूरोना बाहर चली गई। मेरिआ घबराई हुई कमरे के बीच में खड़ी थी। अन्त में उसने कहा—इसका क्या मतलब है? यह स्त्री मेरी अपेक्षा उसको ज़्यादा प्यार करती है। और एकाएक सालोमन ही क्यों चला गया?

मेरिआ कमरे में एक ओर से दूसरी ओर को आने-जाने लगी। वह भय, नाराज़ी और आश्चर्य के एक विचित्र भाव के प्रवाह में थी। वह नेज के साथ क्यों नहीं गई? सालोमन ने उसे नहीं जाने दिया। परन्तु सालोमन कहाँ है? चारों ओर क्या हो रहा है? निस्सन्देह मसूरोना ने नेज के प्रति अपने प्रेम के कारण उसका पत्र नहीं दिया है। परन्तु वह दूसरों की अवज्ञा कैसे कर सकती है? चिट्ठी में क्या लिखा रहा होगा? जल्दी काम खत्म कर देने का क्या आह्वान होगा? और तब क्या होगा? क्या मार्क को जोखिम है? हम लोग क्या कर रहे हैं? मार्क हम दोनों को सुखी होने के लिए अवसर देता है। वह ऐसा क्यों कर रहा है? क्या यह भी उदारता है—या घृणा है? और क्या हम उस पुलिस मकान से इतनी [illegible] भाग सकते हैं कि डाकुओं की तरह सुरक्षित रहें?

मेरिआ इस तरह सोच रही थी, वह मन ही मन अधिकाधिक क्षोभित हो रही थी। उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी। इस दुष्ट कुरूप स्त्री ने उसे लिखा, सुन्दरी कहा है—[illegible] क्यों नहीं कहा है? नेज अकेला क्यों नहीं गया? [illegible] के साथ क्यों गया? वह तो ऐसा ही जान पड़ता है कि उसे किसी की [illegible] है। और सालोमन के [illegible] बिल्कुल साफ है कि [illegible] हैं।

मेरिआ ऐसे ही विचारों के चक्कर में पड़ी हुई थी। अन्त में खिड़की के पास जाकर [illegible] बैठ गई और [illegible]

न की। भीड़ ने उसके लिए राह कर दी और वह फिर उपदेश करने लगा। वह न दाहने देख रहा था, न बायें। ऐसा जान पड़ता था मानो क्रुद्ध था, साथ ही वह रोता भी था। परन्तु सत्ती पर के उसके प्रयत्न की अपेक्षा यहाँ स्थिति ने भिन्न ही रूप ग्रहण किया। भारी डील-डौल के एक आदमी ने उसके पास आकर उसके कन्धे पर थपथपाया और कहा—बहुत ठीक! परन्तु जरा ठहरो! अच्छे कामों का पुरस्कार मिलना चाहिए। यहाँ भीतर आओ। यहाँ बातें करना ज्यादा अच्छा होगा। उसने नेज को शराबखाने के भीतर खींच लिया। उनके पीछे दूसरे लोग भी भीतर घुस गये।

उस आदमी ने चिल्लाकर कहा—मिखैल, दो पेनीवाला! जो मैं पीता हूँ। मैं एक मित्र का सत्कार करना चाहता हूँ। यह कौन है, यह किस घराने का है और कहाँ से आया है, केवल शैतान जानता होगा। नेज की ओर घूमकर उसे एक मद्यालय भरा हुआ गिलास देकर उसने कहा—यदि हम लोगों के लिए तुम्हारे मन में वास्तव में प्रेम का भाव है तो इसे पी जाओ। एक साथ मिलकर दूसरों ने कहा—हाँ, पी जाओ। मानो नेज के बुखार चढ़ा हो, उसने गिलास ले लिया और यह चिल्लाकर कि बच्चो, यह तुम्हारे नाम पर पीता हूँ, एक साँस में गिलास खाली कर गया। उसने उसे बड़ी साहस के साथ पिया परन्तु उसने मालूम हुआ कि किसी वस्तु ने उसकी अँतड़ियों, उसकी टाँगों को चोट पहुँचाई हो, उसके गले को, उसकी छाती को, उसके पेट को जला दिया हो, और उसकी आँखों में धुआँ भर दिया हो। उसे बड़ी घृणा मालूम हुई। अपने दिल की धड़कन दबाने के लिए वह अपनी पूरी ऊँची आवाज से चिल्लाने लगा। शराबखाने का यह [illegible] [illegible] लोगों से भरा तक भर गया कि वह घूमने लगा। नेज लगातार बराबर चिल्लाता गया। [illegible] लोगों के पीछे [illegible] के साथ मिलाने और [illegible] उँगलियों को चूमने लगा। उस भारी आदमी ने भी उसको इस प्रकार चूमा कि उसकी पसलियाँ टूटने लगीं। दूसरे [illegible] कहा—अगर कोई आदमी तुम्हारे [illegible] भी [illegible] देने का प्रयत्न करेगा तो मैं उसकी गर्दन तोड़ दूँगा। यह कहकर

बाद को पेवेल ने यह सारा हाल सालोमन को बतला दिया। उसने यह बात नहीं छिपाई कि उसने नेज को शराब पीने से नहीं रोका, अन्यथा वह उसे उस झमेले से बाहर न निकाल सकता। दूसरे लोग उसे न जाने देते। उसने कहा—जब नेज बहुत निर्बल मालूम पड़ने लगा तब मैंने उन लोगों से उसे चले जाने देने को कहा। जब मैंने उन्हें एक शिलिंग दिया तब उन्होंने मुझे आने दिया।

सालोमन ने कहा—तुमने बहुत ठीक किया।

नेज जब तक पड़ा सोता रहा, मेरिआ खिड़की के पास बैठी बाग की ओर देखती रही। नेज और पेवेल के आने के पहले मेरिआ को जो क्रोध हुआ था तथा उसके मन में जो बुरे विचार उत्पन्न हुए थे वे उन दोनों के आ जाने पर बिल्कुल गायब हो गये थे। स्वयं नेज के प्रति जरा भी घृणा का भाव उसके मन में न था। पर वह उसके लिए दुखी जरूर थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि नेज पियक्कड़ नहीं है। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसके जागने पर वह उससे क्या कहेगी। उसकी लज्जा दूर करने के लिए उसे प्रेम-भाव से ही बातचीत करनी होगी। उसने अपने मन में कहा—मैं प्रयत्न करूंगी और स्वयं उसी से कहलवाऊंगी कि यह अवस्था कैसे हो गई।

मेरिआ उठ खड़ी हुई। वह कोच के पास गई, जिस पर नेज पड़ा हुआ था। अपना रूमाल निकालकर उसने उसका माथा पोंछ दिया और उसके बाल ठीक कर दिये। जैसे मां अपने [illegible] पर [illegible], वैसे ही उसने भी नेज के साथ व्यवहार किया। परन्तु उसकी ओर देखना उसके लिए दुःखद था, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वह [illegible] [illegible] चली गई। अपने हाथ में कोई काम लेने का उसने [illegible] नहीं किया। वह बैठ गई और उसके मन में तरह तरह के विचार उठने लगे। [illegible] [illegible] [illegible] लगा। उसे मालूम हुआ कि वह किसी बात की प्रतीक्षा कर रही है।

सालोमन का क्या हुआ?

[illegible]

[illegible]

मेज ने ज़ोर से कहा—यदि ऐसी बात है, यदि हम यहां से पुलिस के आने के पहले भाग जायँ—तो मैं समझता हूँ कि यह बुरा काम न होगा यदि हम लोगों को विवाह करना है। हमको फादर जोसिम की अपेक्षा काम कर देनेवाला दूसरा पादरी नहीं मिलेगा।

मेरिआ ने कहा—मैं तैयार हूँ।

मेज ने उसके मन का भाव जानने के लिए उस पर निगाह डाली। उसने अर्द्धव्यङ्ग्य की मुस्कराहट से कहा—कर्त्तव्य-पालन की कैसी भावना है!

मेरिआ ने अपने कन्धे हिलाकर कहा—हमें सालोमन से कहना चाहिए।

मेज ने कहा—हाँ—सालोमन—। परन्तु वह भी तो जोखिम में है। पुलिस उसको भी पकड़ेगी। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि उसने कुछ बातों में भाग भी लिया है और हम लोगों की अपेक्षा ज्यादा जानता है।

मेरिआ ने कहा—इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानती। वह खुद कभी कुछ नहीं बताता है।

मेज ने अपने मन में कहा—मेरी तरह नहीं! यही उसके कहने का मतलब है। उसने कहा—सालोमन!—सालोमन। मेरिआ, क्या तुम जानती हो कि मुझे इस बात से जरा भी दुःख न होगा कि तुम अपना भाग्य सालोमन जैसे आदमी के या स्वयं सालोमन के ही—सदा के लिए जोड़ दो।

मेरिआ ने भीतर घुस जानेवाली दृष्टि से मेज को देखा। अन्त में उसने कहा—यह करने का साहस तुम्हें नहीं है।

“मुझको हक नहीं है! इसका मैं क्या उत्तर दूँ? क्या इसका यह मतलब है कि तुम मुझको प्यार करती हो या मुझको इस प्रश्न को कभी उठाना ही न चाहिए?”

मेरिआ ने दूसरी तरफ देखा—तुम्हें कोई हक नहीं है।

मेज ने उसका हाथ पकड़ लिया। कुछ देर बाद उसने कहा—मेरिआ!

लिए दौड़ा आया। मैंने समझा कि मुझसे श्रीमान् की और उस अभागे आदमी की जिसे आप बचा सकते हैं, सेवा हो जायगी।"

"मैं तुम्हारा बहुत ही कृतज्ञ हूँ।" लिपी ने उसी निर्बल स्वर में कहा। उसने इतने ज़ोर से घंटी बजाई कि उसकी आवाज़ से सारा घर भर गया। अधिक तेज़ स्वर में उसने फिर कहा—मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ, परन्तु मुझे यह तुमको बता देना चाहिए कि जो आदमी अपने पैरों के नीचे सारे कानूनों को रौंद सकता है वह चाहे मनुष्य हो या देव हो और मुझसे उसका सैकड़ों तरह का सम्बन्ध हो, वह मेरी दृष्टि में अभागा है, वह अपराधी है।

एक नौकर शीघ्रता से आ उपस्थित हुआ। उसने कहा—क्या हुक्म है हुज़ूर?

"गाड़ी! चार घोड़ों की गाड़ी इसी क्षण! मैं शहर जाऊँगा। फिलिप और ग्लौरेन भी मेरे साथ जायेंगे।"

नौकर चला गया।

लिपी ने कहा—हाँ शायद, मेरा साला अपराधी है! मैं उसे बचाने के लिए शहर नहीं जा रहा हूँ। अरे नहीं!

"परन्तु हुज़ूर!—"

"मेरे ऐसे ही सिद्धान्त हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ, अपने एतराज़ों से मुझे तंग मत करो।"

लिपी कमरे में इधर से उधर आने-जाने लगा। [illegible] चुप खड़ा रहा। उसने अपने मन में कहा—अरे [illegible]! मैंने सुना था कि तू [illegible] का है, परन्तु तू तो [illegible] है।

[illegible] खुल गया और [illegible] ने कमरे में [illegible] प्रवेश किया। उसके पीछे पीछे [illegible] भी आया। [illegible] ने पूछा—क्या बात है? [illegible] मुझे क्यों हुक्म दिया है? क्या तुम शहर जा रहे हो? कौन [illegible] है?

लिपी [illegible] कहा—[illegible] जा रहा हूँ!

"[illegible]"

"मैंने सुना है कि वह डी० जिले में पकड़ा गया है । ज्यों ही मैंने सुना श्रीमान् को खबर देने दौड़ा आया।

"हाँ, हाँ। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ। परन्तु कैसा पागलपन है! पूरा पागलपन! मिस्टर पैंकलिन, क्या तुम ऐसा नहीं समझते

पैंकलिन ने कहा—बिलकुल पागलपन है। रूसी किसानों को विद्रोह करने को कभी नहीं भड़काया जा सकता।

कैसा पागलपन है! कैसा पागलपन है! कहकर सिपी अपने सिगार के धुएँ की ओर एकाग्र होकर देखने लगा।

पैंकलिन ने विनम्रता के भाव से कहा—हुजूर मैंने अभी कहा था कि मैं सिगार नहीं पीता, परन्तु वह सत्य नहीं था। मैं पीता हूँ और आपके सिगार की सुगन्ध तो बहुत ही अच्छी है।

"क्या?" सिपी ने मानो जागकर पूछा। और पैंकलिन को दूसरी बार माँगने का अवसर न देकर उसने उसे सिगार दिया।

पैंकलिन ने सिगार कृतज्ञता के भाव से ले लिया और उसे बड़ी सावधानी से जलाया। उसने अपने मन में कहा कि यही उपयुक्त अवसर है। परन्तु सिपी उसके मन का भाव समझ गया। उसने लापरवाही के साथ कहा—मुझे याद है, तुमने अपने—उस मित्र का उल्लेख किया था जिसने—मेरी भतीजी के साथ—विवाह किया है। क्या तुम उन लोगों से कभी मिले हो? वे लोग यहाँ से दूर तो नहीं रहते होंगे?

(पैंकलिन ने अपने मन में कहा—शाबाश! सामने आओ!)

"मैं उनसे केवल एक बार मिला हूँ। वे निकट ही—यहाँ से—दूर नहीं रहते हैं।"

"तुम अच्छी तरह समझते हो कि जो कुछ मैंने तुमसे कहा है मैं उनके संबंध में कोई [illegible] नहीं ले सकता—[illegible] मेरे [illegible] [illegible] में [illegible] थे, न तुम्हारे मित्र के भी [illegible] थे। [illegible] [illegible] [illegible] होंगे, [illegible] [illegible] हुई है। [illegible] मैं [illegible] हूँ, वे [illegible] किसी दूसरी [illegible] की [illegible] [illegible] के हैं। [illegible] [illegible] रहा है।

अपनी इच्छा प्रकट कर दी। एडजूटेंट चला गया। उसने मिसी से कहा—किसानों ने तो उसे करीब करीब मार ही डाला था। उन्होंने उसके मुक्के लगा दी थीं और गाड़ी में डालकर उसे यहां ले आये थे। तो भी वह उनसे रत्ती भी नाराज नहीं है। मुझे उसका शान्त भाव देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था। अब तो तुम खुद ही देखोगे।

इस पर कोल्लो ने मार्क के प्रति व्यंग्य किया।

गवर्नर ने अपनी भौंहों के नीचे से उसकी ओर देखकर कहा—मुझे तुमसे कुछ कहना है।

"हां, किस सम्बन्ध में ?"

"मुझे यह सब बिलकुल पसन्द नहीं है—

"क्या पसन्द नहीं है ?"

'तुम उस किसान को जानते हो जो तुम्हारा ऋणी है और जो मेरे पास शिकायत करने आया था।—"

"क्या ?"

"उसने अपने आप फांसी लगा ली है।"

"कब ?"

"कल से अब क्या मालूम है ? परन्तु यह बड़ी बुरी बात है।'

कोल्लो ने बेपरवाही से अपने कन्धे हिला दिये और बड़े नाज के साथ अपनी देह को घुमाकर खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। इसी समय एडजूटेंट मार्क को भीतर ले आया।

गवर्नर ने ठीक कहा था। मार्क असाधारण ढंग से शान्त था। [illegible]

[illegible]

मेरे साले के इस पागलपन के काम के कुछ और भी सहयोगी हैं। उनमें से एक सहयोगी अर्थात् संदिग्ध व्यक्तियों में से एक इस नगर से बहुत दूरी पर नहीं रहता है। एक को तो मैं अपने साथ ही लाया हूँ। उसने धीरे से कहा—वह ड्राइंगरूम में यहीं बैठा है। उसे बुलवाइए।

गवर्नर ने सिपो की ओर आदर के भाव से देखते हुए अपने मन में कहा कि कैसा विलक्षण आदमी है। उसने आज्ञा दी और क्षण भर में पर्कालिन उसके सामने लाया गया।

पर्कालिन ने भीतर आते ही बहुत ही अधिक झुककर गवर्नर का अभिवादन किया, परन्तु उसके अपने आप सीधा खड़ा होने के पहले मार्क की निगाह पड़ जाने पर वह आधा झुका ही खड़ा रहा। मार्क ने उसकी ओर शून्य भाव से देखा, परन्तु वह उसे मुश्किल से पहचान सका। क्योंकि वह अपने ही विचारों के चिन्तन में पड़ा हुआ था।

"और इस सब तुम्हारे सोचने का क्या नतीजा निकला?"

"क्या मैं तुम्हें बता दूं।"

"हाँ, बता दो।"

"मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैं तुम्हारे—उसके—और अपने मार्ग में आड़े आता हूँ।"

"मेरे? उसके? इससे तुम्हारा क्या मतलब है? यह प्यार है यद्यपि तुम कहते हो कि तुम ईर्ष्या नहीं करते।

"मेरिआ, मुझमें दो आदमी निवास करते हैं और वे एक दूसरे को नहीं रहने देना चाहते। अतएव मैंने सोचा है कि यह अच्छा होगा यदि दोनों ही न रहें।"

"दया करके ऐसा मत करो। तुम मुझे और अपने आपको क्या मारना चाहते हो? हमें यहाँ से निकल चलने का उपाय सोचना चाहिए। ये लोग हमें यहाँ शान्ति से नहीं रहने देंगे।"

सेज ने प्रेम के साथ उसका हाथ पकड़ लिया। उसने कहा—मेरिआ, मेरे पास बैठ जाओ। जब तक समय है आओ हम दोनों कामरेडों की भाँति बातें करें। अपना हाथ मुझे दो। हम लोगों के लिए सफाई दे देना अच्छा होगा, यद्यपि लोग कहते हैं कि सफाई देने से मामला और गड़बड़ा जाता है। परन्तु तुम दयालु, बुद्धिमान् और समझदार हो। जो बात मैं स्पष्ट नहीं कर सकता उसको भी तुम समझ जाती हो। आओ, बैठ जाओ।

सेज की आवाज मन्द थी और जब उसने विनम्र भाव से मेरिआ की ओर देखा तब उसकी आँखों में प्रेम का भाव विचित्र ढंग से झलक रहा था।

मेरिआ तुरन्त उसके पास बैठ गई और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

सेज ने कहा—पियारी धन्यवाद! मैं तुम्हारे साथ अधिक प्रतीक्षा नहीं करूँगा। [illegible]

अस्थिर होकर मेरिआ ने कहा—मैं समझती हूँ कि तुम अतिशयोक्ति कर रहे हो। क्या हम एक दूसरे से प्रेम नहीं करते?

नेज़ ने गहरी सांस ली। उसने कहा—मेरिआ—मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ—तुम मुझ पर दया करती हो और हम दोनों का एक दूसरे की ईमानदारी पर पूरा विश्वास है—यही हमारी स्थिति है। परन्तु हम दोनों में प्रेम नहीं है।

"चुप रहो! तुम क्या कह रहे हो? हम दोनों के लिए शायद आज पुलिस आवे—हम लोगों को एक साथ चलना चाहिए, अलग नहीं होना चाहिए।—"

"सालोमा की सलाह के अनुसार हमें विवाह करने के लिए फादर जोसिफ को बुलाना चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुम हमारी शादी को केवल एक प्रकार का पासपोर्ट जैसा समझती हो—पुलिस की कठिनाइयों से बचने का एक साधन भर उसे समझती हो—परन्तु तो भी यह किसी हद तक हम दोनों को बांध देगी, हमारे एक साथ रहने आदि की आवश्यकता पैदा कर देगी। इसके सिवा वह एक साथ रहने की कामना

[illegible] सकती हूँ। इसके सिवा उन्होंने घोडो से अनुमान किया होगा। तुम्हारे आने की सूचना मैंने अपने भतीजे को कर दी है। तुम्हारे साथ पैदल जायगा। वही गवाह होगा।

नेज ने पूछा—और तुम—और तुम? क्या तुम नही चलोगे? मैं समझता हूँ कि तुम कहाँ जा रहे हो? उसने अपनी आँखो से उसके बूटों की ओर इशारा किया।

"अरे! इन्हें मैंने इसलिए पहना है—कि बाहर शीत है।"

"क्या तुम हम लोगो के लिए पकडे जाओगे?"

"मैं तो ऐसा नहीं समझता—खैर, यह मेरी बात है। मैं समझता [illegible] अच्छा तुम एक घण्टे में तैयार हो जाओ। मेरिआ तुमसे [illegible] मिलना चाहती है। उसने तुम्हारे लिए कुछ तैयार किया है।

"मैं खुद उससे मिलना चाहती थी"—यह कहकर [illegible] दरवाजे की ओर घूम पड़ी।

नेज के चेहरे पर डर और निराशा का एक विचित्र [illegible] आ गया। उसने नम्रतापूर्वक स्वर में कहा—मेरिआ, क्या तुम [illegible]

मेरिआ निश्चल खड़ी हो गई। उसने कहा—मैं [illegible] लौटी आती हूँ। बाँधने-बूँधने में मुझे देर नहीं लगेगी।

"मेरिआ, यहाँ मेरे समीप आओ—।"

"हाँ, परन्तु किसलिए?"

"मैं एक बार तुम्हें फिर देख लेना चाहता हूँ।" उसने उसे ध्यान [illegible] देखा। उसने कहा—नमस्कार! नमस्कार मेरिआ!

मेरिआ चकित हो गई।

"क्यों—कैसी मूर्खता की मैं बातें कर रहा हूँ! क्या तुम [illegible] और आओगी?"

"[illegible]"

[illegible]

[illegible]

मारकर उन्हें एक कोने में कर दिया। फिर उसने अपने कपड़े पहन लिये। तब वह तीन पैरवाली छोटी मेज के पास गया और उसके ड्राअर में दो मोहरबन्द चिट्ठियाँ और कुछ दूसरी चीजें निकालीं, जिन्हें उसने अपनी जेब में ठूँस लिया। चिट्ठियाँ उस मेज पर छोड़ दीं। इसके बाद वह स्टोव के पास जा बैठा और उसका छोटा दरवाजा खोला। भीतर राख की ढेरी लगी हुई थी। नेज के कागजों का, उसकी कविता की पवित्र किताब का यही अवशेष था—रात में उसने इन सबको जला दिया था। स्टोव के एक ओर मेरिआ का चित्र जो उसको मार्क ने दिया था, पड़ा हुआ था। उसको जला देने का साहस उसे नहीं हुआ था। उसने उसे सावधानी से निकाल लिया और उन दोनों चिट्ठियों के पास ही रख दिया।

इसके बाद नेज ने शीघ्रता से सिर पर टोपी रक्खी और वह दरवाजे की ओर चला। परन्तु एकाएक वह ठहर गया, और घूम कर भीतर के कमरे में चला गया। वहाँ क्षण भर तक चुपचाप खड़ा रह कर उसने इधर-उधर देखा। तब मेरिआ के बिस्तरे के पास जाकर वह नतजानु हुआ और आह खींचकर उसके सिरहाने को चूम लिया। वह फिर खड़ा, सिर पर जल्दी टोपी रक्खी और भाग निकला। बराम-

बीच में वह दम घुटनेवाली सिसकी भरता था। प्राण अभी थे। मैरिआ और माल्नोमन उसके इधर-उधर खड़े थे। वे दोनों भी उसी की तरह पीले पड़ गये थे। वे दोनों बहुत दुखी थे स्तम्भित हो गये थे [illegible] कर मैरिआ—परन्तु वे चकित नहीं थे।

माल्नोमन ने डाक्टर को बुला भेजा, यद्यपि कोई आशा नहीं थी। [illegible] ने ठंडे पानी और सिरके से नेज का सिर धोया और छाती में [illegible] पर जो अब खून नहीं दे रहा था, ठंडा मुर्दा बादल रख दिया। [illegible] के गले की घरघराहट बन्द हो गई और वह अब [illegible] लगा।

(उसने मुकदमें से भागने का प्रयत्न नहीं किया, किन्तु जब जरूरत पड़ी तब आकर उपस्थित हो गया)। मेरिआ का तो नाम ही नहीं लिया गया। पैकल्नि साफ निकल गया, उसकी ओर अधिकारियों का ध्यान ही नहीं गया।

डेढ़ वर्ष बीत गये—सन् १८७० के जाड़े की बात है। सेंटपीटर्सबर्ग में—उसी सेंटपीटर्सबर्ग में जहाँ सिपी जो अब प्रिवी-कौंसिलर हो गया था, बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य शुरू करने को था, जहाँ उसकी स्त्री कला और संगीत को प्रोत्साहन दे रही थी और दातव्य भोजनालय खोला था, जहाँ कोल्की मन्त्रिमंडल का एक बहुत ही होनहार सदस्य समझा जाता था—एक छोटा-सा आदमी वेसिली टापू की एक गली में लँगड़ाता हुआ जा रहा था। हमारे पुराने मित्र पैकल्निन के सिवा यह और कोई नहीं था। उसमें बहुत परिवर्तन हो गया था। उसकी टोपी के नीचे कानों के पास कुछ बाल सफेद दिखाई दे रहे थे। एक लम्बी सुदृढ़ स्त्री काले रंग का कोट पहने उसकी ओर आ रही थी। पैकल्निन ने उसकी ओर उपेक्षा से देखा और उसके पास से निकल गया। एकाएक वह खड़ा हो गया और शीघ्रता से पीछे लौट कर उसने उस स्त्री को जा पकड़ा। उसकी टोपी के नीचे झाँक कर उसने धीरे से कहा—मशूरीना!

उस स्त्री ने उसकी ओर घमण्ड के साथ देखा और बिना कुछ कहे दूसरी तरफ चली गई।

उसके साथ साथ चलते हुए पैकल्निन ने कहा—प्यारी मशूरीना, मैं तुमको [illegible]। डरो मत, मैं पुलिस भेद नहीं खोलूँगा। तुमसे मिलकर मैं बहुत खुश हुआ हूँ। मैं पैकल्निन हूँ, तुम्हारा मित्र—लिटिल पैकल्निन हूँ। मेरे साथ घर आओ। मैं यहीं पास ही रहता हूँ। चलो।

[illegible] प्रकार से विशुद्ध रूसी उच्चारण में उस स्त्री ने कहा—मैं [illegible] कि [illegible] हूँ।

'[illegible]! बिलकुल [illegible]' [illegible] और [illegible]

[illegible]—'

[illegible]

[illegible] हूँ।

"और क्या तुम ओन्टो के बारे में भी जानती हो?"

मसूरीना ने केवल अपना सिर हिला दिया। वह चाहती थी कि वह मेज़की ही बातें करता रहे, परन्तु वह उससे खुद नहीं पूछ सकी। परन्तु वह उसके मन का भाव समझ गया। उसने कहा—मैंने सुना है कि उसने अपनी चिट्ठी में तुम्हारा उल्लेख किया है। क्या यह सच है?

कुछ ठहर कर मसूरीना ने कहा—हाँ।

"वैसा श्रेष्ठ वह था! परन्तु वह ठीक रास्ते पर नहीं पड़ा। वह क्रान्तिकारी होने में उतना ही उपयुक्त था जितना कि मैं हूँ। क्या तुम जानती हो कि वास्तव में वह क्या था। यथार्थवादी था। क्या तुमने मेरी बात समझी?"

मसूरीना ने उसकी ओर शीघ्रता से देखा। उसने न तो उसकी बात समझी थी, न समझना चाहती थी। यह उसे छिछोरी मालूम हुई कि वह अपनी तुलना उससे करे। उसने अपने मन में कहा—उसे डींग मारने दो। यद्यपि वह डींग नहीं मार रहा था, किन्तु एक प्रकार से अपने विचारों के अनुसार खुद ही अनुताप कर रहा था।

उसने पूछा—और सालोमन क्या कर रहा है?

पेवलिन ने कहा—सालोमन! वह बड़ा चतुर है। यहाँ भी [illegible] में रहा। उसने उन पुराने खानदान का [illegible] छोड़ दिया और वहाँ से [illegible] को अपने साथ लिवा ले गया। वहाँ पेवेल नाम का एक आदमी था, जो कुछ कर सकता था [illegible] उसे भी अपने साथ लेता गया। [illegible] हो गया है। [illegible] अनुसार [illegible] रहा है।

साम्यवादी परीक्षण किया है। परन्तु ओम्स्ट्रो ने बाधा देकर कहा—इस सबसे क्या लाभ है? बाद को सब कुछ बदलना होगा।

फिर राजनैतिक बातें होने लगीं। मन की रहस्यपूर्ण पीड़ा नेज को फिर उद्विग्न करने लगी। और जितना ही वह उग्र पड़ती, उतना ही नेज अधिक स्पष्ट और ज़ोर-ज़ोर अपनी बात कहता। उसने एक गिलास बियर शराब ली थी, परन्तु बीच-बीच में उसे ऐसा जान पड़ता कि वह बिलकुल उन्मत्त है। उसका सिर घूम रहा था और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर धड़क रहा था।

आख़िर को जब वाद-विवाद चार बजे तड़के समाप्ति पर आया और वे सब सोते हुए नौकरों के पास से होकर अपने अपने कमरे में गये तब नेज बिस्तर पर जाने के पहले देर तक चुपचाप खड़ा रहा और सीधा अपने सामने ध्यान से देखता रहा। जिस अभिमानपूर्ण और हृदय हिलानेवाले स्वर में मार्क ने अपनी बात कही थी उसे सोचकर नेज आश्चर्य-चकित हो गया। उसके अभिमान को ठेस पहुँची होगी, उसे कष्ट हुआ होगा, परन्तु जिसे वह सत्य समझता है उसके लिए उसने व्यक्तिगत दुःखों को शान के साथ भुला दिया है। नेज ने अपने मन में कहा—उसकी योग्यता परिमित है, परन्तु जैसा मैं स्वयं अनुभव करता हूँ उसकी अपेक्षा उसके समान होना क्या हज़ारगुना अच्छा न होगा। अपने इस पतन के प्रति वह क्षुब्ध रुष्ट हो उठा। उसने अपने मन में कहा—ऐसा मैं क्या सोचता हूँ? क्या मैं आत्मोत्सर्ग करने के योग्य नहीं हूँ। महोदयो और तुम पैगम्बरिन भी ठहरो! मैं तुम सबको दिखला दूँगा, यद्यपि मैं सौन्दर्य-प्रेमी हूँ और पद्य-रचना करता हूँ।

क्रोध की मुद्रा से नेज ने अपने सिर के बाल पीछे को मोड़े, दाँत पीसे और जल्दी-जल्दी कपड़े उतारकर वह उछला और झट बिस्तरे पर जा कूदा।

दरवाज़े के दूसरी ओर से मजूर्शना की आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा—रात का अभिवादन है। मैं तुम्हारे पड़ोस में ही हूँ।

नेज ने भी उत्तर में अभिवादन किया। उसे याद आ गया

अतएव नेज उनसे कुछ न कह सका। जब वह अपनी चाय पी चुका तब टोपी उठाकर सनोवर के जंगल की ओर चल पड़ा। राह में उसकी कुछ किसानों से भेंट हो गई। वे गाड़ी में खाद लाद रहे थे। पहले वे मार्क के खेतों पर काम करनेवाले मजदूर थे। वह उनसे बातें करने लगा। उन्होंने अपने स्वामी को दयावान् बतलाया और यह भविष्यवाणी की कि वह तबाह हो जायगा, क्योंकि अपने पूर्वजों की तरह काम न करके मनमानी करता है। उन्होंने उससे कहा—वह इतना अधिक बुद्धिमान् है कि तुम उसकी बात नहीं समझ सकोगे, चाहे जितना भी प्रयत्न करो। परन्तु वह है बड़ा भला आदमी। कुछ ही आगे जाने पर नेज की मार्क से भेंट हो गई।

मार्क को मजदूरों का सारा झुण्ड घेरे हुए खड़ा था। कोई भी यह बात दूर से जान सकता था कि वह उन्हें कोई बात अपनी शक्ति भर समझाने का प्रयत्न कर रहा है, परन्तु एकाएक निराशा में उसने अपने दोनों हाथ ऊपर को उछाल दिये, मानो उसका प्रयत्न व्यर्थ था, वे समझ नहीं रहे थे। उसका कार्याधिकारी जो छोटे कद और अल्प दृष्टि का युवक था और जिसमें अधिकारी होने के चिह्न या वृद्धता का अभाव था, उसके साथ साथ चल रहा था और 'यही बात है हुजूर' कहता जा रहा था। उसके ढंग से मार्क मन ही मन रुष्ट हो रहा था, क्योंकि वह उससे स्वाधीन विचार की आशा करता था। नेज मार्क के पास जा पहुँचा और उसके चेहरे पर अपनी ही जैसी आश्चर्यान्विता की घबराहट देखकर आश्चर्यान्वित हो गया। एक-दूसरे से अभिवादन करने के बाद मार्क पिछली रात के मसलों पर—भावी शान्ति पर फिर बात-चीत करने लगा (परन्तु इस बार अधिक संक्षेप के साथ)। वह पसीने से लथपथ था और उस पर धूल चढ़ी हुई थी। उसके कपड़ों पर कटेरों की चिप्पियाँ पड़ी हुई थीं और हरी-हरी काई लगी हुई थी। मजदूर चुपचाप खड़े हुए थे, आधे डरे हुए और आधे प्रसन्न। नेज ने मार्क के चेहरे की ओर देखा और आँखों का यह स्पन्दन कि इन सबमें क्या लाभ है, बाद को यह बतलाता हुआ—[illegible]

हुआ जिस पर वह पिछली रात आया था। इस बार उसमें दो ही घोड़े जुते थे।

जलपान के समय मार्क ने बहुत कम बात चीत की, खाया भी उसने कुछ नहीं। वह कठिनाई से साँस लेता था। 'काज' के सम्बन्ध में उसने कुछ कड़ी बातें कही थीं।

मशूरीना ने नेज से कहा शहर तक क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ? मुझे वहाँ कुछ खरीदना है। वहाँ से मैं पैदल लौट आऊँगी या यदि जरूरत होगी तो किसी किसान की गाड़ी पर सवार होकर लौट आऊँगी।

मार्क उन्हें दरवाजे तक पहुँचाने आया। उसने कहा—मैं फिर शीघ्र ही तुमको बुलाऊँगा (एकाएक वह काँप उठा था परन्तु शीघ्र ही उसने अपने को सँभाल लिया), क्योंकि हमें सब बातें निश्चय के साथ ठीक करनी हैं। सालोमन को भी आना होगा। मैं केवल वेसीली के पत्र की प्रतीक्षा में हूँ। और ज्यों ही उसका पत्र आ गया, प्रारम्भ कर देने में कोई बाधा न होगी, क्योंकि जनता (वही जनता जो भाग लेना शब्द का अर्थ नहीं समझ सकी) अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती।

नेज ने पूछा—अच्छा, उन चिट्ठियों का हाल तो बताओ जो तुम मुझे दिखाना चाहते थे। उस आदमी का क्या नाम है? क्या किसलिजो?

"बाद को तुमको वे चिट्ठियाँ दिखाऊँगा। हम यह सब एक ही साथ कर सकते हैं।"

गाड़ी रवाना हुई।

"अपने को तैयार रखना।" दरवाजे की सीढ़ी पर खड़े हुए मार्क की आवाज़ सुनाई दी। उसके पास ही दाएँ सिपाही का बुड्ढा नौकर खड़ा था, जिसके चेहरे पर सदा निराशापूर्ण उदासी छायी रहती थी, जो अपनी झुकी हुई पीठ को सीधा ताने रहता था, जिसे पास का कहा हुआ एक शब्द तक सुनाई नहीं देता था और जो एक आदर्श नौकर था।

में आये थे उन्हें यह व्यवस्थित करने को इच्छुक था। भोजन के समय येलेन ने उनकी ओर कई बार ध्यान से देखा था, परन्तु उससे बातें करने का मौका उसे नहीं मिला। मेन्शिआ ने अपनी जिस अचानक की उमंग से उसे घबरा दिया था उसके लिए वह पछता रही थी और ऐसा मालूम होता था कि वह उससे दूर रहना चाहती है। नेज ने अपने मित्र सोलिन को चिट्ठी लिखने के लिए कलम उठा ली। परन्तु वह नहीं जानता था कि उसे क्या लिखा जाय। उसके मन में इतने अधिक परस्परविरोधी विचार उठ रहे थे कि उन्हें सुलझाने और दूसरे दिन के लिए उठा रखने का प्रयत्न उसने नहीं किया।

भोजन के अतिथियों में कोल्गो भी था। इस भले आदमी ने इस अवसर पर जैसी ढिठाई और गँवारू घृणा प्रकट की, वैसी और पहले कभी न की थी। परन्तु नेज ने उपेक्षा ही की। वह एक प्रकार के ऐसे कुहरे से घिरा हुआ था जो परतदार परदे की तरह उसके सामने टँगा-सा मालूम देता था और जो उसे शेष संसार से अलग किये हुए था। और इस परदे के भीतर से उसे केवल तीन चेहरे—औरतों के चेहरे—मालूम पड़ते थे और ये तीनों उसे ध्यान से घूर रहे थे। ये औरतें मैडम लिपो, मनूरीना और मेन्शिआ थीं। इसका क्या मतलब था? यही तीन क्यों थीं? उससे क्या चाहती थीं?

मेज जल्दी ही सो जाने का उपक्रम करने लगा, परन्तु वह सो न सका। अनिवार्य मृत्यु-सम्बन्धी दुःखदायी विचार उसके मन में चक्कर लगा रहे थे। इन विचारों से वह परिचित था। अनेक बार उसने उन्हें कभी इस रास्ते और कभी उस रास्ते मोड़ा था। पहले सर्वनाश की सम्भावना पर वह काँप उठा, फिर उसका स्वागत किया, उससे आनन्द लाभ किया। एकाएक एक विशेष प्रकार की परिचित उत्तेजना ने उस पर अपना अधिकार आ जमाया। थोड़ी देर तक वह प्रसन्न बना रहा, फिर मेज के पास आ बैठा और बिना कोई संशोधन किये हुए उसने अपनी पवित्र कापी में एक कविता लिखी। उस कविता का शीर्षक अधोलिखित प्रकार था—

में बहुत अधिक चतुरता तथा प्रेम-भाव से पूछने लगी । उसने अपने भाई के प्रति सच्चा अनुराग प्रकट किया, उसने जो कुछ कहा उससे कोई भी जान सकता था कि मैरिआ ने उसके भाई पर जो प्रभाव डाला है वह उससे छिपा नहीं था । वह कुछ निराश-सी जान पड़ी, परन्तु यह बिलकुल स्पष्ट नहीं था कि इस निराशा का कारण यह बात थी कि मैरिआ ने उसके भाई के भावों का परिवर्तन नहीं किया था या यह कि उसके भाई ने एक ऐसी लड़की को पसन्द किया जो बिलकुल ही उसके अनुरूप नहीं थी। परन्तु अधिकांश में उसने नेज को नरम करने का, अपनी ओर उसका विश्वास पैदा करने का, उसकी झेंप दूर करने का ही प्रयत्न किया, यहाँ तक कि उसने उसे अपने सम्बन्ध में झूठा भाव रखने के लिए थोड़ा-बहुत उलहना भी दिया।

नेज ने उसकी बातें ध्यान से सुनीं, उसके हाथों, उसके कंधों को देखा और बीच बीच में उसके गुलाबी ओठों और घनी लटों पर भी दृष्टि डाली । पहले तो उसने संक्षेप में ही उत्तर दिया, उसने अपने गले और छाती पर एक विचित्र प्रकार का बोझ अनुभव किया, परन्तु धीरे धीरे इस उत्तेजना ने गड़बड़ करनेवाली उत्तेजना को राह दे दी, परन्तु उसका यह परिवर्तित भाव माधुर्य से शून्य नहीं था। उसे आश्चर्य हुआ कि एक ऐसी कुलीन घराने की स्त्री उसके प्रति इस प्रकार अनुराग प्रकट करे, और केवल अनुराग ही न प्रकट करे, किन्तु कुछ कुछ हँसी-दिल्लगी तक करे। उसे आश्चर्य तो हुआ पर वह उसका उद्देश्य न जान सका । सच तो यह है कि उसे उसके उद्देश्य की परवा भी न थी । मैडम किसी कोल्ग्या के सम्बन्ध में बातें करती रही और नेज को विश्वास दिलाया कि वह उससे केवल इसलिए घनिष्ठ व्यवहार रखना चाहती है कि वह उससे अपने पुत्र के सम्बन्ध में गम्भीरता से बातें कर सके, अपने बच्चों के शिक्षा के सम्बन्ध में उसके विचार जान सके । यह बात उसे कुछ विचित्र मालूम हुई होगी कि ऐसी इच्छा उसे इतना उत्सुक क्यों हुई । परन्तु उसका स्वार्थ बस न थी । वह सौन्दर्य के प्रभाव में आ गई थी और वह उस विद्रोही युवक को जीतना चाहती थी, उसे अपने पैरों पर ला गिराना चाहती थी ।

देने लगती हैं। ये पक्के इरादे की होती हैं और उनके आकर्षण का कारण बहुत कुछ उनका यह इरादा ही होता है। अपने को सँभाले रहना किसी व्यक्ति के लिए उस समय कठिन हो जाता है जब इन शान्त प्राणियों में से किसी एक में दयालुता की रहस्यपूर्ण लौ मानो अनिच्छा से प्रज्वलित होनी शुरू होती है। वह उसके हृदय के पिघलने के समय की प्रतीक्षा करता है, परन्तु लौ की किरणें ऊपर ही ऊपर रह जाती हैं और उसे उसका पिघलना कभी नहीं दिखाई देता।

कामुकता का भाव व्यक्त करने में मैडम सिपी को बहुत कम खर्च करना पड़ा। वह अच्छी तरह जानती थी कि यह सब करने में उसे किसी बात का डर नहीं है। परन्तु दूसरे की आँखों का प्रकाश बाहर निकाल लेना, उन्हें फिर चमकते देखना, दूसरे के कपोलों को काँपना और भय से रक्ताभ होते देखना, दूसरे की काँपती और लड़खड़ाती हुई आवाज सुनना, दूसरे की आत्मा को उत्पीड़ित करना, यह सब उसकी आत्मा के लिए कैसे आनन्द की बात थी! अधिक रात बीतने पर यह सब उसके लिए कैसे सुख की बात थी जब कि वह शान्त नींद के लिए इन सब उत्तेजित शब्दों, दृष्टियों और आहों को याद करने के लिए अपने बर्फ से सफेद बिस्तर पर पड़ती थी।

ऐसी ही मैडम सिपी ने सेज से बातचीत की और उसे अपने पैरों पर ला गिराने के लिए सब कुछ किया। उसने उसे अपने पास आने दिया, अपने आपको उसके सामने भले प्रकार प्रकट कर दिया और मधुर कुतूहल तथा अर्द्धमातृत्व के प्रेम से उसने उस सुन्दर, मनोहर, कठोर प्रकाशमी को अपने प्रति चुपचाप विनम्र होते देखा। कुछ दिन, एक घंटा, एक मिनट बाद ही यह सब रक्त-दीप हुआ हो जायगा और उसका चिह्न तक न रह जायगा, परन्तु उस समय के लिए यह सब कुछ, प्रमत्तात्मक मग्न कल्पनातीत, इसी सब कि कुछ सुन्दर भी था। उसकी उत्कंठा को आप भूखकर और यह जान कर कि ऐसी दिखावटी आदर्शवादियों के बीच में इस प्रकार का सुन्दरी व्यक्ति पसन्द करता है, वह उसकी लड़की और उसके परिवार के सम्बन्ध में पूछताछ करने लगी। परन्तु उसके मुँह पर उत्तर से अनुमान करके

नेज कहने लगा—परन्तु कभी कभी मुझे मालूम होता है—कि हम दोनों के बीच—

मेरिआ ने बात काटकर कहा—परन्तु तुम मुश्किल से मुझे जानते हो। खैर, कुछ ठहरो। कदाचित् कल। इस समय मुझे जाना है—अपनी शिक्षिका के पास। कल तक के लिए नमस्कार।

नेज ने एक या दो कदम आगे बढ़ाये, परन्तु एकाएक वह लौट पड़ा। उसने कहा—अच्छा, बन्द होने के पहले क्या तुम्हारे साथ तुम्हारा स्कूल देखने चलूँ? मैं देखना चाहता हूँ कि तुम वहाँ क्या करती हो।

"खुशी के साथ—परन्तु यह स्कूल की बात नहीं है, जिसके सम्बन्ध में मैं तुमसे बातचीत करना चाहती हूँ।"

"तब वह कौन बात है?"

मेरिआ ने कहा—कल बताऊँगी।

परन्तु मेरिआ ने दूसरे दिन की प्रतीक्षा नहीं की और उन दोनों में उसी सन्ध्या को बातचीत हो गई। और यह बातचीत कोठी से कुछ ही दूर निम्बू के कुञ्ज में हुई।

तेरहवाँ अध्याय

मेरिआ पहले नेज के पास आई। उसने कहा—ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम पैलेन पर बिल्कुल आसक्त हो गये हो।

मेरिआ उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए बिना ही वहाँ से चल पड़ी। नेज भी उसके बगल में चलने लगा। उसने कहा—तुम ऐसा क्यों कहती हो?

"इस पर बात और क्या है? ऐसी दशा में उसने आज भारी भूल की है। मैं अनुमान कर सकती हूँ कि वह [illegible] होगी और उसने अपने साथ कई [illegible] में [illegible] किया होगा।"

चचा सिपी ने जो मेरी मा के भाई हैं, मेरा भरण-पोषण किया। मैं उनकी आश्रिता हूँ। वे और उनकी स्त्री मेरी भलाई करनेवाले हैं। उनकी इस भलाई का बदला मैं तुच्छ कृतघ्नता से देती हूँ, क्योंकि मेरा हृदय अकृतज्ञ है। परन्तु दान की रोटी कड़वी होती है, और मैं अपमानपूर्ण नम्रतायें नहीं सह सकती—संरक्षण का व्यवहार नहीं बर्दाश्त कर सकती। मैं यह सब छिपा भी नहीं सकती और जब मुझे नित्य ही चोट पहुँचाई जाती है तब मैं रोती भर नहीं हूँ, क्योंकि न रोने का मुझे अभिमान है।

जब मेरिआ ये टूटे-फूटे वाक्य कह रही थी तब वह जल्दी-जल्दी चल रही थी। एकाएक वह खड़ी हो गई। उसने कहा—क्या तुम जानते हो कि मेरी चाची मुझसे छुट्टी पा जाने के लिए मेरा विवाह जघन्य कोल्लो से करना चाहती है? वह मेरे विचार जानती है। उसकी दृष्टि में तो मैं क़रीब क़रीब निहिलिस्ट हूँ और वह! यह सच है कि वह मेरी ज़रा भी परवा नहीं करता। मैं काफ़ी सुन्दर नहीं हूँ, परन्तु मुझको बेच देना सम्भव है। और यह काम भी दान ही समझा जायगा।

"तुम क्यों नहीं"—नेज़ कहने लगा, परन्तु रुक गया।

मेरिआ ने क्षण भर के लिए उसकी ओर देखा। उसने कहा—तुम मुझसे पूछना चाहते हो कि मैंने तब मार्कं को क्यों नहीं स्वीकार किया। क्या ऐसा नहीं है? मैं क्या कर सकती थी। वह सुजन है, परन्तु इसमें मेरा क्या दोष है कि मैं उसको प्यार ही नहीं करती।

मेरिआ आगे बढ़ती चली गई। वह इस अयाचित स्वीकारोक्ति के सम्बन्ध में मानो कुछ कहने का उसे अवसर ही नहीं देना चाहती थी।

वे दोनों कुंज के सिरे तक चले गये। मेरिआ तुरन्त एक तंग मार्ग पर घूम पड़ी। यह मार्ग देवदार के सघन कुंज को गया था। नेज़ उसके पीछे हो गया। वह दोहरे आश्चर्य के प्रभाव में था। पहले इस बात ने तो चकित किया कि यह लजीली लड़की एकाएक उससे इतना अधिक खुल गई। दूसरे, वह उसकी इस स्पष्टवादिता

अन्त में नेज ने कहा—तुम मुझे अछूत क्यों समझती हो? क्या तुम मेरी बाबत कुछ जानती हो?

"हाँ।"

"क्या जानती हो? क्या तुमसे किसी ने मेरे सम्बन्ध में कुछ कहा-सुना है?"

"मैं तुम्हारे जन्म का हाल जानती हूँ।"

"किसने तुम्हें बताया है?"

"खुद येलेन ने बताया है, जिसके तुम प्रशंसक हो। उसने जान-बूझकर मुझे सुनाकर कहा है। तुम्हारे जीवन में एक बड़ी सुन्दर घटना हुई है। वह उस घटना से सहानुभूति नहीं प्रकट कर रही थी, किन्तु एक ऊँचे विचार के आदमी की तरह उसने ईर्ष्या से उसकी चर्चा की थी। तुम्हें आश्चर्य न करना चाहिए। उसी तरह वह प्रत्येक आगन्तुक से कहती है कि मेरे बाप को घूँस लेने के अपराध पर सैबेरिया को देश-निकाला हुआ था। वह अपने को चाहे जितना स्वर्ग-परी समझे, परन्तु वह केवल डंक मारनेवाली तथा दूसरों को तंग करनेवाली है। तुम्हारी 'मडोना' ऐसी ही है।"

"वह मुख्य करके मेरी ही क्यों है?"

मेरिया घूम पड़ी, वह नीचे से मार्ग पर चलने लगी। उसने कहा—इसलिए कि तुम्हारी उसकी इतनी देर तक बातचीत हुई है।

नेज बोला—मैंने तो मुश्किल से एक-दो शब्द कहे होंगे। सारा समय वही बातें करती रही है।

मेरिया चुपचाप चली गई। मार्ग के मोड़ से शुरू का [illegible] था। उसके सामने एक छोटा-सा घास का मैदान था। उसके बीच में एक देवदार का वृक्ष खड़ा था, जिसके नीचे चारों ओर एक गोल चबूतरा बना हुआ था। मेरिया उस पर बैठ गई, नेज भी उसके बगल में बैठ गया। उसके सिर पर छोटी छोटी हरी पत्तियों से आच्छादित लटकती हुई लम्बी पतली डालें धीरे-धीरे हिल रही थीं। सौंधी सुगन्ध से वह स्थान भरा हुआ था।

मेरिया कहने लगी—जो तुम इतना [illegible] जानते हो कि मैं तुम्हें

मुझ पर हँस सकते हो। यदि मैं असुखी हूँ तो यह मेरे अपने दुःखों का नतीजा नहीं है। कभी कभी मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं सारे रूस के अभागों, ग़रीब और पीड़ितों के लिए दुखी हूँ। नहीं, ठीक ऐसा भी नहीं है। मुझे कष्ट है, क्योंकि मैं उनके लिए नाराज़ रहती हूँ, उनके लिए विद्रोह करती हूँ, उनके लिए मैं तो जान तक देने को तैयार हूँ। मैं इसलिए असुखी हूँ कि मैं एक 'जवान स्त्री' हूँ और कोई भी काम करने के योग्य नहीं हूँ। जब मेरा पिता सैबेरिया भेजा गया था और मैं मां के साथ मास्को में रह गई थी तब मैंने उसके पास जाने की इच्छा की थी। यह इसलिए नहीं कि मैं उसका बहुत अधिक प्यार या आदर करती थी, किन्तु मैं अपनी आँखों से देखना चाहती थी कि देश-निकाले के क़ैदी कैसे जीवन-यापन करते हैं। बाद को जब टूटा शरीर और मन लेकर वह घर आया और अपने को काम में लगाये रखना शुरू किया तब यह सब देखना भयङ्कर था। अच्छा हुआ कि वह मर गया, मेरी बेचारी मां भी मर गई। दुर्भाग्य से मैं बच रही। किसलिए? केवल यह अनुभव करने के लिए कि मेरा स्वभाव ख़राब है और मैं कृतघ्न हूँ, मेरे लिए कहीं शान्ति नहीं है और मैं किसी का कोई काम नहीं कर सकती।

मेरिआ ने अपना मुँह घुमा लिया—उसका हाथ अपनी जगह से निकल गया। नेज को उसके लिए दुःख हुआ, उसने उसका वह खिसका हुआ हाथ स्पर्श किया। परन्तु मेरिआ ने उसे झट खींच लिया। यह नहीं कि नेज का यह व्यवहार उसे अयोग्य लगा हो, किन्तु यह कि वह किसी हालत में यह न समझे कि मेरिआ सहानुभूति चाहती है।

इसी बीच देवदारु के वृक्षों की डालों में बीच से किसी स्त्री की पोशाक की झलक दिखाई दी। मेरिआ सावधान होकर बैठ गई। उसने कहा—देखो, तुम्हारी मंगेतर ने अपना जासूस भेजा है। इस कुमारी को मुझ पर निगरानी करनी है और अपनी स्वामिनी को सूचित करना है कि मैं कहाँ हूँ और किसके साथ हूँ। मेरी बातों से बहुत

उस दिन सवेरे नेज को वेसोन्नी का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था कि वह मार्क के साथ मालोमन तथा एस० निवासी गोल्डनाम के व्यापारी से बिना समय नष्ट किये हुए बातचीत करे, जिससे काम जल्दी शुरू कर दिया जाय। इस पत्र से नेज बहुत घबरा गया, उसमें उसकी अकर्मण्यता के लिए धिक्कार का स्वर ध्वनित होता था। जो तीक्ष्णता अभी तक केवल शब्दों में व्यक्त होती थी, अब वही बड़े जोर के साथ उसकी आत्मा के भीतर से प्रकट हुई।

कोल्लो भोजन में शामिल हुआ। वह व्याकुल और उत्तेजित था। वह रोता-सा हुआ चिल्ला उठा। उसने कहा—तुम विश्वास करोगे? कैसी भयंकर बात मैंने अखबारों में पढ़ी है! सर्बिया के मेरे मित्र प्रिंस मिचिल को किसी दुराचारी ने बेलग्रेड में मार डाला। ये जैकोबाइन और क्रान्तिकारी यदि दृढ़ता से रोके नहीं जायेंगे तो यही करेंगे। इस पर सिपी ने कहा यह भयंकर हत्या सम्भवतः जैकोबाइन लोगों ने नहीं की है। बेलग्रेड में तो उनका अस्तित्व ही नहीं है। यह दुष्कर्म काराजार्जेविच के दल के कुछ अनुयायियों का काम हो सकता है।

कोल्लो सिपी की यह बात नहीं सुनना चाहता था। वह उसी रोनी आवाज में कहने लगा प्रिंस मेरा कितना स्नेह करता था! उसने मुझको कैसी सुन्दर बन्दूक दी थी। इस तरह अपना दुःख प्रकट करते हुए वह अधिक उत्तेजित हो उठा और अन्त में विदेशी जैकोबाइन लोगों को छोड़कर वह देशी नास्तिकों और साम्य-वादियों पर टूट पड़ा और अपनी बात क्रुद्ध होकर समाप्त की। उसने कहा—मैं उन सबको टुकड़े टुकड़े कर डालता, मार्ग में मिला देता पसन्द करूँगा जो किसी का या किसी बात का विरोध करते हैं। उसने बार बार कहा कि बड़ा विकट समय आ गया है। उसने मास्को के बड़े बड़े पुस्तकप्रकाशकों तथा बेडिसन्यास की बड़ी प्रशंसा की। इस अवसर पर उसने अपनी निगाह मेज पर डाली, मानो वह यह कह रहा था कि यह सारा व्यञ्जन तुम्हारे ही लिए हैं, और अभी बहुत कुछ सामने आने को बाकी है।

यदि सिपी ने उसे प्रारम्भ में ही न रोक दिया होता। अपनी आवाज ऊँची करके उसने गम्भीरता से कहा—मैं अपने भोजनागार में ऐसी अनुचित बात-चीत नहीं सुनना चाहता। बहुत दिन से मेरा बनाया हुआ यह नियम जारी है कि इस स्थान में प्रत्येक प्रकार के विचार का आदर किया जायगा जब तक कि वह भलमनसी की सीमा के अन्तर्गत व्यक्त किया जायगा। उसने यह भी कहा कि जहाँ एक ओर वह नेज के क्रोधपूर्ण कथन की निन्दा करता है, वहाँ वह विरोधी दल के लोगों पर किये गये कोल्हो के कठोर आक्रमण से सहमत नहीं हो सकता, यद्यपि उसे विश्वास है कि समाज की भलाई की उत्तेजना में आकर यह आक्रमण किया गया है। उसने अपनी बात यह कहकर समाप्त की कि सिपी की छत के नीचे न तो कोई जैकोबाइन हैं, न जासूस हैं, केवल ईमानदार और भले ही आदमी ही हैं, जो एक बार एक-दूसरे को जान लेने पर मित्रभाव से परस्पर हाथ ही मिलायेंगे।

न तो नेज ने, न कोल्हो ने ही कुछ कहने का साहस किया, परन्तु उन्होंने एक-दूसरे से हाथ भी नहीं मिलाया। उनमें मेलजोल हो जाने का समय नहीं आया था। उन्होंने अभी तक एक-दूसरे के प्रति ऐसी घोर घृणा का अनुभव भी नहीं किया था।

भोजन की समाप्ति अस्वाभाविक मौन के साथ हुई। सिपी ने एक राजनैतिक घटना का वर्णन करने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ ही कहकर वह भी चुप हो गया। मेरिया अपनी तश्तरी की ओर ही लगातार देखती रही, नेज ने जो कहा था उसके प्रति अपनी सहानुभूति का भेद वह नहीं खोलना चाहती थी। उसे किसी बात का डर नहीं था, परन्तु वह संभव सिपी के सामने अपना रहस्य नहीं प्रकट करना चाहती थी। मेरिया को प्रतीत होता था कि उसकी निगाह उसी पर लगी हुई है। और निस्सन्देह संभव सिपी की निगाह या तो मेरिया पर लगी हुई थी या नेज पर। पहले तो उसके एकाएक खिन्न पड़ने पर उसे आश्चर्य हुआ परन्तु दूसरे ही क्षण एकाएक उसे कुछ दिखाई पड़ गया अवश्य

बाद शीघ्र ही चली गई थी। पहले तो रूसी में, फिर फ्रेंच में उसने पूछा—मेरिआ कहां गई? यह उसने किसी एक को लक्ष्य करके नहीं पूछा था, किन्तु दीवारों से पूछा था जैसा कि लोग चकित होकर करते हैं। परन्तु वह भी शीघ्र ही खेल में तल्लीन हो गई।

नेज कई बार कमरे में इधर से उधर आया गया, फिर बरामदे में आकर उसने मेरिआ के दरवाजे पर जाकर धीरे से आवाज की, पर कोई उत्तर नहीं मिला। उसने फिर आवाज की और दरवाजा खोलने का दस्ता भी घुमाया, पर कमरा भीतर से बन्द था। वह मुश्किल से अपने कमरे के भीतर पहुँचा था कि दरवाजा धीरे से खुला और मेरिआ की आवाज सुनाई पड़ी। उसने पूछा—नेज, क्या तुम मेरे पास आये थे।

नेज तुरन्त उछल पड़ा और बरामदे में आकर दौड़ना पड़ा। अपने हाथ में बत्ती लिये हुए मेरिआ अपने दरवाजे पर चुपचाप खड़ी थी। उसका चेहरा पीला हो रहा था।

नेज ने धीरे से कहा—हाँ, मैं था।

मेरिआ ने कहा—अच्छा आओ। बरामदे में आगे कुछ दूर जाकर वह खड़ी हो गई और एक छोटा-सा दरवाजा खोल दिया। नेज को एक छोटा-सा खाली कमरा दिखाई दिया।

"आओ भीतर चलकर बैठें। यहां आकर कोई नहीं विघ्न डालेगा।"

नेज ने स्वीकार किया। भीतर जाकर मेरिआ ने खिड़की में बत्ती रख दी और घूमकर उसकी ओर खड़ी हो गई। उसने कहा—मैं जानती हूँ कि तुम क्यों मुझसे मिलना चाहते थे। इस घर में तुम्हारा रहना बड़े दुःख की बात है। मेरे लिए भी ऐसा ही है।

"हां, मैं तुमसे मिलना चाहता था। परन्तु जब से तुमको जाना है, मुझे यहां रहना दुखदायी नहीं मालूम होता है।"

मेरिआ ने मुस्करा दिया। उसने कहा—धन्यवाद है। परन्तु क्या तुम यह सब देख सुनने के बाद भी यहां रहना चाहते हो?

"मैं नहीं समझता कि वे लोग मुझे रक्खेंगे। मैं निकाल दिया जाऊँगा।"

"हाँ, कैसा अच्छा—कैसा अच्छा!" मेरिआ ने भी धीरे से वही दोहरा दिया। उसने अनजाने ही उसकी नक़ल की। उसका भी गला भर आया। उसने कहा—इसका मतलब यह है कि मैं तुम्हारी मर्ज़ी पर हूँ, मैं तुम्हारे 'काज' (उद्देश्य) के लिए उपयोगी होना चाहती हूँ। जो आवश्यक हो, वह सब मैं करने को तैयार हूँ। जहाँ कहीं तुम मुझे ले जाना चाहते हो, ले चलो। मैंने ये सब बातें सदा हृदय से चाही हैं जिन्हें तुम चाहते हो।"

मेरिआ भी चुप हो गई। अगर एक भी शब्द निकालती तो उसका जोश आँसुओं में परिणत हो जाता। उसकी सारी शक्ति और तेज़ी एकाएक नरम पड़ गई। वह काम करने के लिए, आत्मोत्सर्ग करने के लिए आतुर थी।

दरवाज़े की दूसरी ओर से किसी के चलने की आवाज़ सुनाई दी—पदध्वनि हल्की, तेज़ और सतर्क थी।

एकाएक मेरिआ सँभल गई, उसने अपने हाथ भी हटा लिये, उसकी मनोवृत्ति बदल गई, वह बहुत ही अधिक प्रसन्न हो गई। एक प्रकार की घृणासूचक भावना उसके चेहरे पर झलक आई। उसने कहा—मैं जानती हूँ कि इस समय दरवाज़े के पीछे खड़े होकर हमारी बात-चीत कौन सुन रहा है। मैडम निनी हमारी बातें सुन रही हैं। परन्तु मुझे इसकी ज़रा भी परवा नहीं। उसने अपनी बात इतने ऊँचे स्वर में कही थी कि वह बरामदे में सुनाई पड़ सकती थी।

पदध्वनि बन्द हो गई।

नेज़ की ओर मुड़कर मेरिआ ने पूछा—मुझे क्या करना होगा? मैं तुम्हारी कैसे मदद करूँगी? मुझे जल्दी बताओ मुझे, क्या करना होगा?

नेज़ ने उत्तर दिया—यह बात मैं अभी तक नहीं जानता। मुझे मार्ई ने एक चिट्ठी लिखी है।

"तुम्हें यह कब मिली थी?"

"आज ही शाम को। कल हम दोनों को कार्मनारे में जाकर मारोसिनी से भेंट करना होगा।"

मेरिआ ने धीरे से कहा—उनकी ज़रूरत नहीं है। फिर एकाएक उसने अपने हाथ उसकी गर्दन में डाल कर अपना सिर उसकी छाती से लगा दिया। उन्होंने एक दूसरे का चुम्बन नहीं किया और खूब ज़ोर से हाथ मिलाने के बाद वे तुरन्त वहाँ से चल पड़े।

मेरिआ ने लौटकर बत्ती ली। उसे वह खिड़की पर छोड़ गई थी। केवल उस समय उसे एक प्रकार का आश्चर्य हुआ। उसने बत्ती बुझा दी और अन्धकारपूर्ण बरामदे में जल्दी जल्दी चलकर अपने कमरे में प्रवेश किया। उसने कपड़े उतारे और अँधियारे में करवट लेने लगी।

सोलहवाँ अध्याय

दूसरे दिन सवेरे जागने पर नेज को पिछली रात की घटना के लिए ज़रा भी चिन्ता न हुई, किन्तु इसके विपरीत वह एक प्रकार की शान्त प्रसन्नता से भरा हुआ था, मानो उसने कोई ऐसा काम पूरा किया हो जिसको उसे बहुत पहले पूरा करना चाहिए था। उसने सिपी से दो दिन की छुट्टी माँगी। सिपी ने छुट्टी तो तुरन्त दे दी, परन्तु कुछ कड़ाई के साथ। नेज मार्क्स के घर को रवाना हुआ। जाने के पहले उसने मेरिआ से भेंट की। वह भी ज़रा भी लज्जित नहीं थी। उसने शान्ति और दृढ़ता के साथ उसकी ओर देखा और बिलकुल स्वाभाविक ढंग से उसे 'प्यार' कहा। मार्क्स के यहाँ उसे क्या मालूम होगा, इसके सम्बन्ध में वह बहुत अधिक चिन्तित था और प्रत्येक बार [illegible] की उसने उससे प्रार्थना की।

नेज ने कहा—प्यार। फिर उसने अपने मन में सोचा—आखिर को हम लोग क्यों तंग किये जाते हैं? हमारी मित्रता ने स्वाभाविक भावनाओं में से एक दूसरे वर्ग का काम किया है, और हम सदा के लिए एक हुए हैं। क्या 'पाप' के नाम पर? हाँ, पाप के ही नाम पर हम

टूटा पड़ा था, तो कहीं पलस्तर गिर गया था। दूसरी जगह तख्ते ढीले हो रहे थे, तो कहीं दरवाजा खुला पड़ा था। मुख्य सहन के बीच में एक बड़ी-सी गन्दी तलैया थी। उसके आगे रद्दी ईंटों का एक ढेर लगा हुआ था। चटाइयों के, सन्दूकों के और रस्सियों के टुकड़े यहाँ-वहाँ बिखरे पड़े थे। भूखे दीखनेवाले कुत्ते जगह-जगह घूम रहे थे। उन्हें भौं भौं करने तक की फुर्सत नहीं थी। एक कोने में कोई चार वर्ष का एक लड़का बैठा रो रहा था, मानो सारे संसार ने उसका त्याग कर दिया हो। उसका पेट निकल आया था। उसके समीप ही एक सुअरी कीचड़ में लथपथ अपने छोटे-छोटे बच्चों के दल से घिरी हुई करमकल्लों के डंठल खा रही थी। सारांश यह कि वह ठीक रूसी कारखाने जैसा ही था, फ्रांसीसी या जर्मन-कारखाना जैसा नहीं था।

मेज ने मार्क की ओर देखकर कहा—मैंने मालोमन की योग्यता के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना है। परन्तु यहाँ की अव्यवस्था देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। मुझे तो ऐसी आशा नहीं थी।

"यह अव्यवस्था नहीं है, किन्तु रूसियों का आलस्य है। ये लोग तो लाखों के वारे-न्यारे कर रहे हैं। मालोमन को पुराने ढंगों, व्यावहारिक बातों तथा स्वयं स्वामी के अनुसार ही अपने आपको ठीक-ठाक करना पड़ता है। कैसा बना है, इसका तुमको कुछ ध्यान है।"

"जरा भी नहीं।"

"वह मामलों में सबसे बड़ा मक्खीचूस है। पूरा पूँजीपति।"

इतने में मालोमन कमरे में घुस आया। मेज का भ्रम उसके भी बारे में उसी प्रकार दूर हो गया जैसे कि कारखाने के बारे में दूर हुआ था। पहली निगाह में वह फिन या स्वेड मालूम पड़ा। वह लम्बा दुबला-पतला और कोई चालीस वर्षों का आदमी था। उसका चेहरा लम्बा ललाई लिये हुए था, नाक छोटी और कुछ चौड़ी, आँखें छोटी छोटी हलकापन लिये हुए थीं। चेहरे पर गम्भीरता थी, ओठ मोटे और दाँत बड़े बड़े थे। वह कारीगर की पोशाक पहने हुए था। उसके साथ जो आदमी था उसकी उम्र ५० वर्ष के लगभग होगी और वह किसान की पोशाक पहने

"बहुत ठीक है। हम लोग रात भर तुम्हारे घर में रह सकते हैं।"

"जरूर।"

"मैं एक मिनट में तैयार हो जाऊँगा।"

नेज ने पूछा—तुम्हारे कारखाने का क्या हाल है?

सालोमन दूसरी ओर देखते हुए बोला—हम लोग वहीं सब बातें करेंगे। एक मिनट के लिए क्षमा मांगता हूँ। अभी आता हूँ। कुछ भूल गया हूँ।

सालोमन बाहर चला गया। यदि उसने नेज पर पहले ही अच्छा प्रभाव न डाला होता तो वह समझता कि सालोमन पीछे हट रहा है, परन्तु यह विचार उसके मन में नहीं आया।

एक घंटे के बाद जब उस विशाल इमारत के प्रत्येक मंजिल से, प्रत्येक जीने से और प्रत्येक दरवाजे से मजदूरों की भीड़ शोर करती हुई बाहर निकलने लगी तब मार्क की भी गाड़ी उसे, नेज और सालोमन को लिये हुए फाटक से बाहर निकली।

पेवेल ने जो सालोमन के साथ फाटक तक आया था, चिल्लाकर पूछा—वेसीली फेडोरिच, क्या वह काम करना है?

सालोमन ने कहा—नहीं, अभी नहीं। अपने साथियों की ओर मुँह करके उसने कहा—रात के काम के सम्बन्ध में यह जानना चाहता है।

जब वे बोरिसिअनकोव पहुँचे तब उन्होंने वहाँ रात का भोजन किया और वो भी केवल शिष्टता के विचार से। भोजन के बाद उन्होंने सिगार जलाये और बातचीत शुरू की—उन न खतम होनेवाली आधीरात की बातचीतों में से एक जो केवल रूसियों की एक खास चीज है, और किसी जाति के लोग इस सम्बन्ध में उनकी बराबरी नहीं कर सकते। इस बात-चीत में भी सालोमन ने नेज की आशा की पूर्ति नहीं की। वह बहुत कम बो- [illegible] इतना कम कि कोई भी यह सोचता था कि वह शिष्ट[illegible] ही बैठा रहा। परन्तु उसने ध्यान से सुना और जब कभी कोई बात कही या राय दी तब भी संक्षेप में गम्भीरता के साथ। सालोमन इस बात पर विश्वास नहीं करता [illegible]

था। परन्तु उसे इस बात का बड़ा दुख था कि सालोमन ने शादी नहीं की और अपना घर नहीं आबाद किया।

बातचीत के बीच में जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, सालोमन बिल्कुल चुप ही बैठा रहा। परन्तु जब मार्के कारखाने के मजदूरों के भरोसे आशायें बाँधने लगा तब उसने कहा कि उन्हें मजदूरों का अधिक भरोसा न करना चाहिए, क्योंकि रूस के कारखानों के मजदूर वैसे नहीं हैं जैसे कि दूसरी जगहों के हैं। "यहाँ के लोग बिल्कुल ही नर्म स्वभाव के हैं।"

"और किसानों का क्या हाल है?"

"क्या किसान? उनमें से बहुत-से सूद पर रुपया देनेवाले सूदखोर हैं। इस श्रेणी के लोग अपने स्वार्थ की ही बात देखते हैं। अब रहे दूसरे लोग, सो वे भेड़ के समान ही मूर्ख हैं।"

"तब हमें किनको हाथ में करना होगा?"

सालोमन ने मुस्करा दिया। उसने कहा—ढूँढो, तुम्हें मिल जायेंगे।

सालोमन के ओठों पर मुस्कराहट लगातार बनी रही, परन्तु वह मुस्कराहट उतनी ही अर्थगर्भित थी जितनी कि वह स्वयं। नेज के साथ उसने विचित्र ढंग से व्यवहार किया। वह उस युवक विद्यार्थी की ओर आकृष्ट हो गया था और उसको उससे सहानुभूति हो गई थी। बातचीत के एक अंश में जब नेज की वाक्-धारा रुक पड़ी थी तब सालोमन चुपके से उठकर लम्बे लम्बे डगों से जाकर उस खिड़की को बन्द कर दिया जो नेज के ठीक सिर के ऊपर खुली हुई थी। उसने यस्ता की आश्चर्यभरी दृष्टि के उत्तर में कहा—तुमको ठंड लग जा सकती है।

नेज सालोमन से उसके कारखाने के बारे में पूछताछ करने लगा। उसने पूछा—तुम्हारे कारखाने में सहयोग-प्रणाली का कोई प्रयोग किया गया है? क्या कोई ऐसी बात की गई है कि मजदूरों को भी लाभ में कुछ हिस्सा मिल सके?

सालोमन ने कहा—भाई, मैंने एक स्कूल और एक छोटा-सा अस्पताल खोला था, परन्तु इतने ही पर मालिक लोग बाघ की तरह टूट पड़ा।

सत्रहवाँ अध्याय

जब एक दूत उसकी बहन की चिट्ठी लेकर उसके पास आया तब मार्के के अतिथि पड़े सो ही रहे थे। इस चिट्ठी में उसकी बहन ने घर की भिन्न-भिन्न मामूली बातें लिखी थीं, साथ ही एक किताब वापस माँगी थी जो वह उससे ले आया था। चिट्ठी के अन्त में पुनश्च लिखकर एक बड़ी मजे की बात लिखी थी। वहाँ लिखा था कि उसकी मेरिआना का ट्यूटर नेज से प्रेम हो गया है। यह केवल भ्रम नहीं है, किन्तु स्वयं उसने अपनी आँखों से देखा और कानों से सुना है। मार्के का चेहरा काला पड़ गया। परन्तु उसने कुछ नहीं कहा और किताब दे देने को कहा। जब नेज को जीने से उतरते देखा तब उसने सदा की भाँति उसका अभिवादन किया और उसे किसलियाक के पत्र देना भी नहीं भूला। परन्तु वह उसके साथ देर तक नहीं रहा और अपना 'फार्म' देखने चला गया।

नेज अपने कमरे को लौट आया और उन पत्रों को देखने लगा। उस युवक आन्दोलनकारी ने ज्यादातर अपने ही सम्बन्ध में लिखा था, अपने परिश्रम की चर्चा की थी। उसने लिखा था—पिछले महीने में मैंने सात सूबे, नौ शहर, उन्तालिस गाँव, तिरपन गढ़े, एक फार्म हाउस और सात कारखाने देखे। मैंने सोलह रातें घास के ढेरों पर, एक अस्तबल में और एक गोशाला में बिताईं। (यहाँ उसने लिखा था कि मच्छड़ और मक्खियाँ मुझे नहीं सताती हैं)। मैंने मिट्टी के घरों में, मजदूरों की बारकों में जाकर लोगों को पुस्तकें दीं, उपदेश किया, शिक्षा दी, पैम्फ्लेट बाँटे और भेद-भाव लिया। कुछ बातों को मैंने तत्काल ही नोट कर लिया था, दूसरी याद में रक्खी थीं। मैंने चौदह लम्बे लम्बे पत्र लिखे हैं। अट्ठाईस छोटे छोटे पत्र और अठारह नोट जिनमें से चार पेंसिल से, एक खून से और एक कालिख और पानी से लिखा था। यह सब मैंने इस कारण लिखा, क्योंकि मैं व्यवस्था-पूर्वक अपना आन्दो-

ने उन लोगों से अपना गला साफ करते हुए कहा—क्या कुछ खाना-पीना नहीं होगा। यह कहकर सबसे पहले वह एक गिलास कड़ी चेरी पी गया। अतिथियों ने भी खाना शुरू किया। वह बड़े बड़े टुकड़े खा रहा था और बार बार शराब पी रहा था। नेज से उसने पूछा—तुम कहाँ से आये हो? यहाँ कहाँ ठहरे हो और कब तक रहना होगा? यह जानने पर कि वह सिपी के यहाँ ठहरा हुआ है, उसने कहा—मैं इस आदमी को जानता हूँ। कुछ भाल नहीं है। फिर वह उस प्रान्त के सभी जमीन्दारों को गालियाँ देने लगा। उसने कहा—ये लोग केवल सार्वजनिक भावना से ही शून्य नहीं हैं, किन्तु अपने हित की भी बात नहीं समझते।

परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि गोलुश के इतना गालियाँ बकने पर भी उसकी आँखें बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थीं। नेज उसके सम्बन्ध में कुछ भी निश्चय न कर सका। उल्टा आश्चर्य में पड़ गया कि यह उसके किस काम आ सकता है। सालोमन चुप था और मार्के का चेहरा उदास था यहाँ तक कि नेज को पूछना पड़ा कि उसे क्या हो गया है। मार्के ने कहा—ऐसी कोई बात नहीं है, और उसका तो तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। गोलुश फिर एक न एक को गालियाँ देने लगा। इसके बाद उसने नई पीढ़ी की प्रशंसा शुरू की। इस पर सालोमन ने उसके होनहार युवक के बारे में पूछा। गोलुश ने कहा—जरा ठहरिए, तुम्हें मालूम हो जायगा। फिर वह सालोमन के कारखाने और उसके 'बदमाश' स्वामी के सम्बन्ध में प्रश्न करने लगा। सालोमन ने उसे एक दो शब्दों में जवाब दे दिया। अब उसने सबको शैम्पियन शराब पीने को दी और नेज के ऊपर भुक कर उसके कान में कहा—'प्रजातन्त्र के नाम पर, और वह अपना गिलास एक सांस में पी गया। नेज ने अपना गिलास सिर्फ ओंठ से लगा लिया। सालोमन ने कहा—मैं सवेरे शराब नहीं पीता। मार्के कांप और दृढ़ता से अपना गिलास साफ कर गया। वह अधीरता से व्याकुल था। उसने कहा—तुम लोग मजे में समय नष्ट कर रहे हो और मतलब की बात कुछ भी नहीं करते। यह कहकर उसने मेज पर एक घूंसा मारा और कुछ बड़बड़ाने लगा।

इसी समय कमरे में एक दुबले पतले आदमी ने प्रवेश किया। आते

मार्क ने अपना सिर उठाया। उसने कहा—आओ 'पब्लिक-गार्डेन' चलें। मौसम भी सुन्दर है। वहाँ बैठकर लोगों को देखेंगे।

"आओ।"

वे सब वहाँ से चल पड़े। मार्क और सालोमन आगे आगे और नेज उन दोनों के पीछे था।

अठारहवाँ अध्याय

नेज के मन की दशा विचित्र थी। पिछले दो दिन में उसे इतनी सनसनी-दार बातों का, इतने नये चेहरों का परिचय हुआ! अपने जीवन में वह यह पहली बार किसी ऐसी लड़की के सम्पर्क में आबद्ध हुआ था जिसे वह प्यार करता था। वह उस आन्दोलन के श्रीगणेश करने के समय उपस्थित था जिसके लिए वह अपना सारा जीवन अर्पित करने को था। क्या वह प्रसन्न था? नहीं। क्या वह [illegible] रहा था? क्या वह डर गया था? घबरा गया था? नहीं, बिल्कुल नहीं। क्या उसने अगली पंक्ति में होने की कामना का कुछ अनुभव किया था? युद्ध की पहली सूचना पर ही यह कामना जाग्रत होती है। नहीं, उसने इसका अनुभव नहीं किया। क्या वह वास्तव में 'काज' पर विश्वास करता था? क्या उसे अपने प्रेम पर विश्वास था? उसके ओठों ने स्पष्ट स्वर में कहा—अरे तुच्छ नास्तिक! अविश्वासी! यह शिथिलता क्यों? यह [illegible] अनिच्छा क्यों? जब दो [illegible] सब [illegible] क्यों [illegible]? यह भीतरी आवाज क्या है जिसे तू इस भीड़ से बचाना चाहता है? परन्तु [illegible] जो आनन्दपूर्ण, आशाकारी, [illegible], [illegible] है, क्या उसका प्रेम नहीं करती है? तेरे सामने ये दो व्यक्ति—मार्क और सालोमन—जिनको तू अभी [illegible] कम जानता है, परन्तु जिनकी ओर तू बहुत अधिक आकृष्ट हो गया है—[illegible] [illegible] है—[illegible] [illegible] है—[illegible] [illegible] नहीं है? [illegible] [illegible] [illegible] के लिये

"किस समय ?"

"तीन बजे ।"

क्या तुम उनसे—पैंकलिन ने सालोमन और मार्क की ओर देखा। उसने कहा—इनसे बतला दो कि मैं भी तुम्हीं लोगों में हूँ ।

नेज ने कहा—गोलुश भी हमीं लोगों में है ।

"यह और भी अच्छा है। परन्तु तीन बजने में अभी बहुत देर है। तब तक मेरे सम्बन्धी के यहां चल कर मिल न लो।"

"बात तो बहुत सुन्दर है, परन्तु हम लोग कैसे   "

"कोई डर नहीं है। सारी ज़िम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ। उनके यहाँ न तो राजनीति की, न साहित्य की और न किसी और ही आधुनिक विषय की कभी चर्चा होती है। उनके यहाँ की हवा तक में प्राचीनता की बू है। वे तो प्राचीनता के नमूने हैं। पति-पत्नी दोनों वृद्ध हैं, लगभग एक ही उम्र के हैं। उनके कोई सन्तान नहीं है। एक ही तरह की वेष-भूषा में रहते हैं। वे हैं भी एक ही तरह के। पति का नाम कोमिसारा और पत्नी का कोमिसारा है। वे दोनों एक-दूसरे का अत्यधिक प्यार करते हैं। अगर तुम उनके यहां चलोगे तो वे तुम्हारा बड़े प्रेम से स्वागत करेंगे। परन्तु एक बात है, वे सिगरेट पीना नहीं पसन्द करेंगे। उनके समय में इसका चलन ही न था। क्या चलोगे ?

नेज—मैं क्या कहूँ ?

पैंकलिन—असल बात यह है कि क्या तुम यह देखना चाहते हो कि सौ डेढ़ सौ वर्ष पहले लोग कैसे थे ? अगर देखना चाहते हो तो जल्दी मेरे साथ चलो। नहीं तो वह दिन शीघ्र आ जायगा, जब मेरे ये दोनों प्राणी यहां से कूच कर जायेंगे और उनके साथ ही सारी प्राचीनता भी लुप्त हो जायगी, उनका पुराना छोटा-सा घर भी ढह जायगा ।

नेज—तो फिर हम सबको वहां से तुरन्त ही चलना चाहिए ।

सालोमन—बड़ी प्रसन्नता के साथ। यद्यपि ऐसी बातें मुझे पसन्द नहीं हैं, तो भी बड़ा मज़ा आवेगा। यदि पैंकलिन साहब यह समझते हों कि हम लोगों के वहां जाने से कोई गड़बड़ न होगी तो क्यों न चला जाय ?

में एक बार उनके पास आकर लगान देता और एक जोड़ा वनमुर्ग भेंट करता। समझा जाता कि ये मुर्ग उन्हीं के जंगल से मार कर लाये गये हैं, यद्यपि अब उसका नाम-निशान तक नहीं रह गया था। वे गुमाश्ते को ड्राइंग रूम के दरवाजे पर चाय पिलाते, भेड़ की खाल की एक टोपी देते, हरे चमड़े का बिना अँगुलियों का एक जोड़ी दस्ताना देते और आशीर्वाद देकर विदा करते। पुराने जमाने की तरह उनका घर नौकरों-चाकरों से भरा रहता था।

बुड्ढा नौकर फैलिओ भोजन परोसे जा चुकने की सूचना आकर देता था और अपनी स्वामिनी की कुर्सी के पीछे खड़ा होकर ऊँघता रहता था। वह विचित्र प्रकार के मजबूत कपड़े का कोट पहनता और सदा कालर लगाता था। गुलामों के छुटकारे के सम्बन्ध के प्रश्न के उत्तर में वह लापरवाही से कहता—ऐसी गपों की ओर कौन ध्यान दे? यह सच है कि तुर्कों का छुटकारा हो गया है, परन्तु भगवान् की कृपा से ऐसी भयङ्कर बात से मैं बचा हुआ हूँ। पुलक्की नाम की एक लड़की भोजन कराने के काम में नियुक्त थी और वे मोलोवना नाम की एक बुड्ढी सिर पर काला रूमाल लपेटे भोजन के समय आती और ऊँची आवाज में सारी खबरें सुनाती थी। नेपोलियन, सन् १८१२ के युद्ध, ईसा के विरोध तथा गोरे निगर लोगों की बातें करती। वह उदासभाव से रात में देखे गये अपने स्वप्न तथा तास-द्वारा जानी गई अपने भाग्य की बातें भी करती। ओनिसिमा का घर उस शहर के दूसरे लोगों के घरों से बिलकुल भिन्न था। वह बिलकुल ओक की लकड़ी का बना था, उसकी खिड़कियाँ चौकोर थीं और जाड़े में काम आनेवाले उनके दोहरे चौखटे लगातार साल भर बन्द रहते थे। मकान में अनेक छोटे-छोटे कमरे, कोठरियाँ, तहखाने आदि थे। मकान के सामने चोबदार झाड़ियों का बाग और पांडु-वृक्ष लगा था। इस बाग में भी अनेक झाड़ियाँ उगी थीं, यह सच है कि उसमें झाड़-झंखाड़ भरा [illegible] था, किन्तु [illegible] कि वे सब पुराने जमाने से लगी हुई थीं, इसलिए [illegible] से भी वे [illegible] थीं।

उन्होंने अपने दयालु स्वभाव से प्रत्येक व्यक्ति को वशीभूत कर लिया था। यद्यपि उनकी हँसी उड़ाई जाती थी और वे सनकी कहे जाते थे, तो भी उनका सभी कोई आदर करता था। कोई भी उनके यहाँ नहीं आता था, वे भी इस बात की कुछ परवा नहीं करते थे। वे दोनो एक साथ रहने में कभी नहीं ऊबते थे, कभी अलग भी नहीं होते थे और न कभी किसी दूसरे व्यक्ति का साथ ही पसन्द करते थे।

न तो फोमिशका, न फीमिशका ही कभी बीमार पड़ी थी। यदि उनमें से किसी एक की तबीअत कभी जरा भी खराब हो जाती थी तो वे दोनों निबू के फूलो का बना हुआ कोई अर्क पीते थे, अपने पेट पर गरम तेल मलवाते थे या पैर के तलवे पर मोमबत्ती को गरम करके उसकी चर्बी टपकाते थे। इन उपचारो से उनकी मामूली व्याधि दूर हो जाती थी। वे अपना समय एक ही ढङ्ग से बिताते थे। वे देर करके सोकर उठते थे, छोटे-छोटे प्यालो में चॅकोलेट पीते थे। वे कहते थे कि चाय का प्रचार उनके समय के बहुत पीछे हुआ है। और एक-दूसरे के सामने बैठकर बातचीत करते थे (उन्हें बातचीत के विषय का कभी अभाव नहीं हुआ) या कोई मनोरंजक पुस्तक पढ़ते या चित्रों की एक पुरानी किताब के पन्ने उलटते रहते थे। यह पुस्तक उन्हें कब, कैसे मिली, इसका पता उन्हें नहीं था। इसके अन्तिम पृष्ठ पर उदर-सम्बन्धी तथा पीठो के रोगों के भिन्न-भिन्न प्रकार के नुस्खे लिखे हुए थे।

फोमिशका और उसकी पत्नी ठीक बारह बजे भोजन करते थे, वे भोजन भी पुरानी चाल का ही करते थे। और भोजन के बाद एक घंटे तक सोते थे। जागने पर फिर आमने-सामने बैठ जाते थे और सब प्रकार के फल की शराब या उफननेवाला पेय पीते थे। उनका यह पेय बोतल से बाहर करीब करीब उफन पड़ता था, जिसे देखकर वे दोनो बहुत प्रसन्न होते थे, किन्तु यह नौकरों को बहुत अखरता था, क्योंकि बाद को उन्हें सब कुछ साफ करना पड़ता था। इसके बाद वे दोनों या तो कुछ पढ़ते थे या बौना दुरका [illegible] उनका मनोरंजन करता था या पुरानी चाल के गीत गाते थे।

नंगे और जूते पहने पैरो की जल्दी-जल्दी चलने की आवाज सुनाई पड़ी, कई औरतो ने अपने सिर दरवाजे से निकाल कर झाका और फिर तुरन्त उन्हें भीतर कर लिया, उनमें से किसी को धक्का दिया गया, दूसरी फुनमुनाने लगी, तीसरी खिलखिलाकर हँस पड़ी, और किसी ने उत्तेजित होकर धीरे से कहा—चुप रहो ।

अन्त में फैलिओ अपना पुराना कोट पहने हुए आ उपस्थित हुआ। ड्राइगरूम का दरवाजा खोलकर जोर की आवाज में उसने सूचित किया—हुजूर, सिला सैम्सोनिच (पैकलिन) कुछ दूसरे सज्जनो के साथ आये हैं।

नौकरो की अपेक्षा उन दम्पती को कम घबराहट हुई थी, यद्यपि पूर्ण वयस्क चार आदमियों के उनके ड्राइगरूम में एकाएक आ जाने से वास्तव में उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ था। परन्तु पैकलिन ने नेज, सालोमन और मार्के का अलग अलग परिचय देकर उन्हें विश्वास दिला दिया कि ये लोग भले आदमी हैं, सरकारी आदमी नहीं हैं; क्योंकि वे दोनों ही सरकारी आदमियो से बहुत डरते थे ।

स्निया जो अपने भाई के बुलाने पर आई थी, उन दोनों बूढ़ो की अपेक्षा बहुत अधिक घबरा गई थी । दम्पती ने एक साथ ही एक ही शब्दों में अपने अतिथियों से चाय, चाकोलेट या उबलता हुआ पेय पीने को पूछा, परन्तु यह मालूम होने पर कि उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, अभी व्यापारी गोलुश के यहाँ से जलपान करके आ रहे हैं और वहीं उन्हें भोजन करने जाना है, उन्होंने दुबारा जोर नहीं दिया, और वे बातचीत करने लगे । बातचीत पहले धीरे-धीरे आरम्भ हुई, परन्तु शीघ्र ही मजेदार हो गई ।

पैकलिन ने मजेदार कहानियों का उल्लेख करके उन दोनों बूढ़ों का खूब मनोरंजन किया । परन्तु उस समय [illegible] उनका मनोरंजन करना नहीं था, वह [illegible] अपने मित्रों को दिखलाना चाहता था, इसलिए उसने अपनी बातचीत का ढंग बदल दिया, जिससे वे दोनों शीघ्र ही [illegible] में आ गये ।

[illegible] ने अपने अतिथियों को बड़े प्यार के [illegible]

तुम तो इस विद्या में खूब निपुण हो। जूलिया, जरा ताश तो लाना।

फीमिशका ने अपने पति की ओर देखा, जो उसे पैंकलिन की सफाई से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट मालूम हुआ, अतएव वह भी शान्त हो गई। उसने कहा—किसी के भाग्य की बातें बतलाना तो अब मैं बिलकुल भूल गई हूँ। बहुत दिनों से मैंने ताश हाथ में लिये ही नहीं।

परन्तु इसके साथ ही फीमिशका ने अपनी इच्छा से असाधारण ढङ्ग के पुराने ताश जूलिया के हाथ से ले लिये। उसने कहा—मैं किसके भाग्य की बातें बताऊँ?

पैंकलिन ने कहा—क्यों, सभी की बताइए। हम सबके भाग्य, चरित्र और भविष्य की बातें बताइए।

फीमिशका ताश फेंटने लगी, परन्तु एकाएक उसने उन्हें नीचे फेंक दिया। उसने कहा—मुझे ताशों की जरूरत नहीं है। उनके बिना भी मैं तुम सबके चरित्र की बातें बता सकती हूँ। सालोमन की ओर सङ्केत करके उसने कहा—यह बड़ा गम्भीर और मुस्तैद आदमी है। मार्क की ओर सङ्केत करके कहा—यह बड़ा क्रोधी और मगरूर आदमी है। यह सुनकर पुफ़का ने अपनी जीभ निकाल कर उसकी ओर देखा। पैंकलिन की ओर देखकर कहा—और तुम्हारे सम्बन्ध में तो कुछ कहने की जरूरत नहीं है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम एक चञ्चल हृदय के सिवा और कुछ नहीं हो। और "यह—"

फीमिशका नेज की ओर सङ्केत किया, परन्तु कुछ कहने से हिचकिचाई।

नेज ने पूछा—हाँ, मुझे भी बतलाओ कि मैं कैसा आदमी हूँ।

फीमिशका ने धीरे से कहा—तुम दया के पात्र हो।

"दया के पात्र! सो क्यों?"

"ऐसी ही बात है। मैं तुम पर दया करती हूँ। बस यही बात तुम्हारे सम्बन्ध में मैं कह सकती हूँ।"

"परन्तु तुम मुझ पर क्यों दया करती हो?"

"क्या तुम उन्हें जानते हो ?"

"कैसा सवाल है ! क्या तुम मेरे इन सम्बन्धियों को जानते थे ?"

"नहीं, परन्तु तुमने हमें उनका परिचय दिया था ।"

"अच्छा, तब तुम हमें उनका परिचय दो । मैं नहीं समझता कि तुम लोगों को उनसे कुछ गुप्त बातचीत करनी है । गोल्डन बड़ी आवभगत करनेवाला आदमी है । तुम देखोगे, एक नये आदमी को देखकर वह कितना खुश होगा । यहाँ हम लोग बहुत नियमबद्ध नहीं रहते हैं ।"

मार्क ने धीरे से कहा—हाँ, मैंने देखा है कि इस नगर के निवासियों में नियमबद्धता का अभाव है ।

पैंकलिन ने सिर हिलाकर कहा—मेरी समझ में यह इशारा मेरी ओर है । मैं शानदार हूँ । मैं उसका पात्र भी हूँ । मेरे नये मित्र, परन्तु जो पीड़ा पहुँचानेवाले विचार तुमने प्रकट किये थे, क्या मैं कह सकता हूँ कि अपने क्रोधी स्वभाव के कारण ?—

बात काटकर क्रोध से मार्क ने कहा—मेरे नये मित्र, सावधान करने के विचार से मुझे कहने दीजिए । मैंने अपनी जिन्दगी में कभी दिल्लगी नहीं की, और आज तो बिलकुल ही नहीं की । तुम मेरे स्वभाव की बात कैसे जानते हो ? जरा बताइए तो । हम-तुम तो पहले-पहल अभी ही मिले हैं ।

पैंकलिन ने कहा—अच्छा, अच्छा, नाराज न होइए । सालोमन की ओर मुँह करके कहा—तुमको बुद्धिमान् कौंसिलका ने ठण्डे स्वभाव का बताया है, और तुम शान्त स्वभाव के हो भी । अच्छा तुम्हीं बताओ । क्या किसी को कोई अप्रिय बात या किसी से बेतौर की दिल्लगी करने का मेरा जरा भी विचार था ? मैंने मिसेज़ गोल्डन के घर तुम्हारे साथ आने की प्रार्थना की थी । इसके सिवा मैं बिलकुल निर्दोष आदमी हूँ । यदि मार्क का स्वभाव क्रोधी है तो इसमें मेरा क्या अपराध है ?

सालोमन ने पहले एक कन्धा हिलाया, फिर दूसरा हिलाया । जब वह समुचित उत्तर नहीं दे पाता था तब वह ऐसा ही करने लगता था । आखिर को उसने कहा—पैंकलिन, मैं नहीं समझता कि तुम किसी को नाराज कर सकते हो या नाराज करने की इच्छा कर सकते हो । और

उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए ही कहा। इसके बाद वह उन लोगों से कहने लगा—मैं अभी एक 'पुराने विचार' के वृद्ध गवर्नर के पास से लौटा हूं। उसने मुझे एक दातव्य संस्था के सम्बन्ध में बहुत तंग किया है। यह कहना कठिन है कि उसे किस बात से सबसे अधिक सन्तोष हुआ। गवर्नर के मिलने से वह अधिक सन्तुष्ट हुआ था या उन्नत-विचार के युवकों के आगे उसकी निन्दा करने से उसे सन्तोष हुआ था। उसने अपने अतिथियों को अपने क्लार्क वेसिया का परिचय दिया। उसने कहा—इसके बारे में कुछ अधिक नहीं कहता हूं। हमारे 'काज' के लिए इसने अपने को उत्सर्ग कर दिया है। इस बात पर वेसिया ने सिर झुका कर उन सबका अभिवादन किया। वह झेंप-सा गया और उसने अपनी आँखें मींची और इस ढंग से खाँस काढ़ी कि यह कहना असम्भव था कि वह केवल एक गँवार मूर्ख है या पूरा बदमाश और गुंडा है।

गोलुश ने कहा—आओ, हम लोग भोजन करने चलें।

उन्होंने पहले भूख लगने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की नमकीन मछलियाँ खाईं। इसके बाद वे भोजन करने को बैठ गये। शोरबा के आने के बाद गोलुश ने शैम्पेन लाने की आज्ञा दी। जब उसने शैम्पेन गिलासों में ढालनी शुरू की तब वह जमे हुए टुकड़ों के रूप में गिरने लगी। नौकर की तरफ आँख से इशारा करके गोलुश ने कहा—हमें अपने 'काज' के सम्बन्ध में अपरिचितों के सामने सदा सावधान रहना चाहिए। सर्वोक्षित वेसिया चुप बैठा रहा। यद्यपि वह कुर्सी के किनारे पर ही बैठा था और जिस सिद्धान्त के लिए वह अपने स्वामी के मतानुसार अपने को उत्सर्ग कर चुका था उन्हीं के विपरीत वह अपनी दासता का भाव ही प्रकट करता रहा था, तो भी विचित्र लोभ के साथ उसने अपना गिलास एक ही साँस में खाली कर दिया। दूसरों ने उसकी कुर्सी की पूर्ति कर दी, अर्थात् गोलुश और पैक्लिन ने, विशेष करके पैक्लिन ने। नेज़ को भीतर ही भीतर बुरा मालूम हुआ, मार्केलोव नाराज होता और सालोमिन चुपचाप बैठा रहा।

पैक्लिन उन्माद में था और उसने इतनी चतुरता से गोलुश का खूब मनोरंजन किया। गोलुश को इस बात का जरा भी सन्देह न हुआ कि

फोट बहुत बड़ा है।) मेरे प्यारे, मेरा विश्वास करो, अधूरा काम किसी मतलब का नहीं होता !

गोलुश ने क्रोध से चिल्ला कर कहा—अधूरे कामों की कौन बात करता है ? केवल एक ही काम करना है। यह सब जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। येसिआ, पिओ।

गिलास खाली करते हुए क्लार्क ने कहा—मैं पी रहा हूं।

गोलुश ने भी उसका साथ दिया।

पैंकलिन ने धीरे से नेज से कहा—मुझे आश्चर्य मालूम पड़ता है कि इस आदमी को नशा नहीं होता।

नेज ने कहा—यह अभ्यस्त है।

परन्तु एक क्लार्क ही नहीं था जिसने शराब पी हो। धीरे-धीरे शराब ने अपना प्रभाव सब पर डाल दिया। नेज, मार्क और सालोमन भी बातचीत में भाग लेने लगे।

सबसे पहले नेज घृणा से बोला मानो शराब पीने से अपना चरित्र ठीक न रख सकने के कारण वह चिढ़ गया हो। उसने कहा—सब बातें बन्द होनी चाहिए। अब काम करने का समय आया है। हमें किन असली शक्तियों पर निर्भर करना है, इसकी भी उसने चर्चा की, यद्यपि उसका यह कथन उसके आचरण से मेल नहीं खाता था। उसने यह भी कहा—मैं जानता हूँ, समाज की हम लोगों से सहानुभूति नहीं है। वास्तव में हमारे लोग अज्ञान में पड़े हुए हैं। जो कुछ उसने कहा उसका किसी ने विरोध नहीं किया। यह नहीं कि उसका कथन अकाट्य था, किन्तु यह कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी कह रहा था। मार्क ने जो कुछ कहा उसे कोई भी नहीं समझ सका। केवल 'मेसलान' शब्द ही सुनाई पड़ा। उसके लड़कपन में जो गुड़ियां उसने मोल लिया थीं, उन्हीं का उल्लेख उसने अपने कथन में किया था। कछुओं और छछूंदरों की भी उसने चर्चा की। सालोमन ने कहा—प्रतीक्षा करने के दो ढंग हैं। एक यह कि प्रतीक्षा करना और काम कुछ भी न करना, दूसरा यह कि प्रतीक्षा करना, साथ ही काम भी करते जाना।

मार्क ने क्रोध से कहा—हम मरम (इन्तजार) को नहीं चाहते।

गोलुश ने या तो सुना नहीं या वह समझा ही नहीं कि पंकलिन ने क्या कहा। या शायद केवल हँसी समझा हो, क्योंकि उसने फिर चिल्लाकर कहा—हाँ, एक हजार रूबल! कैप्टन गोलुश अपनी बात का पक्का है। यह कहकर उसने अपना हाथ जेब में डाल कर कहा—यह रुपया है। लीजिए। कैप्टन को याद रखना। नेज ने नोट उठा लिये, जिन्हें गोलुश ने शराब के धब्बों से आवृत मेज पर फेंक दिया था। अब और किसी बात की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं थी और देर होती जाती थी, अतएव वे सबके सब उठ खड़े हुए, अपनी टोपियाँ लीं और विदा हुए। ज्यों ही वे बाहर ताजी हवा में आये, शराब के नशे के कारण लड़खड़ाने लगे, विशेषकर पैंकलिन। उसने प्रयत्न करके पूछा—अब हम लोग कहाँ जा रहे हैं?

सालोमन ने कहा—तुम कहाँ जा रहे हो, यह तो मैं नहीं जानता, पर मैं अपने घर जा रहा हूँ।

"क्या कारखाने?"

"हाँ।"

"रात में और पैदल।"

"क्यों नहीं? मैं नहीं समझता कि वहाँ भेड़िये और डाकू रहते हैं। मुझे पहुँचाने को मेरे पैर काफी मजबूत हैं।"

"परन्तु चार मील जाना होगा।"

"अगर और भी ज्यादा होता, तो भी कोई चिन्ता नहीं थी। नमस्कार।"

सालोमन ने अपने कोट के बटन बन्द किये, सिर पर टोपी ठीक की, सिगार जलाया, और लम्बे-लम्बे डगों से चल पड़ा।

नेज की ओर देखकर पैंकलिन ने पूछा—और तुम कहाँ जाओगे?

मुस्कराते हुए सड़क की ओर इशारा करके नेज ने कहा—मैं [illegible] साथ घर जाऊँगा। हमारे साथ घोड़ा-गाड़ी है।

"बहुत अच्छा! और मैं [illegible] और [illegible] के घर जाऊँगा। क्या तुम जानते हो कि मैं क्या कहना चाहता हूँ? वहाँ स्वच्छन्द है और वहाँ भी स्वच्छन्द है। परन्तु [illegible]

"उस सम्बन्ध में न तो दुखी होने की जरूरत है, न खुश होने की जरूरत है। मुझे ऐसे लोगों से दिलचस्पी नहीं है। मेरा मतलब इनसे नहीं था।"

"तब फिर क्या था?"

मार्क ने उत्तर ही नहीं दिया, परन्तु वह एक ओर को दबक रहा। नेज उसका मुंह नहीं देख सका, केवल उसकी मूँछें एक सीधी काली लकीर-सी जान पड़ीं, पर वह आज सवेरे से ही इस बात का अनुभव कर रहा था कि मार्क किसी अज्ञात दुःख से दुःखी है।

नेज ने कहा—फिलाफिओ के जो पत्र तुमने आज मुझे दिये थे, क्या तुम उन्हें महत्त्व के समझते हो? अगर क्षमा करो तो मैं यही कहूँगा कि वे बेमतलब के हैं।

मार्क तन कर बैठ गया। उसने क्रोध से कहा—पहले तो मैं तुम्हारी इस राय से सहमत नहीं हूँ—वे बड़े मनोरंजक और सच्चे हैं। दूसरे फिलाफिओ बड़ा मेहनती है, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह सच्चा है; उसे हमारे 'काज' पर विश्वास है, क्रान्ति की उपयोगिता पर विश्वास करता है। और मैं तो कहूँगा कि तुम खुद बेपरवाह हो—तुमको हमारे 'काज' पर विश्वास ही नहीं है।

नेज ने धीरे से पूछा—तुम ऐसा क्यों कहते हो?

"यह तो तुम्हारी बातों से, आचरण से ही प्रकट है। उदाहरण के लिए आज गांतुश के यहाँ किसने कहा था कि मुझे ऐसा कोई नहीं दिखाई देता कि जिस पर विश्वास किया जाय। जब तुम्हारे उस और मित्र पेवलिन ने खड़े होकर स्वर्ग की ओर आँखें करके कहा था कि हममें से एक भी अपना बलिदान करने को समर्थ नहीं है तब उसको किसने सिर हिलाकर अनुमोदित किया था? तुम खुद चाहे जो कहो, चाहे जो सोचो, यह तुम्हारा काम है। परन्तु मैं ऐसे आदमियों को जानता हूँ जो जीवन की प्रत्येक सुन्दर वस्तु का—प्रेम तक का त्याग विचारों की रक्षा में [illegible] उत्सर्ग कर सकते हैं। परन्तु यही बात कल से आज तक नहीं कर सके।

"आज? विशेषकर आज ही क्यों?"

आवाजें सुनाई पड़ रही थीं और आँखों के आगे तारे टूट रहे थे। गोल्डुस, वेनिया, फोनिक्सा और पोलिक्सा सब उसके सामने नाच रहे थे। इतने दूर मेरिआ खड़ी थी, मानो वह उसके समीप आने से डरती हो। दिन में उसने जो कुछ कहा था या किया था वह सब उसे बेतुका और झूठा जान पड़ा और जो काम करना चाहिए, जिस काम के लिए प्रयत्न करना चाहिए था, वह असाध्य था—ताला और कुंजी में बन्द था।

मेज को मार्क के पास जाकर यह कहने की इच्छा हुई कि मार्क, अपनी भेंट वापस ले लो, यह यह है। उसने अपने मन में कहा—हाय, मानव-जीवन कितना दुःखद है!

दूसरे दिन तड़के मेज वहाँ से चल पड़ा। मार्क अपने किसानों से घिरा दरवाजे पर पहले से ही खड़ा था। परन्तु मेज यह नहीं जानता था कि वे मार्क के बुलाने से आये हैं या अपनी इच्छा से। उसने मेज से बहुत कम बातचीत की और उसे रुखाई से विदा किया। परन्तु उसे यह अवश्य प्रतीत हुआ कि मार्क उसको कोई महत्व की बात बतलाना चाहता था। उसका बुड्ढा नौकर भी अपना उदास चेहरा लिये हुए आकर वहाँ खड़ा हो गया था।

गाड़ी नगर पार कर गई। खुली जगह में आते ही वह हवा से बातें करने लगी। घोड़े तो अच्छे थे, परन्तु कोचवान को जल्दी मंजिल मिलने की आशा थी, क्योंकि मेज अभी घर में रहता था।

जून के दिन थे, परन्तु हवा का रुख बिगड़ा हुआ था। वह झोंकों से चल रही थी। पिछले दिन पानी बरस जाने से धूल भी नहीं उड़ रही थी। मेज विचार में डूबा हुआ था। सारी राह वह कुछ सोचता ही गया। यहाँ तक कि उसे किसी के गाँव में अपना पहुँचना भी न मालूम हुआ। परन्तु जब उसकी निगाह घर पर, पहाड़ी मंदिर पर, मैदान और खिड़की पर पड़ी तब वह एकाएक चौंक पड़ा। उसकी आँखें खुल गईं— मार्क ठीक कहता था। वह एक ठीक आदमी है, मैं दुष्ट और कायर हूँ।

को सन्तुष्ट किया था। अपने भाई को चिट्ठी लिखने के लिए उसे दुःख हुआ, परन्तु लिखकर भेज देने की बात से वह आखिर को खुश हो हुई।

भोजन के कमरे में मेज के समय मेरिआ की एक झलक नेज न देखी थी। उसे ऐसा जान पड़ा कि वह अधिक दुबली हो गई है और अधिक पीली पड़ गई है। वह उस दिन वैसी सुन्दर नहीं लगती थी। परन्तु नेज के भीतर आते समय उसने जिस पैनी दृष्टि से उसे देखा वह उसके हृदय तक घुसती चली गई। वेलेन बराबर नेज की ओर देखती रही, मानो वह भीतर ही भीतर उसे धन्यवाद दे रही थी। नेज को उसके चेहरे से मालूम हुआ कि वह उसे शाबाशी दे रही है, परन्तु वह स्वयं उसके चेहरे को यह जानने के लिए देख रही थी कि क्या मार्क ने उसे वह चिट्ठी दिखाई है। उसने अन्त में यही निश्चय किया कि नेज ने वह चिट्ठी देखी है।

यह सुनने पर कि नेज सालोमन के कारखाने को गया था, गिवी उस कारखाने के सम्बन्ध में उससे भिन्न भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने लगा। परन्तु उस युवक के उत्तरों से उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि उसने वहां कुछ नहीं देखा है। इससे वह चुप हो रहा। कमरे से जाते समय मेरिआ नेज के कान में धीरे से कह दिया कि बाग के छोर में सानिर के कुंज में मेरी राह देखना, मौका पाते ही मैं आजाऊँगी।

नेज ने अपने मन में कहा—जैसे मार्क मुझसे हिल-मिल गया था, वैसे ही मेरिआ भी हिलमिल गई है। यह उसको कितना विचित्र मालूम हुआ होता यदि वह उससे विमुख हो गई होती। उसको अनुभव हुआ कि यदि वह बात हुई होती तो उससे वह बिलकुल बरबाद हो गया होता। परन्तु उसको इस बात का विश्वास नहीं था कि वह उसका प्रेम करती है या नहीं। वह उसे प्यारी लगती थी और उसको उसकी आवश्यकता प्रतीत होती थी। इस बात को उसने हृदय से स्वीकार किया था।

मेरिआ ने जिस कुंज का उल्लेख किया था उसमें अंगूरों की लताएं के

मेरिआ ने कहा—अच्छा अब शुरू करो। तुमको फिर देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुई हूँ। मैंने समझा था कि ये दो दिन अब कभी न समाप्त होंगे। हम लोगों की बातचीत येलेन ने सुन ली है। क्या तुम भी यह बात जानते हो?

नेज ने कहा—हाँ, उसने मार्क को भी उसकी सूचना दे दी है।

"क्या उसने लिखा है?"

थोड़ी देर तक मेरिआ चुप बैठी रही। उसने धीरे धीरे कहा—वह बड़ी दुष्ट है। उसे ऐसा करने का क्या अधिकार है? परन्तु कोई चिन्ता नहीं। तुम अपनी बातें बताओ।

नेज बातें करने लगा और मेरिआ ध्यान देकर सुनने लगी। जब वह कोई बात जल्दी कहने लग जाता तब वह उसे रोक कर आवश्यक ब्योरा पूछने लगती। परन्तु उसकी सभी बातों में उसे दिलचस्पी नहीं हुई, पोलिटास्का और फोमिनस्का की तो उसने हँस डाला। परन्तु वह यह जानने को बड़ी आतुर थी कि मार्क ने क्या कहा, गोलुश का क्या विचार है (यद्यपि वह शीघ्र ही जान गई कि वह किस तरह का आदमी है) और सबसे अधिक वह यह जानना चाहती थी कि सालोमन की क्या राय है और वह कैसा आदमी है। 'परन्तु कब, कब,' यही प्रश्न उसके मन में तथा उसके ओठों पर बराबर बना रहा। इधर नेज उसके प्रश्न का यथार्थ उत्तर देने से बचता रहा। उसने मार्क की बड़ी प्रशंसा की और सालोमन के सम्बन्ध में अनुराग का भाव प्रगट किया। इसके सम्बन्ध में उसने कहा—उसका दिमाग ठीक राह पर लगा हुआ है। जैसा पोलिटास्का ने कहा है, वह शान्त और सुन्दर आदमी है। वह अपनी शक्ति जानता है और उसे अपनी शक्ति पर भरोसा है। उसे किसी बात की चिन्ता नहीं है। वह नया-पुराना आदमी है, यही उसका मुख्य गुण है और इसी की मुझको कमी है।

नेज चुप हो गया, वह ध्यान में मग्न हो गया। एकाएक उसे अपने कन्धे पर किसी का हाथ मालूम पड़ा। मेरिआ ने पूछा—क्या बात है? उसने उसका सोने-सा मजबूत हाथ कन्धे पर से अपने हाथ में ले लिया और उसका चुम्बन किया। उसका यह चुम्बन अत्यन्त सुन्दर

"वह कैसी बातें करता है?"

"वह बातें नहीं करता है, आदेश करता है।"

"लोगों ने उसे नेता क्यों बनाया है?"

"वह बड़ा परिश्रमवान् है। किसी से नहीं हारता। अगर ज़रूरत हो तो खून तक कर डाले। लोग उससे डरते हैं।"

"सालोमन कैसा है?" कुछ ठहरकर मेरिआ ने पूछा।

"सालोमन भी देखने में सुन्दर नहीं है, पर उसके चेहरे से सचाई झलकती है। बड़ा भोलाभाला है। ऐसे चेहरे अच्छे स्कूली लड़कों के होते हैं।"

नेज ने सालोमन का ठीक परिचय दिया था।

मेरिआ उसकी ओर देर तक एकटक देखती रही। इसके बाद उसने कहा—तुम्हारा भी तो भोला भाला चेहरा है। तुम्हारे साथ निर्वाह हो जाना मेरी समझ में सरल होगा।

नेज पुलकित हो उठा। उसने उसका हाथ लेकर चूम लिया।

हँसते हुए मेरिआ ने कहा—अब ऐसा व्यवहार न होना चाहिए। मैंने एक खराब काम किया है। उसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ।

"तुमने क्या किया है?"

"जब तुम चले गये थे तब मैं तुम्हारे कमरे में गई थी। वहाँ मेज पर तुम्हारी एक कापी पड़ी थी (नेज चौंक गया। उसे याद हो आया कि वह उसे मेज पर भूल गया था।) मैं उसके देखने का लोभ न संवरण कर सकी और मैंने उसे पढ़ा। क्या ये तुम्हारी कविताएँ हैं?

"हाँ, ये मेरी हैं। जो कुछ तुमने किया है उसके लिए मैं ज़रा भी नाराज नहीं।"

"उसमें एक कविता है, जिसमें मानव का भाव यह है—रात में आओ, प्यारे मित्र, याद रखना आदि आदि। क्या यह कविता भी तुम्हारी है?"

"हाँ, क्या इसके लिए दण्ड दोगी और क्यों न दोगी। मुझे दण्ड न दो।"

मेरिआ ने सिर हिलाकर कहा—यह बड़ी सुन्दर कविता है। मैं समझती हूँ, कि तुमने मुझको [illegible] के बारे में लिखी थी [illegible] में करती हूँ, यह बहुत अच्छी है। मैं समझती हूँ [illegible] इसी

नेज ने कहा—पृथ्वी के छोर तक। उस समय वह बिना आगा-पीछा सोचे उसके साथ जहाँ भी जाती, जाने को तैयार था।

मेरिआ ने उसके मन का भाव समझकर प्रसन्नता की साँस ली। उसने कहा—तब प्रियतम, मेरा हाथ पकड़कर जोर से दबाओ—पर उसे चूमो नहीं। मित्र की तरह, साथी की तरह इसे इस तरह दबाओ।

ये दोनों घर को खुश खुश चल पड़े।

तेईसवाँ अध्याय

गोल्डन के भोजन के बाद जब सालोमन ने लगभग पाँच मील चलकर अपने कारखाने के फाटक पर धक्का दिया तब तड़का हो रहा था। पहरेदार ने तुरन्त उसे भीतर ले लिया। भीतर जाने पर तीन पालतू कुत्ते खुशी के साथ दुम हिलाते हुए उसके साथ साथ उसके रहने की जगह तक गये। पहरेदार को अपने सरदार के राजी-खुशी लौट आने से बड़ी खुशी हुई। उसने कहा—तुम रात में कैसे आये? हमें तो आशा थी कि कल आओगे।

"ठीक, सब ठीक है। रात में चलना ज्यादा मजेदार होता है।"

सालोमन का मजदूरों के साथ बड़ा मैत्रीभाव था। मजदूर उसे अपना बड़ा मानते थे, अपने में से एक समझते थे। और बहुत पढ़ा-लिखा समझते थे। वे कहते थे कि जो कुछ वह कहता है, बाइबिल की तरह पवित्र है। जो कुछ बोला जाता है, सब लोग सुनते हैं। कोई ऐसा अँगरेज नहीं है जो उसे छीन ले सके। वह सच है। एक श्रीमान् अँगरेज कारबारी एक बार उस कारखाने में आया था। उसने अपनी टूटी-फूटी बातों में मजदूरों से कहा था कि तुम्हारा यह आदमी,

व्यर्थ समय नष्ट करता है। परन्तु जब उसने नेज का नोट पढ़ा तब वह अपनी गर्दन खुजलाने लगा और खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। वह कुछ निश्चय न कर सका।

वर्दीधारी चपरासी ने धीरे से पूछा—मुझे क्या उत्तर मिलेगा?

सालोमन खिड़की के पास खड़ा था। उसने कहा—मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। कपड़े पहन लूं।

चपरासी आदर प्रदर्शित करते हुए कमरे से चला गया। सालोमन ने पेबल को बुला भेजा। उसने उससे बातें कीं और एक बार फिर कारखाना देखने गया। इसके बाद उसने एक काला कोट पहना और टोपी लगाकर फिटन में जा बैठा। उसे एकाएक याद आई कि वह अपने दस्ताने भूल गया है, उसने पेबल से दस्ताने ला देने को कहा। पेबल दौड़कर दस्ताने दे गया, जिन्हें उसने जेब में रख लिया। उसने गाड़ी हांकने की आज्ञा दी। चपरासी तुरन्त बाक्स पर चढ़ गया। घोड़े दौड़ने लगे।

इधर सालोमन सिपी के घर आ रहा था, उधर सिपी अपने ड्राइंग रूम में बैठा, घुटनों पर बिना पढ़े फटी हुई एक राजनैतिक पैम्फ्लेट रखे अपनी स्त्री से सालोमन के सम्बन्ध में बातें कर रहा था। उसने कहा—मैं सालोमन को उस व्यापारी के कारखाने से बुलाकर अपने कारखाने में रखना चाहता हूं। मेरे कारखाने की दशा खराब है, उसको फिर से संगठन करने की जरूरत है। सिपी के मन में यह भाव नहीं आया था कि सालोमन उसकी बात से इनकार करेगा।

ऐलेन ने कहा—तुम्हारी सारी बातें ठीक हैं, कपड़े भी नहीं हैं।

"एक ही बात है। [illegible] में [illegible] करनी है और वह [illegible] [illegible] [illegible] है।

ज्यों ही उसके आने की सूचना मिली, सिपी उछल पड़ा। उसने ज़ोर से कहा—उसे भीतर ले आओ, निस्सन्देह, उसे भीतर ले आओ। वह ड्राइंगरूम के दरवाज़े तक जाकर उसके आने की राह देखने लगा। ज्यों ही सालोमन ने कमरे के दरवाज़े की देहली लांघी, उसको सिपी से टक्कर लगते बची जब कि उसने अपने दोनों हाथ फैलाकर, मुस्कराहट के साथ सिर हिलाकर कहा—बड़ा अच्छा हुआ कि तुम आ गये! इसके लिए तुमको धन्यवाद देने में मैं असमर्थ हूँ। इसके बाद वह उसे अपनी स्त्री के पास लिवा ले गया। उसके आगे सालोमन को करते हुए उसने सालोमन से कहा—यह मेरी स्त्री है। फिर अपनी स्त्री से कहा—प्रिये, ये इस जवार के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियर और कारबारवाले फेडोसेंच सालोमन हैं।

मैडम सिपी उठकर खड़ी हो गईं, अपनी सुन्दर पलकें उठाईं और बड़ी मधुरता से हँस पड़ीं। उसने अपना हाथ बढ़ा दिया। सालोमन ने उन दोनों पति-पत्नी को आवश्यक शिष्टाचार कर लेने दिया, फिर उन दोनों से हाथ मिलाया और पहली बार के ही कहने पर झट कुर्सी पर बैठ गया। सिपी उसके चारों ओर इधर-उधर जल्दी जल्दी आने-जाने लगा। उसने सालोमन से खाने-पीने का आग्रह किया। परन्तु सालोमन ने उसे विश्वास दिला दिया कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है और इस यात्रा में वह थका भी नहीं है।

सिपी को अपने अतिथि की इतनी अधिक विनम्रता पर विश्वास करने का साहस नहीं हुआ। उसने कुछ झेंप कर कहा—अब हमें कारखाने में चलना चाहिए।

सालोमन ने कहा—जब चाहें, मैं तैयार हूँ।

"कहो क्या है। गाड़ी पर चलोगे या पैदल?"

"क्या बहुत दूर है?"

"आधा मील के लगभग है।"

"तब तो गाड़ी मँगाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

"बहुत अच्छा! इवान, मेरी टोपी और छड़ी ला दो! जल्दी करो। भोजन की तैयारी की ओर भी कुछ ध्यान देना।"

"मेरा मतलब यही है कि रईस लोग ऐसा काम करने के अभ्यस्त नहीं हैं। इसके लिए व्यापार की शिक्षा की जरूरत है। प्रत्येक वस्तु को भिन्न भिन्न आधारों पर रखना पड़ता है। इसके लिए विशेष शिक्षा की ज़रूरत है। रईस लोग इस बात को नहीं समझते। हम देखते हैं कि वे ऊन, रुई तथा दूसरी बातों के कारखाने खोलते हैं, परन्तु अन्त में वे व्यापारियों के हाथ चले जाते हैं। यह दुःख की बात है। परन्तु उपाय ही क्या है?

कोल्लो ने कहा—तुम्हारी बात से तो यही जान पड़ता है कि सारे आर्थिक प्रश्न रईसों की समझ के बाहर हैं।

"ऐसा नहीं है। इसके विपरीत रईस लोग आर्थिक मसलों के पूर्ण ज्ञाता हैं। रेलवे की सुविधायें प्राप्त करना, बैंक खोलना, कुछ करों से अपने को बरी करा लेना आदि आदि तो उनके बायें हाथ के खेल हैं। इनमें उनका कोई मुकाबिला नहीं कर सकता। वे खूब धनार्जन करते हैं। मैंने इसकी ओर इशारा किया है, परन्तु मेरी समझ में यह तुम्हें बुरा लगा है। मैं पक्के धंधे की बात कहता हूँ। छोटी छोटी बाजारों की दूकानें खोलने या किसानों को रुपया या अन्न सौ पीछे सौ की सैकड़ा ब्याज के हिसाब से उधार देने को जैसा कि हमारे अनेक जमींदार रईस आजकल करते हैं, मैं असली आर्थिक उद्योग नहीं समझता।"

कोल्लो ने कुछ नहीं कहा। रुपया उधार देनेवाले जमींदारों में एक वह भी था। रुपया वसूल करने में वह बड़ा कठोर था। वह किसानों को अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में कभी नहीं आने देता था। वह अपना सारा लेन-देन का काम अपने मैनेजर के द्वारा करता था। मालोमर का यह निष्पक्ष वचन जब वह चुपचाप सुन रहा था, तब वह मन में उबल रहा था, परन्तु वह शान्त ही रहा।

[illegible] ने कहा—आप कुछ सच कहते हैं। पहले किसी समय बिल्कुल सच रहा होगा। उस समय रईसों के अधिकार भी बिल्कुल भिन्न थे और उनकी स्थिति भी। परन्तु अब जब हमारे वर्तमान औद्योगिक क्षेत्र में सारे लाभदायक सुधार किये जा चुके हैं, रईस लोग अपना